भगवान महावीर के २५००वें निर्वाण महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य मे

पाँच कवि

सम्पादक

विश्वचेतना के मनस्वी संत, व्याख्यान वाचस्पति परम श्रद्धेय
पूज्य गुरुदेव श्री गणेश मुनि जी शास्त्री के सुयोग्य शिष्य "काव्यतीर्थ"

श्री जिनेन्द्र मुनि, शास्त्री

प्रकाशक

अमर जैन साहित्य संस्थान

उदयपुर [राजस्थान]

अमर जैन साहित्य संस्थान का २२वां रत्न

पुस्तक	पाँच कवि
सम्पादक	श्री जिनेन्द्र मुनि शास्त्री, 'काव्यतीर्थ'
प्रकाशक	अमर जैन साहित्य संस्थान कोलपोल, बड़ा बाजार, उदयपुर (राज०) शाखा—गुलाबपुरा जि० भीलवाड़ा (राज०)
प्राप्तिस्थल	श्री हरिसिंह चौधरी एम. एम कोर्ट, गुलाबपुरा (राज०)
प्रथम संस्करण	१९७६ मई
मूल्य	पांच रुपये मात्र
मुद्रक	श्रीचन्द सुराना के लिए दुर्गा प्रिंटिंग वर्क्स, आगरा-४

समर्पण

जिनके :

वचनों मे काव्य की सृष्टि है।
जीवन मे समन्वय की दृष्टि है।
प्रवचनों मे अमृत की वृष्टि है।
लेखनी मे सरस्वती की तुष्टि है।

उन्ही परम श्रद्धेय सद्गुरुदेव
श्री गणेश मुनि जी शास्त्री के
कर-कमलों मे सादर समर्पित।

—जिनेन्द्र मुनि

प्रकाशकीय

"पाच कवि" प्रिय पाठको के पाणि-पद्मो मे थमाते हुए मन आनन्द के सागर मे उछाले मार रहा है। प्रस्तुत कृति के सम्पादक है—विद्वद्रत्न व्याख्यान-वाचस्पति श्री गणेश मुनि जी शास्त्री के अन्तेवासी मधुरवक्ता श्री जिनेन्द्र मुनि जी शास्त्री। आप होनहार युवक सन्त हैं। आपसे समाज को असीम आशाए है। आप मधुर वक्ता तो हैं ही साथ ही मधुर गायक एव कवि भी हैं।

'पाँच कवि' के सम्पादन मे आपने अपने बुद्धि कौशल का सम्यक् परिचय प्रदान किया है। कवि तथा गायक होने की दृष्टि से आप गीतो के पारखी भी हैं। आपने प्रस्तुत संग्रह में स्थानकवासी जैन समाज के उन पाँच कविरत्नो को चुना है जिनके उर्मिल-मानस से समय-समय पर युगानुसारी चेतना-प्रधान कविता नि सृत होकर जन-मन को उद्बोधित करती रही है। प्राय: सभी कवियों की कविताएँ दिलचस्प-रोचक एव जागृति का अभिनव-सचार करने वाली हैं।

कवि या कवि की रचना के चुनाव मे मुनि श्री ने तटस्थनीति का उपयोग किया है। जिनके गीत उनके मन को भाये है। उनकी जबाँ पर गुन गुनाते रहते है और बोलते रहते हैं वे अपने प्रवचनों में खुलकर। बस उन्ही कवियों के गीतों को प्रस्तुत सकलन में सकलित किया है।

'पाँच कवि' पुस्तक के प्रकाशन मे जिन उदार चेता सद्गृहस्थो ने अर्थ सहयोग देकर अपने उदार हृदय का परिचय दिया है उसके लिए हमारा सस्थान उन्हे हार्दिक धन्यवाद प्रदान करता है।

हमे आशा ही नही, अपितु पूर्ण विश्वास है कि मुनि श्री जी की प्रस्तुतकृति प्रत्येक संगीतज्ञ के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

मत्री

अमर जैन साहित्य सस्थान

प्रस्तुत पुस्तक के अर्थ सहयोगी

श्रीमान् मोहनलालजी आंचलिया

[स्व० पूज्यपिता श्री छोटमलजी की स्मृति मे]

६३७ ए रेजीडेन्सि रोड, सरदारपुरा–जोधपुर

आपके उदार एवं अनुकरणीय
सहयोग हेतु संस्था सादर
आभार व्यक्त करती है।

सम्पादकीय

सगीत मानसिक विचारो की एक रागात्मक अभिव्यक्ति है। मानवीय सुकोमल भव्य भावनाओ का प्रतीक है। यह इतना मधुर व सरल-सहज है कि इसको प्रत्येक व्यक्ति अपना सकता है। वालक से लेकर वृद्धो तक निरक्षर से लेकर साक्षरो तक, झोपडी से लेकर महलो तक सभी को प्रिय है। सभी को समान रूप से माँ के दूध की तरह तुष्टि और पुष्टि देता है।

संगीत का प्रभाव

संगीत का प्रभाव मानवीय जगत पर ही नही, वल्कि पशु-पक्षी तथा वनस्पति जड जगत पर भी गहरा गिरता है। सगीत की सुमधुर स्वर लहरी को श्रवण कर फणिधर डोल जाते हैं। हिरण स्वभाव विस्मृत हो जाते हैं। अनुश्रुति है कि अकवर वादशाह के दरवार मे वैजूवावरा, तानसेन आदि कुछ ऐसे सगीतज्ञ थे जो सगीत कला के देवता कहे जाते थे। जव वे गाते तो वन्य-पशु-पक्षी भी स्तभित हो जाते थे। दीपक राग मे गाते तो सैकडो दीपक जल उठते थे। हिंडोला राग आलापते तो झूले झूमने लग जाते थे। मेघ मल्हार की राग से पानी वरसने लग जाता था और मालकोश से पत्थर की चट्टाने भी द्रवित हो जाती थी।

सगीत की उपयोगिता

विश्व मे जो कार्य कठिन-दुरूह समझा जाता है, उसे सगीत के माध्यम से सहज सुलभ वनाया जा सकता है। आधुनिक पाश्चात्य

चिकित्सा-शास्त्रियों ने संगीत को दुस्साध्य मानसिक व शारीरिक व्याधियों को मिटाने मे एक आवश्यक साधन माना है। सगीत की मधुर ध्वनि से कई रोगियो को स्वस्थ बनाया है। उनका यह दृढ मन्तव्य है कि भविष्य मे सगीत चिकित्सा के क्षेत्र मे एक वरदान रूप सिद्ध होगा।

संगीत ललित कलाओ मे सर्वश्रेष्ठ कला है। यह कला प्रत्येक व्यक्ति के जीवन मे होती है। इसके अभाव मे व्यक्ति का जीवन नीरस व निस्तेज है। इस सन्दर्भ मे भर्तृहरि ने तो यहाँ तक कह डाला है कि—

साहित्य संगीत कला विहीन·,
साक्षात्पशु: पुच्छ-विषाण हीनः ॥

अर्थात् जिसका जीवन सगीत और साहित्य से शून्य है वह व्यक्ति विना पूछ और सीग का पशु माना जाता है।

पाश्चात्य विद्वान शेक्सपियर ने भी कहा है—"जो मानव संगीत नही जानता और उसके स्वरो पर मुग्ध नही होता, वह पतित विश्वास-घाती और आत्मद्रोही है। उसका हृदय गहन अन्धकार युक्त रात से भी अधिक भयंकर है। वह अविश्वसनीय है।" हाँ, तो सगीत कला जीवन मे आवश्यक ही नही, अपितु अनिवार्य है।

आध्यात्मिक क्षेत्र मे संगीत

संगीत जहाँ भौतिक वातावरण के सर्जन मे उपयोगी सिद्ध हुए हैं, वहाँ वह आध्यात्मिक वातावरण के निर्माण मे कम उपयोगी नही हुए हैं, क्योकि मानव-जीवन का महत्त्व भौतिकवाद से नही है, बल्कि अध्यात्मवाद से आका जाता रहा है। आध्यात्मिकता के विना मानव का जीवन ईक्षु-पुष्प की तरह व्यर्थ है। मानव समाज को भौतिकवाद

से अध्यात्मवाद की ओर मोड देने के लिए भक्त-कवियो ने अपनी अनुभवमयी-वाणी को गीतो के गजरे में गूँथ कर जन-जन तक पहुँचाने का सफल प्रयास किया है। आज भी देखा जाता है कि सन्त-भक्त कवियो के वे गीत तबूरे के तार पर हर क्षेत्र मे मुखरित हैं।

सूर, तुलसी, कबीर, मीरा आदि कुछ ऐसे भक्त-कवि हुए है जिन्होने अपने गीतों-पदो के द्वारा भौतिकता के चक्रव्यूह मे फँसे मानव समाज को ऊपर उठाया है। उसे उद्बोधित किया है, और जगत का नश्वर स्वरूप बतला कर अमरता की राह दिखलाई है।

जैन जगत के महान् अध्यात्मयोगी श्री आनन्दघन जी तथा विनयचन्द जी आदि भक्त प्रवरो ने अपनी साधनासनी वाणी के द्वारा भक्ति-रस मे डूब कर तीर्थंकर देवो की जो स्तुति गीतो के रूप मे की है, वह ससार मे बेजोड है। उनमे आध्यात्मिकता का इतना सुन्दर पुट है कि जो भी श्रद्धालु-जन उन गीतो को गाता है वह आत्म-विभोर हुए बिना नही रहता। अत. निस्सन्देह कहा जा सकता है कि अध्यात्म-वाद के उत्तुंग शिखर पर चढने मे सगीत भी सहायक बनते हैं।

फिल्मी गीत और वर्तमान के सन्त कवि

आज फिल्मी गीतो का स्तर दिन पर दिन गिरता जा रहा है। जहाँ एक ओर फिल्मी गीतो से व्यक्ति का मनोरजन होता है वहाँ दूसरी ओर उनके जीवन मे वासना का विप वर्षण भी होता जा रहा है। अन्तर मे सोई हुई वासना को उत्तेजित करने का कार्य कर रहे हैं जोकि समाज व देश के लिए महान घातक है।

फिल्मी ससार का प्रारम्भ मनुष्य ने जितना सुन्दर व सुखद समझा था उतना उसका भविष्य उज्ज्वल न रह सका। आज वह विश्व के लिए अभिशाप बनने जा रहा है।

समाज और राष्ट्र को पतनशील फिल्मी गीतो के दूषित वातावरण से वचाने के लिए जैन सन्त-कवियो ने वर्तमान प्रचलित सीने-जगत की ध्वनियो के आधार पर आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक तथा उद्‌वोधन-प्रधान गीतों का निर्माण कर जन-मन को स्वस्थ रखने का प्रयास किया है तथा उन्हे अध्यात्मवाद की ओर मोड देने का एक सुन्दर उपक्रम जुटाया है, जो अत्यन्त आनन्द का विषय है। "पाँच कवि" इसी दिशा का एक अभिसूचक है।

पांच कवि

पाच कवि यह गीतों का एक वृहत् सग्रह है। इसमे स्थानकवासी जैन समाज के पाँच सन्त कवियो के भावप्रवण गीतो का संकलन आकलन है। जनमानस मे अभिनव जागृति के सचार हेतु धार्मिक, सामाजिक, दार्शनिक तथा उद्‌वोधन-प्रधान गीतो को एक नया वर्गीकरण का रूप देकर इसे छह खण्डो मे सजाया गया है। प्रत्येक खण्ड के प्रारम्भ मे कवि का सक्षिप्त कवितावद्ध परिचय दिया जा रहा है जिसको पढकर पाठक उनके व्यक्तित्व और प्रतिभा से परिचित हो सके। खण्ड तथा कवियो के नाम इस प्रकार है--

- **जीवन के मीठे तराने**

  —श्री गणेश मुनि जी शास्त्री
- **जागृति का शंखनाद**

  —श्री केवल मुनि जी 'केवल'
- **क्रान्ति के स्वर**

  —श्री सौभाग्य मुनि जी 'कुमुद'
- **गीतो की मधुर बहार**

  —श्री मगन मुनि जी 'रसिक'

- **चन्दन की महक**

—श्री चन्दन मुनि जी 'पजाबी'

- **चटकती कलियाँ : महकते फूल**

—विविध कवियो की रचनाएँ

प्रस्तुत सकलन मैंने दो वर्ष पूर्व ही भूपालगज, भीलवाडा वर्षावास मे तैयार कर लिया था किन्तु परिस्थितिवश शीघ्र प्रकाश मे न आ सका। उक्त सकलन के वारे मे जब मैंने इन कवियो से परामर्श मागा तो सभी ने अपनी स्वीकृति प्रदान की, साथ ही मेरे प्रयास की सराहना करते हुए मेरे उत्साह को वढाया। परिणामस्वरूप मैं अपने कार्य मे कुछ सफल हो सका हूँ।

आभार प्रदर्शन

सर्वप्रथम मैं मेरे श्रद्धालोक के देवता राजस्थानकेशरी अध्यात्मयोगी, दादा गुरुजी श्री पुष्कर मुनिजी महाराज साहव, सौम्य-स्वभावी पण्डितरत्न श्री हीरामुनिजी महाराज साहव प्रसिद्ध जैन साहित्यकार श्री देवेन्द्र मुनिजी महाराज साहव का पूर्ण आभारी हूँ जिन्होने मेरे जीवन विकास मे महान् योगदान दिया है और दे रहे हैं।

इसके पश्चात् मैं अपने महान उपकारी विश्व चेतना के मनस्वी सन्त, व्याख्यानवाचस्पति साहित्यस्रष्टा परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री गणेश मुनि जी महाराज साहव के प्रति अन्तर की गहराई से कृतज्ञता ज्ञापन करूँगा, जिनके आशीष भरे शीतल-सुकोमल कर कमल सदा मेरे सिर पर छत्र छाया की भाँति रहे हैं। जीवन निर्माण के साथ-साथ यत्किञ्चित् सगीत कला का प्रशिक्षण भी मैंने उन्ही से प्राप्त किया है, अत· प्रस्तुत कृति भी मैं उन्ही के कर-कमलो मे समर्पित कर रहा हूँ।

मेरे लघु गुरुभ्राता श्री प्रवीण मुनिजी तथा श्री अरुण मुनिजी की जो सेवा सतत चल रही है, वह मेरे मानस मे सदा चमकती रहेगी।

मेरे जीवन प्रवाह को आध्यात्मिक दिशा मे मोड़ दिलाने वाली जैन जगत की उज्ज्वल तारिका परमविदुषी महासती श्री शील कुवर जी महाराज का भी पूर्ण सहयोग रहा है। साथ ही मातृस्वरूपा सेवामूर्ति दादीजी महाराज श्री प्रेमकुवर जी महाराज, जिनका स्नेह सलिल प्राप्त करके भी मैं अपने आप मे एक अतृप्ति का अनुभव कर रहा हूँ, वे मेरे लिये महान उपकारी हैं अत· मैं उनके प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

सेवामूर्ति महासती श्री वक्षुजी महाराज साध्वीरत्न महासती श्री विमलवतीजी महाराज, विनयमूर्ति श्री मदनकुवरजी विद्याभिलापी श्री ज्ञान प्रभाजी की सेवा भी सदा अविस्मरणीय रहेगी।

मैं उन कवि रत्नो का भी आभार प्रदर्शन करूँगा जिनके ललित गीत प्रस्तुत कृति मे संग्रहित हैं।

विद्वद्रत्न स्नेहशील मानस श्रीचन्द जी सुराना का मैं यहाँ अनुस्मरण किये विना नही रह सकता जिन्होंने पुस्तक को आधुनिक साज-सज्जा से चमका दी है।

मुझे आशा और विश्वास है, पाठक प्रस्तुत कृति से प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को श्रेयस की ओर बढायेंगे . ।

जैन धर्म स्थानक, सरदारपुरा
जोधपुर [राजस्थान]
१ जनवरी ७६

—जिनेन्द्र मुनि

क्या और कहाँ ?

(१) जीवन के मीठे तराने

[श्री गणेश मुनि जी शास्त्री]

(२) जागृति का शखनाद

[श्री केवल मुनि जी "साहित्यरत्न"]

(३) क्रान्ति के स्वर

[श्री सौभाग्य मुनि जी "कुमुद"]

(४) गीतों की मधुर बहार

[श्री मगन मुनि जी 'रसिक']

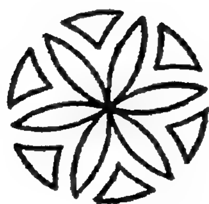
(५) चन्दन की महक

[श्री चन्दन मुनि जी 'पंजाबी']

(६) चटकती कलियाँ : महकते फूल

[विविध कवियों की रचना]

जीवन के मीठे तराने



श्री गणेश मुनि जी शास्त्री

श्री गणेश मुनि जी शास्त्री : एक परिचय



गौर वर्ण - आकर्षक - आकृति,
दर्शक का मन लेती मोह।
जिनके सम्मुख विद्रोही भी,
छोड़ दिया करते विद्रोह ॥

ज्ञान - रत्न - भण्डार अनोखा,
छिपा रखा है अन्तर मे।
इसीलिए तो प्रेम बरसता,
मन - मोहक - मधुर - स्वर मे ॥

कविवर लेखक और प्रवक्ता,
होनहार है सच्चे सन्त।
हमें बहुत आशा है इन से,
दिखलायेगे जग को पन्थ ॥

मैं क्या परिचय दूंगा, परिचय—,
देगे पूरा प्यारे गीत।
मैंने केवल सम्पादक की,
निर्वाही है चालू रीत ॥

☆

निर्मल निर्झर १

तर्ज : जय बोलो महावीर .

जय बोलो गौतम गणधर की ।
शान्ति के निर्मल निर्झर की.

माता पृथ्वी के जाया है ।
गणधर पदवी को पाया है ।।
महावीर के सुन्दर सहचर की....

गौतम सच्चे ब्रह्मचारी है ।
ज्ञानी तपसी अविकारी है ।।
जय विघ्न-हरण मगलकर की

जो प्रति दिन इनका नाम रटे ।
कर्मों के बादल दूर हटे ।।
ज्योतिर्मय दिव्य दिवाकर की. .

मुनि 'गणेश' ऋद्ध सिद्ध दाता है।
नित वन्दो जग के त्राता है ।।
लो शरण दया निधि गुणकर की ..



२ तारो तारो जिनन्द

तर्ज : झट आओ चन्दन हार लावो ..

तारो तारो जिनन्द मोहे तारो, तुम्हारा गुण नही भूलूँ,
भव्य जीवो के तारण हारा, तुम्हारा गुण नही भूलूँ...

अष्ट कर्म को जीत के
पहुँचे मुक्ति धाम।
चिदानन्द सत रूप का, करूँ ध्यान मैं आठों याम रे...

शरद चन्द्र से निर्मल हो,
सूर्य से उज्ज्वल महान्।
तीन लोक निहार रहे, ऐसा पाया है केवलज्ञान रे ..

मोर के मन घन वसे,
सीता के ज्यों राम।
मेरे दिल प्रभु तुम वसे, ज्यों मीरा के मन मे श्याम रे ..

असार यह संसार है,
मिथ्या इसकी माया।
तुम्ही प्रभु इक सच्चे हो, यह भेद समझ मैं पाया रे. .

मैं आया तेरी शरण,
प्रभु रख लीजे लाज।
आतम-गुण 'मुनि गणेश' दो, अब सजावूँ जीवन साज रे....

पार करो ३

तर्ज : प्यार करो ऋतु प्यार. .

पार करो प्रभु भवसागर से, शरण तुम्हारी आया हूँ।
विपय-कपाय की लहरो से मैं, वहुत-वहुत घवराया हूँ .

नैया है मेरी टूटी पुरानी, तुम ही एक सहारे हो।
आशा की ज्योति तुम ही प्रभुजी, तुम ही खेवैया हमारे हो ॥
काल अनन्ता भटकत वीता, कही किनारा न पाया हूँ...

आश्रव के छिद्रो से निरन्तर, दुःख का जल भर आता है।
उलच-उलच कर हाथ थके पर, वन्द कहाँ हो पाता है ?
मोह भँवर मे गिर कर प्रभुजी, व्यथा अनन्ती पाया हूँ

कर्म-घटाएँ उमड-घुमड कर, चहुँ ओर यह छा रही है।
अज्ञान तिमिर तूफान भयकर, कई विपदाएँ आ रही है॥
डग-मग डोल रही है नैया, सुध-बुध सव विसराया हूँ ..

भूल भरा एक शिशु खडा है, उसको सत पथ वतलाओ।
'गणेश' मुनि कहे शीघ्र हमारी, नैया को तट पर लाओ॥
एक नजर शुभ पड जाए तो, सव कुछ मैं भर पाया हूँ



४ नव पद का ध्यान

तर्ज : आ लौट के आजा मेरे....

तू नव पद का धर ध्यान
तुझे यदि मोक्ष पाना है।
है ज्ञानी का यह फरमान,
तुझे यदि मोक्ष पाना है।

नमो अरिहत सिद्ध आचार्य उपाध्याय सुखकारी है।
नमो सर्व साधुओ को जो, जग मे पर उपकारी है॥
तुम करो सदा यश गान...

नमो ज्ञान दर्शन चारित्र, तप-जप तारण हारा है।
चौदह पूर्व का सार यही और, भवि जीवों का सहारा है॥
कर इन से अपना उत्थान...

ध्यान धरा "चन्दनवाला" ने, दुःख की घड़ियाँ बीत गईं।
'सुभद्रा' और 'सीता रानी', अपने कलंक को जीत गईं॥
यह जाने सकल जहान....

सुमरा जव 'श्रीपाल' 'मैना' ने, देह का कुष्ट चला गया।
चीर वढा जव 'द्रौपदी' का, 'दु.शासन' तव छला गया॥
सव हुए सफल अरमान....

नौ लाख का जाप करे तो, प्राणी नरक नही जाता है।
शुद्ध भाव से जो ध्यावे वह, भव भव शान्ति पाता है॥
मुनि 'गणेश' मंत्र महान्....

निमंत्रण ५

तर्ज . दिल लूटने वाले जादू..

इस भूली भटकी दुनिया को प्रभु, राह दिखाने आओ तुम।
सोये हुए जन मानस मे नूतन, ज्योति जगाने आओ तुम .

भौतिकता की चकाचौध मे, मानव भूला अपना भान।
खाना-पीना मौज उडाना, बस जीवन की एक ही तान ॥
अध्यात्मवाद का दिव्य तेज प्रभु, उनको बताने आओ तुम .

अन्ध-विश्वास और पाखण्डता के, चक्रव्यूह मे फस गये।
सम्यक्त्व-रत्न से हट कर प्राणी, मिथ्यावाद मे धस गये ॥
ध्रुव तारा बन कर विश्व-गगन का, भ्राति मिटाने आओ तुम .

धर्म-कर्म का नाम नही, यहाँ नास्तिकता बढती जाती है।
हिंसा की ज्वालाएँ निरन्तर, मानव को दग्ध बनाती है ॥
अहिंसा का जलधर बन प्रभु, शान्ति नीर बरसाओ तुम .

शुद्ध ज्ञान विनय भक्ति दो प्रभुवर, मुक्ति पद को पाएँ हम।
श्रद्धा शक्ति भर दो जीवन मे, नित गीत तुम्हारे गाएँ हम ॥
'मुनि गणेश' के दिल मे आशा के, सुरभित पुष्प खिलाओ तुम. .

०—☆—०

६ मुझे दर्शन दे दो

तर्ज : मै का करू राम ..

हे वीर भगवान, मुझे दर्शन दे दो जी
होय होय मुझे दर्शन दे दो जी...

द्वार खडा है भक्त, उनकी अर्जी सुन लेना।
कष्टों की घडियो मे प्रभु, भुला मत देना ।।
मैं वाल अनजान, मुझे दर्शन दे दो जी
होय होय मुझे दर्शन दे दो जी...

चन्दना को तारी तुमने सुनके पुकार को।
दुष्टो को भी तारे उनकी, सुनके हुँकार को ।।
तारा नाग अज्ञान, मुझे दर्शन दे दो जी
होय होय मुझे दर्शन दे दो जी .

त्रिशला के प्यारे नन्दन, जग रखवारे हो।
भारत की नैया के सच्चे, तुम ही सहारे हो ।।
मुनि 'गणेश' महान्, मुझे दर्शन दे दो जी
होय होय मुझे दर्शन दे दो जी ..

—०☆०—

कंचनमय आंगन में नाचे ७

तर्ज प्यार करो ऋतु प्यार की ..

कचनमय आगन मे नाचे, ठुमक ठुमक वर्धमान रे
त्रिशला बैठी लाड लडाती, दे चुटकियो की तान रे

मधुर-मधुर वोली वोले वह, सवको लगती है प्यारी।
पल मे हँसता, पल मे रोता, पल मे करता किलकारी॥
रुसाने पर माता देती, चकी भँवरा महान् रे

सिर पर सुन्दर वाल जो कोमल, शोभित हैं घुंघरालेदार।
रग रगीले वस्त्र वदन पर, झवा-टोपी जालीदार॥
रुमझुम पग मे पायल वाजे, है निराली शान रे

सखियाँ सारी मिलकर आती, त्रिशला लाल खिलाती हैं।
कोई विठाती कोई चलाती, कोई गोद झुलाती हैं॥
कोई चूमे कोई कराये, मधुर दुग्ध का पान रे.

वाल-लीला को देख इन्द्र भी, हर्षित होते गगन तले।
सिद्धारथ के राजभुवन मे, तीन लोक रो नाथ पले॥
गुरु कृपा से 'गणेश' गाये, वाल प्रभु गुणगान रे



८ वीर जयन्ती आयी

तर्ज : ये मीठा प्रेम का प्याला...

ये वीर जयन्ती आई, घर-घर मे खुशियाँ छाई ।
ये प्रेम सन्देशा लाई, घर घर मे खुशियाँ छाई..
कुण्डलपुर मे प्रभु जी आये,
त्रिशला माता मोद मनाये,
जग उजियाला पाई, घर घर मे खुशियाँ छाई...
यौवन मे प्रभु ने गृह छोड़ा,
पत्नी यशोदा का नेहा तोड़ा,
संयम ज्योति जगाई, घर घर मे खुशियाँ छाई...
सत्य अहिंसा का नाद सुनाया,
हिंसा-पाखण्ड दूर हटाया,
करुणा दिल मे लाई, घर घर मे खुशियाँ छाई...
दीन दुखी अनाथ को तारे,
चन्दना को भवजल से उवारे,
प्रेम की गगा वहाई, घर घर मे खुशियॉ छाई...
प्रभु ने जो हमे राह वताई,
'गणेश' प्रेम से उन पर भाई,
चले कदम वढाई, घर घर मे खुशियॉ छाई...

—०—०—

तुझे चन्दना बुलाती है ९

तर्ज : आ लौट के आजा मेरे . .

आ लौट के आजा महावीर,
तुझे चन्दना बुलाती है।
मेरी सूनी पडी रे तकदीर,
तुझे चन्दना बुलाती है

माता से विछुडी, पिता से विछुडी, विछुड गई सब परिजन से।
परतन्त्रता की सीमा नही है, हुई विवश मैं तन मन से ॥
मेरे तन पर पडी है जजीर .

द्वार पे आके जिया तरसा के, कहाँ छोड अब जाते हो।
तीन दिवस की भूखी प्यासी, फिर भी रहम नही लाते हो ॥
इन नयनो से बरसे नीर .

चाँद से निर्मल फूल से कोमल, प्रभु हृदय कहलाता है।
चन्दना के भक्ति स्वर को सुन, अनुग्रह रस बरसाता है ॥
तब लौट आये हैं वीर .

हरषे हृदय अब सरसे जीवन अब, देती है दान वह उडदन का।
वृष्टि करे सुर सोनैयो की, प्रमुदित हुआ मन जन-जन का ॥
मुनि 'गणेश' मिटी भव पीर

०—☆—०

१० ज्योति जलाते चलो

तर्ज : ज्योत से ज्योत जगाते चलो ..

धर्म की ज्योति जगाते चलो,
जीवन को पावन वनाते चलो।
राह मे आए जो विघ्न कई,
हिम्मत से उनको हटाते चलो ॥

वीर की तुम सतान कहाते, कायरता का काम नही।
सुलक्ष्य लेकर वढे आगे, पीछे हटने का नाम नही ॥
शासन सेवा वजाते चलो .

धर्मी ढोगी वन कोई आए, नास्तिकता की वात करे।
अपने मत पर कायम रहना, भले ही वो उत्पात करे ॥
श्रद्धा के फूल खिलाते चलो

प्राणो से भी धर्म है प्यारा, गुजादो सुन्दर नारा।
'गणेश मुनि' चहुँ दिशाये डोले, डोले, चाँद सितारा ॥
ऐसी सुभेरी वजाते चलो...



मुझे गुरु मिल गये ११

तर्ज : मैं का करूँ राम मुझे..

है हर्ष अपार, मुझे गुरु मिल गये।
होय होय मुझे गुरु मिल गये

पँच महाव्रत पाले, गुरु ब्रह्मचारी है।
ज्ञान का है दिव्य भानु, क्षमा गुणधारी है॥
खुला भाग्य का द्वार, मुझे गुरु मिल गये,
होय होय मुझे गुरु मिल गये

पार करेंगे नैया मोरी, गुरु उपकारी है।
दूर हरेंगे जडता मेरी, जावू बलिहारी है॥
ये सुनेंगे पुकार, मुझे गुरु मिल गये,
होय होय मुझे गुरु मिल गये

मगलो मे उत्तम मगल, समकित दाता है।
'गणेश' मुनि मुगति मे, गुरू ही ले जाता है॥
है श्रद्धा का हार, मुझे गुरु मिल गये,
होय होय मुझे गुरु मिल गये ..

o—☆—o

१२ आया हूँ तेरे द्वार

तर्ज : जादूगर सैयाँ छोड़ो मेरी ..

महावीर स्वामी, अन्तर्यामी, आया हूँ तेरे द्वार
अब मोहे तारो जी ..
तृशला नन्दन, दु.ख निकन्दन, भव जल से करो पार
अब मोहे तारो जी

आये तेरे द्वारे, उनको भी तारे, तूं ही सभी का रखवाल है।
खडा हूँ ऐसी विकट राह पर, हो रहे बे हाल है ।।
तू पापियो का तारणहार, अब मोंहे तारो जी

सुन कर क्रन्दन, चन्दना के बन्धन, दूर किये उस बार थे।
अर्जुनमाली चण्डकोशिया, किये तुम्ही ने पार थे ।।
देर क्यो मेरी बार, अब मोहे तारो जी...

हिंसक-अत्याचारी, बडे थे भारी, फैला अन्धेरा अज्ञान का।
त्राही त्राही को सुन कर आये, दिया सन्देशा ज्ञान का ।।
किया भारत का उद्धार, अब मोहे तारो जी.

'गणेश' पुकारे, मुझको भी तारे, तूँ ही जगत विख्यात है।
काम क्रोध मद लोभ लुटेरे, लूट रहे दिन रात है ।।
इनसे बचाना कृपाल, अब मोंहे तारो जी .

●

याद आई १३

तर्ज · वाजरा री पाणत करता...

आज तो आदि जिनवर की पावन याद आई।
'क' आई आई रे आखातीज भली मन भाई...

आद्य धर्म के संस्थापक आप कहाए।
'क' यौगलिक काल धर्म ने दूर हटाए...

धर्म और व्यावहारिक कला सिखलाई।
'क' ब्राह्मी लिपि गणित-विद्या खूब चलाई

वनिता के राज ठाट को छोड संजम धारे।
'क' दयानिधि देव वने जग के सहारे.

बारह मास का घोर तप प्रभु सेवे।
'क' श्रेयाँस कुँवर के द्वारा-इक्षु रस लेवे

आज भी श्रद्धालु भक्त वर्षी तप करे।
'क' सुमरण के पावन पथ पर पाप सभी हरे....

आज के पर्व से हमें क्या सन्देश लेना।
'क' जीवन को मधुर ;से मधुर वना देना.

प्रभु रा गुण गान कर जग लीज्यो।
'क' 'गणेश मुनि' मुगतिया रा रस पीज्यो



१४ प्यारे मानव से

तर्ज दिल लूटने वाले जादू. .

ओ प्यारे मानव मानवता से, तुमने कितना प्यार किया।
इस जीवन मे तुमने ओरो का, कितना कहो उपकार किया...

इन पशुओ की हड्डी चमड़ी, जग मे कई काम आती है।
पर मानव तेरा कुछ भी नही, यो ही काया जल जाती है ॥
यदि जन-सेवा कर नही पाया तो, व्यर्थ मे तूने जन्म लिया...

कितने रोतो को हास्य दिया, कितनो को तेने रुलाये हैं।
कितनो के तू ने आँसू पोछे, कितनो के हृदय जलाये है ॥
असहाय जीवन की नौकाओ को, कितना तूने पार किया...

कितने विछुड़े हृदय मिलाये, कितने दीनो से प्रेम किया।
कितने मानस मे ज्योति जगाई, कितनो को तुमने साथ दिया ॥
जीवन मे कितना दान दिया, और कितनो का उद्धार किया...

कर लेना ओ प्राणी भलाई, तेरी कीर्ति छा जाएगी।
युग-युग तक तेरे जीवन की, सौरभ दुनिया ले पाएगी ॥
मुनि 'गणेश' उसने आनन्द पाया, जिसने पर-उपकार किया .

०—☆—०

कलियुग आया | १५

तर्ज . हो गई आधी रात

कलियुग आया, दुनियाँ मे छाया, देखो नयन पसार
क्या क्या वताएँ तुम्हे...
चारो ओर फूट है, बाजारो मे लूट है, वदल गया ससार
क्या क्या बताएँ तुम्हे. .
पहले देखो भैया, पालते थे गैया, वहती थी दूध की नदियाँ।
आज पालते घर घर माही, कुत्ते तोते और विल्लियाँ।
हा। विगड गया व्यवहार, क्या क्या वताएँ तुम्हे...
गुरु जैसा कहते, शिष्य वैसा करते, आज्ञा मे धर्म मानते।
आज गुरु की चलती न कुछ भी, शिष्य ही अपनी तानते।
कैसे। जीवन का हो उद्धार। क्या क्या वताएँ तुम्हे .
पिता-पुत्र लडते, भाई-भाई भिडते, जूतो की सिर मे मारे!
सास-वहू और ननद भुजाई, करती हैं नित तकरारे।
नही मर्यादा का कोई विचार। क्या क्या बताएँ तुम्हे. ..
न्याय के लिए, वनी है कचेड़िये, पर झूठो का वहाँ दरवार है।
रिश्वत विना बात न करते, पहले-धराते कलदार है।
सच्चो का नही इतवार। क्या क्या वताएँ तुम्हें ..
'गणेश' कहता, धर्म जो करता, इस विषम कलियुग माई।
समझो उसने अपने जीवन की, ठाट से नैया तिराई।
वाकी है सब वेकार। क्या क्या वताएँ तुम्हे

१६ | क्षमा पर्व !

तर्ज : सावन की वहार....

आई आई रे सवत्सरी आज,
खमावे सभी नर नार....

पर्व क्षमा का यह कहलाता ।
पाठ क्षमा का जग को पढ़ाता ॥
सजायें मुक्ति नगर का साज..

राग-द्वेप का मैल मिटाकर ।
वैर-विरोध को दूर हटाकर ॥
वने आत्माभिमुख आज....

साल मे जो जो भूले वनी हो ।
जिनके साथ मे कटुता छनी हो ॥
उनसे माफी मांगे हटा लाज..

आज के दिन जो दिल से खमाता ।
आराधक होने का गौरव पाता ॥
पहने आत्म-भावो का ताज. .

मैत्री भावो के दीप जलाकर ।
'गणेश' हृदय को पावन वनाकर ॥
पाये अविनाशी पद का राज



आई आई रे जयन्ती | १७

तर्ज : वाजरा री पाणत करता

आज तो घर घर में नई खुशी छाई।
'क' आई आई रे जयन्ती प्रभु वीर की आई

धन्य पिता सिद्धारथ माता तृषला जाए।
'क' वर्धमान रा दर्शन कर देव हर्पाए.

वचपन वीता और यौवन मे पधारे।
'क' वर्पीदान दे प्रभुजी सजम धारे..

वन मे कर्मों से युद्ध घनघोर करे।
'क' जीते जीते जी कष्टों से कभी नही डरे

उग्र तपस्या कर प्रभु केवल ज्ञान पाए।
'क' तीर्थ स्थापना करके जगत को समझाए

चण्डकोशिया अर्जुन जैसे पापी तारे।
'क' नारी के उत्थान हेतु चन्दना को तारे

प्रेम का विगुल वजाकर हिसा वाद हटाया।
'क' अहिसा का झडा जग मे खूव लहराया.

चैत्र सुदी तेरस का भला दिन आया।
'क' गणेश' मुनि हिल-मिल प्रभु गीत गाया.

१८ | गौरव बढ़ाते चलो....

तर्ज : जोत से जोत ..

मान को नित्य हटाते चलो !
जीवन का गौरव बढाते चलो !
मिला है जीवन दो दिन का
उसको सफल बनाते चलो !

इठला करके हँसती थी जो, बागों मे सुन्दर कलियाँ ।
मुरझा करके खाक बनी वो, आज कहाँ रंग रलियाँ ॥
मन मे वैराग्य बसाते चलो

लक्ष्मी है यह चचल तितली, करो न इसका मान ।
चक्री जैसे धनपतियो का, रहा न कोई निशान ॥
अपने को यूँ समझाते चलो .

रूप रंग सब बदल जाते, स्थिर रहे न जवानी ।
मिट जाता है जीवन इकदिन, बुल-बुला-सा पानी ॥
विनय धर्म निभाते चलो...

दुनिया है यह आनी जानी, अपनी जरा भी न तानो ।
'गणेश मुनि' कहे प्रभुभजन बिन, सब ही को व्यर्थ मानो ॥
धर्म से नेह जुडाते चलो

०—☆—०

कहना ज्ञानी का | १९

तर्ज : रेशमी सलवार कुर्ता .

कर भजन भगवान कहना ज्ञानी।
सोच जरा इन्सान दुनिया फानी का ॥

तेरे साथ न आये कौडी, यही पडा रहेगा खजाना।
क्यों धर्म को छोडा तूने, बन करके मस्त दिवाना ॥
आज जवानी का .

तेरा यौवन बीता जाये, फिर लौट कभी नही आये।
क्यो खोता व्यर्थ समय को, तू हाथ हीरा नही पाये ॥
श्रेष्ठ इन्सानी का .

ये मात पिता अरु भाई, है मतलब के नही अपने।
क्यो करता इनसे प्रीति, है मीठे-मीठे सपने ॥
नीद खुल जानी का .

अब छोड तू तेरा मेरा, यह भेद भाव का घेरा।
कुछ सुकृत कर्म कमाले, मिट जाये 'गणेश' भव फेरा ॥
तेरी जिन्दगानी का



२० | तुझे ज्ञानी चेतावे रे

तर्ज : भगत भरदे रे झोली..

अव जाग जरा इन्सान, तुझे ज्ञानी चेतावे रे ओ...
तेरा होगा वड़ा उत्थान, कि जुग-जुग वनी रहेगी शान...

भटकत भटकत पूर्व पुण्य से, मनुष्य का जीवन पाया।
वड़े भाग से योग मिला रे, ज्ञानी ने ज्ञान बताया रे,
ज्ञानी ने ज्ञान बताया ॥
तू छोड़ सकल अभिमान, तुझे मुक्ति मिले आसान...

काम क्रोध मद लोभ की नगरी मे लूटा तू नही जावे।
गफलत की तू नीद छोड रे, जागे सोही पावे रे,
जागे सोही पावे ॥
यहाँ कोई नही पहचान, कि घर है दूर तेरा जहान..

सूना पड़ा है मन का मन्दिर, ज्ञान का दीप जलाना।
झूठे जग की प्रीति तोड कर, श्रद्धा का धूप लगाना रे।
श्रद्धा का धूप लगाना ॥
तू लेले शरण भगवान, 'गणेश' हो जायेगा कल्याण...



गीत प्रभु के गाले | २१

तर्ज : देख तेरे संसार की हालत .

गीत प्रभु के गाले वन्दे, जीवन का यही सार,
होगा भव-सागर से पार..

वार-वार नर तन नही पावे कर अपना उद्धार,
होगा भव-सागर से पार

लाख चौरासी फिर कर आया, कर्मों से दुःख वहुत उठाया।
पुण्य उदय तेरा जव आया, सुन्दर नर तन तूने पाया ॥
विषयो मे क्यो जीवन खोता कुछ तो कर ले विचार. .

जग है चिडिया रेन वसेरा, क्यो करता तू मेरा-मेरा।
उठ जायेगा यहाँ से डेरा, कोई न होगा साथी तेरा॥
धरा रहेगा धन ओ पगले देख रे नयन पसार

माता-पिता अरु वान्धव भाई, स्वार्थ की है झूठी सगाई।
कर लेना कुछ नेक कमाई, जीवन की यही होगी सहाई॥
'गणेश मुनि' कहे अव तू वन्दे, कर ले प्रभु से प्यार .



२२ | धर्म की ज्योति जले

तर्ज : नीले गगन के तले .

शुद्ध हृदय के तले,
धर्म की ज्योति जले ..

फूल जहाँ होते भँवरे वहाँ आते,
सौरभ लूट चले...

श्रीमत दर पे दीन दुःखीजन,
लाखों ही प्राणी पले ..

न्याय का पोषण होता वही पर,
जहाँ न सत्य छले...

सागर के मोती ऊपर न मिलते,
अन्तर मे आस फले.

'गणेश' कहता ज्ञान से मानव,
मोक्ष की ओर ढले...



पर्युषण पर्व आये है ! | २३

तर्ज · नहीं फरियाद करते हम .

पर्युपण पर्व आये हैं, सन्देशा पावन लाये है।
सफल जीवन बनाना है
सजादो त्याग से जीवन, हटादो वासना से मन।
सफल जीवन बनाना है
अष्ट मंगल अष्ट सिद्धि से,
आए हैं पर्व नव निधि से,
स्वागत इनका तुम करलो, तप की झोली निज भरलो ..
मुनि ऐवंता ने नाव तिराई,
सुदर्शन ने भक्ति जगाई,
ऐसी क्रान्ति मचादो तुम, प्रेम की सृष्टि रचा दो तुम.
गजसुकुमाल, अर्जुनमाली,
अपनाई थी क्षमा निराली,
मिटाये कर्मों के बन्धन, करें हम उनको नित वन्दन
काली सुकाली नदा महारानी,
तप मे कई बनी दिवानी,
करें हम भी तप-रस का पान, होवेगा जीवन का उत्थान ..
दान शील तप के दीप जलादो,
शुभ भावो का सकल्प जगादो,
यही पर्वाराधन का सार, 'गणेश' होवेगा बेडा पार .

२४ | संसारी ने सुख जरा नाँय

तर्ज : दूर कोई गाए...

जग है दुखो का पाश, सुख की न करो आश ।
भगवत दियो फरमाय, ससारी ने सुख जरा नाय...
रोटी को है दुख भारी, हवेली हो मोहनगारी ।
वस्त्र अलकार मनचाय, संसारी ने सुख जरा नाय...
परणे प्यारी निकले खोटी, सुख से न देवे रोटी ।
दिन रात छाती जलाय, ससारी ने सुख जरा नाय...
नारी यदि सुपातर, वेटा होवे कुपातर ।
धन दे सारा उडाय, ससारी ने सुख जरा नाय
परिवार वडा है, धन्धा मद पडा है ।
टैक्स दे और दवाय, ससारी ने सुख जरा नाय ..
घर की महारानी वोले, प्रीतम जी के कान खोले ।
धापुडी ने दो परणाय, संसारी ने सुख जरा नाय..
सिर पर कर्जा भारी, कुडकी की हो तैयारी ।
इत उत मन डोलाय, ससारी ने सुख जरा नाय...
वकील और मास्टर, फीस माँगे डाक्टर ।
लेवे ये नोट गिणाय, ससारी ने सुख जरा नाय..
सगा-सम्बन्धी की रीत, पाले न जमाई प्रीत ।
पल मे जा ये रूसाय, ससारी ने सुख जरा नाय...
वुढापा वेरी जव आवे, झट खाट पकड़ावे ।
माख्यां चहुँ ओर भिनाय, ससारी ने सुख जरा नाय...
दु.ख तो घनघोर है, 'गणेश' चहुँ ओर है ।
धर्म ही एक सहाय, संसारी ने सुख जरा नाय ..

उमर बीती जावे रे | २५

तर्ज : ढोला ढोल मजीरा .

पल पल उमर वीती जावे रे ।
चेतनियाँ तू गीत प्रभु के क्यो नही गावे रे

दुर्लभ नर का चोला पाया, विषयो मे क्यो भटके ।
नदी पूर ज्यो है जवानी, फिर इतना क्यो छटके ॥
पल मे वेग उतरी जावे रे....

माया के चक्कर मे तू यहाँ, अन्धा वनकर डोले ।
इकदिन चलना होगा यहाँ से, क्यो न हिया मे तोले ॥
साथ कुछ भी नही आवे रे ..

स्वारथ की है दुनिया सारी, झूठी इनकी प्रीत ।
राजा परदेशी से पूछो, क्या नारी की रीत ॥
जहर हलाहल पावे रे .

वचपन तेरा वीत गया, और नवानी भी खोई ।
वुढापे मे केवल अंखियाँ, आँसू भर भर रोई ॥
भलाई कुछ भी न कर पावे रे.

वीती सो तो वीत चली रे, अव भी तू ले चेत ।
पछताने से होता क्या जव, चिडिया चुग गई खेत ॥
हारी वाजी हाथ नही आवे रे. .

'गणेश' कहता सत्य बात है, कुछ तो धर्म कमाले ।
तन्मय होकर एक दो माला, ईश्वर की फिराले ॥
अपना हित यदि तू चावे रे....

२६ | रहना है दिन चार

तर्ज : मैं क्या करूँ राम.

यहाँ रहना है दिन चार, फिर तू पाप क्यों करे,
होय होय पाप क्यो करे...

मिट्टिया चुन-चुन महल वनाया, कहता घर मेरा है।
ना घर तेरा ना घर मेरा, चिड़िया रैन वसेरा है॥
इक दिन जाना हाथ पसार...

न कोई संगी साथी है, न कोई तेरा भ्राती है।
स्वारथ की यह दुनिया जानो, जीते जी का नाती है॥
होता झूठा इनका प्यार...

क्या लेकर तू आया भाई, क्या लेकर तू जाएगा।
खाली हाथों आया भाई, खाली हाथो जाएगा॥
आए कौड़ी नही लार..

'गणेश' कहे छोड़ यह, मिथ्या तेरा धन्धा है।
मोह माया के चक्कर मे, वना तू पूरा अन्धा है॥
लेना परभव को सुधार .

—०☆०—

अद्भुत योगी | २७

तर्ज . मन डोले मेरा तन डोले

मन फूले, मेरा तन झूले, मेरा हुआ सफल अवतार रे
इक अद्भुत योगी आया..

सुन्दर मुखडा चम-चम चमके, कचन वर्णी काया।
महावीर है नाम जिन्हों का, सव का दिल हर्षाया २॥
दर्शन करके, पाप सभी हरके, हुई मन मे खुशी अपार रे .

घूम रहा नगरी मे योगी, घर-घर भिक्षा काजे।
खडे सभी जन इन्तजारी मे, द्वारे-द्वारे साजे २॥
योगी चल के, मुझ निर्वल के, आये चन्दना के घर द्वार रे..

जजीरो से वेष्टित चन्दना, अपना सर मुडवाये।
हाथ मे लेकर उडद वाकुले, बैठी द्वार के माये २॥
वोल सभी पाये, अश्रु नही आये, प्रभु लौट गये उस वार रे

मुझ दुखिया को प्रभुवर तुमने, किस कारन छिटकाई।
भाग्यहीन भिखारिन हूँ मैं, जो मुझको रुलाई २॥
दुखडा सहते, अश्रु यो वहते, ज्यो वहे सावन की धार रे

आये-आये प्रभु चल आये, चन्दना फिर हरसाये।
जिनवर भिक्षा प्रेम से लेवे, सोना सुर वरसाये २॥
मिट गये क्रन्दन, चन्दना के वन्धन 'मुनि गणेश' हुआ जयकार रे

—०☆०—

२८ | मत कर मानव मान

तर्ज . रेशमी सलवार.

मत कर मानव मान मान दुखदाई है।
मान से दुनिया नही सुख पाई है. .

यह मान है मीठी हाला, पीए जो हो मतवाला।
वुद्धि पर पड जाए ताला, समझे अपने को आला ॥
दु.खो की खाई है ·

हिटलर सिकन्दर ने जग मे, कितना अन्याय चलाया।
गर्व से गर्वित होकर, जग को पीड़ित वनाया ॥
मौत तव आई है...

कंस दुर्योधन अभिमानी, धरती पर नही रह पाए।
लंकेश की गई अकडाई, रण भूमि मे मुर्झाए ॥
कुकीर्ति छाई है...

जग के इस उपवन मे, तुम जैसे लाखो फूले।
मिल गये सभी मिट्टी में, कहे 'गणेश' मद मे झूले ॥
विनय सुखदायी है ..

०—☆—०

जग होता है क्यों हैरान ? | २९

तर्ज . अव लौट के आजा मेरे मीत ..

जग होता है क्यों हैरान ? यदि इमान रखता है।
करना पड़े न दुख भुगतान.

झूठ कपट का जाल विछा है, चहुँ ओर मेरे भाई।
हर वस्तु मे मिलावट होती, देखो वाजार के माई ॥
पानी विकता है दूध समान

कदम-कदम पर दगावाजियाँ, अपना रंग दिखाती है।
ट्रेन से उतरे, पहुँचे न घर पर, जेव साफ हो जाती है ॥
वावू होते है वडे परेशान .

धोती वाले पगडी वाले, पेट और टोपी वाले।
नगे सिर हो चाहे कोई भी, करे वाजार आम काले ॥
नही रखते हैं अपनी शान .

मन्दिर मस्जिद स्थानक गिरजा, देखे कई गुरुद्वारे हैं।
अन्तर मे माया चलती पर, ऊपर धर्म के नारे हैं ॥
कहाँ कथनी करणी का ध्यान .

नैतिकता विन क्या कभी भी, जग न सुखी वन सकता है।
'गणेश मुनि' कहे धर्म-सीप मे, सुख का मोती पकता है ॥
कुछ करो सच्चाई का पान .



३० | तुम धर्म करो

तर्ज उडे जब जब जुल्फें ..

ओ.. तुम धर्म करो अब प्राणी !
कि बार-बार नही मिलना—ओ नर तन .
इस धरती पर जो आया ।
कि एक दिन उसे जाना ..ओ मनवा .

ओ....यह सपने की-सी है माया ।
कि आँख खुले मिट जायेगी ..ओ चेतन ..
तू किससे करता प्रीति ।
कि ललना भी देगी तुझे छोड.. ओ पछी...

ओ .. ये मात-पिता मतलब के ।
कि कोई नही साथ आयेगा ओ बन्दिया. .
कुछ पुण्य कमाई करले ।
कि फिर नही पछतायेगा ..ओ राहिया .

ओ . तू दीन दुखी को लख कर ।
कि कर सेवा तन-मन से...ओ मानव...
'मुनि गणेश' तुम को सुनाये ।
कि प्रभु ने तू अब भजले ..ओ गाफिल...

०—☆—०

साथ कोई नहीं आये | ३१

तर्ज : मन डोले मेरा तन डोले

यह तन झूठा, यह धन झूठा, है झूठा सब परिवार रे!
तेरे साथ कोई नही आये

मल-मल करके क्या तन धोता, साबुन तैल लगाई।
पावडर क्रीम से चमका ले चाहे, सुन्दर वस्त्र पहनाई॥
इक दिन डेरा, उठेगा तेरा, तब होगी इसकी छार रे.

आया था जब इक दिन यहाँ तू, क्या-क्या साथ मे लाया?
खाली हाथ थे दोनो तेरे, नगा बन कर आया॥
दिन रात दौडी, माया तेने जोडी, पर जाना हाथ पसार रे

किसको कहता मेरा-मेरा, कौन यहाँ पर तेरा?
मात-पिता सुत रमणी का सब, स्वारथ का है घेरा॥
क्यो तू रखता, इनमे ममता, है मिथ्या इनका प्यार रे.

ओसबिन्दु-सम जीवन तेरा, क्षणभगुर है भाई।
'गणेश मुनि' कहे सफल बनाले, धर्म की ज्योति जगाई॥
मिला तुझे मौका, खाना मत धोखा,
हो भव जल से अब पार रे....



३२ | ये उमड़-घुमड़

तर्ज : उड़े जब जब जुल्फें—

ओ—ये उमड़ घुमड घटा छाई।
कि नेम पिया अब आयेंगे—ओ सजनी—

वे कैसे श्याम सलोने।
कि लग रही मिलन की आश—ओ सजनी—

ओ—मैं उनसे करूँगी भोली बतियाँ।
कि पिया को लेऊँगी रिझाय—ओ सजनी—

वे दूल्हा बनकर आयेंगे।
कि देख-देख छिप जाऊँगी—ओ सजनी—

ओ—मेरा दिल क्यों धडके सखियाँ।
क्या लौट गये प्रभु गिरनार—ओ सजनी—

तुम जाओनी ओ सखियाँ।
कि साबरिया ने दो न मनाय—ओ सजनी—

ओ—ज्यों चन्द्र बिना सूनी रजनी।
त्यो पिया बिन लगे अबला—ओ सजनी—

'मुनि गणेश' धन्य सती को।
कि चल पड़ी वो भी प्रभु लार—ओ सजनी—

धन यदि पाया है तो | ३३

तर्ज . एक परदेशी मेरा दिल .

धन यदि पाया है तो कुछ करजा ।
दानियो की श्रेणी मे नाम भरजा .

खाली हाथ तू इक दिन यहाँ आया ।
पाकर धन क्यो आज इतराया ॥
मुक्त हाथो से कुछ दान करजा .

लाखो का तेने माल कमाया ।
पर कितना कहो ? लाभ उठाया ॥
'कर्ण' और 'भामाशा' के तुल्य बनजा

तितली सम यह लक्ष्मी मानो ।
आज यहाँ कल इसे और कही जानो ॥
द्वार पर आये को नट मत जा .

यदि यहाँ तुम कुछ देकर जाओगे ।
परलोक में खूब भरपूर पाओगे ॥
दान की बंक मे जमा करजा

'धन्ना'-'शालिभद्र' जैसा यदि तुझे बनना ।
तो दान की पेटी नित-नित भरना ॥
'गणेश मुनि' दान देके अब तिरजा .

—०☆०—

३४ | किसके बाँधू रे रखियाँ !

तर्ज : सावन की आई वहार·

में किसके बान्धू रे रखियाँ जाय।
भैया विन पियर सूना·

हरियाली चहुँ ओर, सुन्दर छाई।
झीले भी नालो से, जा टकराई॥
रिमझिम वरसे सावन मनभाय....

त्योहार रक्षा का, कितना सुहाना ?
भैया के घर होता वहिनों का आना॥
वचपन की मधुरी याद दिलाय...

थाल सजाकर, जाती हैं सखियाँ।
भैया के वाँधने, सुनहरी रखियाँ॥
दिल मे फूली फूली न समाय...

मुझ को भी भैया विधना जो देती।
रक्षा वाधन का लाभ मैं लेती॥
मुझको पियर मे कौन बुलाय· ·

किसको मैं भैया कह कर पुकारूँ।
किसको मैं प्रेम से तिलक निकालूँ॥
'गणेश' विधना ने किया अन्याय...

विदाई गीत ! | ३५

तर्ज : दूर कोई गाए .

सुनो मेरे प्यारे भ्रात, खुशियो के साथ साथ ।
हमे दो विदाई हो, कहे गुरुराई हो...

जव सत आये थे, फूले न समाये थे ।
नगर के माही हो, कहे गुरुराई हो. .

चार मास पूरे वीते, भक्ति रस नित्य पीते ।
(अव) विदावेला आई हो, कहे गुरुराई हो...

तप-ध्यान खूव किये, सरसे सभी के जिये ।
क्यो दिलगिर भाई हो, कहे गुरुराई हो .

सघ महाभाग्यशाली, प्रतिज्ञा जो पूर्ण पाली ।
चौमासा दीपाई हो, कहे गुरुराई हो

प्रेम और प्यार से, जीवन सुधार से ।
मुक्ति राह पाई हो, कहे गुरुराई हो...

धर्म वृद्धि कीजिये, नियम व्रत लीजिये ।
यही है सहाई हो, कहे गुरुराई हो..

भूलें सब माफ हो, 'गणेश' दिल साफ हो ।
(यह) सन्देश सुनाई हो, कहे गुरुराई हो...



३६ | कहानी है प्रेम की

तर्ज : रावण के देश गयो...

सुनो तुम ध्यान लगाई, महापुरुषो की है वडाई,
सारी दुनिया मे वो छाई, कहानी है प्रेम की...
सती चन्दना के द्वारे,
महावीर भगवान पधारे,
बाकुले ले उनको तारे, कहानी है प्रेम की...
राम जी कुटिया पे आये,
शवरी दिल मे हर्षाये,
झूठे उनके वेर खाये, कहानी है प्रेम की...
दुर्योधन का मेवा छोड़,
विदुर घर कृष्ण दौड,
खाई भाजी धर कोड़, कहानी है प्रेम की...
मीरां वनी श्याम दिवानी,
जहर को भी अमृत मानी,
कर गई पान मस्तानी, कहानी है प्रेम की
किसान की थी टापरी,
गान्धी की हुई खातरी,
पीवे वापू रावडी, कहानी है प्रेम की .
प्रभु का वही वास होता,
प्रेम जहाँ खास होता,
'गणेश' अपने घट मे जोता, कहानी है प्रेम की ..

भोला रे जीवड़ा ... | ३७

तर्ज : उड उड़ रे म्हारा काला रे

सुन-सुन रे ! सुन-सुन रे !
सुन-सुन रे म्हारा भोला रे जीवडा !
कद थने ज्ञान आसी रे

लाखचौरासी मांही फिरियो, ऊँचो नरतन पायो जीवडा
मोह माया मे राची रयो है, भूल्यो धर्म ने निज जीवडा .
झूठी काया, झूठी है माया, व्यर्थ क्यो भरमायो जीवडा .
वाल पणो तो खेल मे खोयो, यौवन विषयो मे खोयो जीवडा ..
झूठ कपट हिंसा कर कर क्यो, पाडे नरक मे डेरा जीवडा ..
संत समागम नही सुहावे, जोवे सिनेमा नाटक जीवडा
चार दिनो की चमक चादनी, आखिर अंधेरो छाये जीवडा ..
दया धर्म से प्रीत लगाले, भव सागर तिरजाये जीवडा
वीर वचन पर श्रद्धा जो राखे, पाये 'गणेश' आनन्द जीवडा

०—☆—०

३८ | राह मे मिल्यो सांवरियो

तर्ज : सावन की वहार.

हम चली रे दधि वेचन काज, राह में मिल्यो सावरियो .
कस राजा के, घर हम जाती।
माखन दधि ताजा, नित्य ले जाती ॥
तुमने लूटी रे अधवीच आज .

रोको मत मोहन, मोरी डगरियाँ।
जाना है हमको, दूर नगरियाँ ॥
छोडो वईयां मोरी नदलाल ..

आती न शरम, जरा तुम्हे कान्हाँ !
घर पर देगी, सास उल्हाना ॥
हम कहेगी क्या नटराज !...

चूडियाँ भी टूटी, बिन्दिया भी छूटी।
तरस न आती क्या, मति गई रूठी ?
फारी चुनरिया तुम्ही यदुराज !...

तिरछी कजरियाँ, देखो न राजा !
खालो तुम्ही यह, माखन ताजा ॥
'गणेश' होवो मती रे नाराज..

०—☆—०

तर्ज . सावन की वहार

थाणी जोवे रे वाट राजुल नार,
नेमीश्वर चले ससुराल .
जान वणाकर, अद्भुत लाये।
राजुल रे मन, मोद मनाये॥
वाजांरी मच रही झणकार.
तोरण पे आई, प्रभु रथ मोड़े।
पशुआँरा वन्धन, दयार्द्र हो तोड़े॥
हुए व्याहने को इनकार
गिरनार की ओर, प्रभुवर जाये।
मन मे सयम रा, भाव वणाये॥
नही सुणी रे राजुल पुकार
विधना ने मुझ मे, कैसी विताई।
पूरी मेरी साध, होने न पाई॥
अव विन्दिया सजावु किणरे लार.
था विन नेमि, राजुल झूरे।
मोत्याँरी माँग, कौन अब पूरे॥
हाय ! पडा रहा रे सिणगार
थाँसू मैं भीख, एक ही माँगू।
दे दो मुक्ति और कछु नही चाहूँ॥
'गणेश' आऊँला थाँणी लार

४० | भारत री शान !

तर्ज . खमा-खमा-खमा रे कुँवर .

जाये-जाये-जाये ! वलि आदर्श वीरो की,
भारत री शान वढाई, जी हो !
विघ्न भी आये कई सकट भी आये,
पर, धर्म मे दृढता दिखाई, जी हो !

पिता हुक्म से राम वन जाये, और सग मे सीता रानी, जी हो ।
वन के कष्ट अनेको झेले, पर आँख्या मे लाया नही पानी, जी हो ।
भातृय प्रेम निभाने हेतु, लछमन राम साथे जाये, जी हो ।
हाथो की मेहदी घुपने न पाई कि उर्मिला को छोड़ घर आये, जी हो ।
सत्य के लिए श्री हरिश्चन्द्र राजा, काशी मे वेचे सुत दारा, जी हो ।
कशदमन कर कृष्णमुरारी, पाये थे यश अपरम्पारा, जी हो ।
राणा प्रताप ने की थी रक्षा, हा ! मुगल्याँसुँ देश ने वचायो जी हो ।
वीरभामाशाह दानी वनकर, धन रो उपयोग वतायो जी हो ।
सीता सावित्रि अनसूया द्रौपदी, दुखडा तो घणा भारी पाया जी हो ।
धैर्य खोया नही किञ्चित अपना, पतिव्रत धर्म निभाया जी हो ।
महावीर ने सयम लेकर, अहिंसा-धर्म फैलाया जी हो ।
पशुतणा यज्ञ मेटी दीधा, ये तो त्रिशलारा लाल कहलाया जी हो ।
ईसामसी और वुद्ध जगत् ने, प्रेम रो पाठ पढ़ायो जी हो ।
गाँधी जी ने, आपणाइ देश ने आजाद पूरो वणायो जी हो ।
'गणेशमुनि' कहे महापुरुषाँरा, गुण मुख से गाया न जाये जी हो ।
शुद्ध भाव से जो भी ध्यावे, वे परमानन्द पद पाये जी हो...

०—☆—०

तर्ज : रुम झुम बरसे बादरवा

सुन सुन दिल मे धारो रे, ऊँची हवेली वालो,
देश को निहारो-निहारो, देश को निहारो .

भारत माहि प्रेम की गगा, बहती थी बहती थी,
सद्भावना सबके दिल मे रहती थी, रहती थी।
भूल गया भारत वासी रे, अपने देश का गौरव,
ओ आजादी वालो ! निहारो देश को निहारो

अन्न के खातिर आज मानवी, रोता है रोता है,
पेट पीठ को एक बना बोझा, ढोता है, ढोता है।
खुली सडको पर चलता रे, टेकटता लकुटी प्यारे,
ओ रोटी वालो ! निहारो देश को निहारो .

हवेलियो मे दीपको की ज्योति है ज्योति है,
झोपडियों मे राते विचारी रोती हैं रोती हैं।
उनको कौन सभाले रे, जो लोट रहे धूली मे बच्चे,
ओ धन वालो ! निहारो देश को निहारो

धनवानो के यहाँ मिठाई बँटती है बँटती है,
गरीबो की भूख से आँते कटती हैं कटती है।
तन पर नही कपड़े रे, चिथडो मे लिपटे पड़े हैं,
ओ कपड़े वालो ! निहारो देश को निहारो ..

तेरे लिये तो कार-मोटर फिरती है फिरती है,
गरीव के लिये तो केवल धरती है धरती है।
रहने को कहाँ बँगले रे, फुटपाथो पर रात गुजरती,
ओ सोने वालो! निहारो देश को निहारो

'गणेश मुनि' कहे गरीवो की सुन लेना, सुन लेना,
तन, मन, धन से उनकी सेवा कर लेना कर लेना।
भारत स्वर्ग वनेगा रे, इनकी दुआ से प्यारे,
ओ भामाशाह! निहारो देश को निहारो



रावण-सीता संवाद | ४२

तर्ज . घर आया मेरा परदेशी

रावण—

आओ सिया तुम दिलजानी, तुझको बनाऊं पटरानी ! ..

सीता—

सोच समझ रावण वोलो, वाणी मे क्यो विप घोलो !...

रावण—

आश लिये मैं आया हूँ, मुश्किल से तुझे पाया हूँ।

फेरो मत उस पर पानी

सीता—

न्याय नही है यह तेरा, उजडेगा इससे डेरा।

हृदय तराजू पर तोलो

रावण—

तुझ विन चैन नही पाऊँ, महलो का सिनगार बनाऊँ।

सुनले अन्तर की वाणी ..

सीता—

परनारी है विष-छुरी, हुई दशा कईयो की बुरी।

नरक-द्वार तुम मत खोलो ..

रावण—

मत ना दो सिया तुम शिक्षा, प्रेम की माँगू मैं भिक्षा।

देऊँ जीवन कुर्वानी ..

सीता—

रे लपट ! धिक्कार तुझे, राम-से राया मिले हैं मुझे !
फूटा ढोल ज्यू मत बोलो.

रावण—

मुझ जैसा नही वीर मिले, तीन भुवन मे मेरी चले।
छोड़ दे सिया तू मनमानी...

सीता—

मेरे तो एक राम सदा, घट से वो निकले न कदा।
चातक के ज्यूं प्रण जो लो...

रावण—

नित सोलह सिनगार सजो, राम का मन से ध्यान तजो।
कहलाओ लकेश की रानी. .

सीता—

सिनगारो पर आग लगे, राम की ज्योति मन मे जगे।
हाथ न आऊँ, चाहे रो लो ..

रावण—

सिह पिजड मे पड़ जाये, क्या वश उनका चल पाये।
व्यर्थ उठाओ न परेशानी .

सीता—

राम लछमन यहाँ आयेगे, जग रचा के छुडायेंगे।
नष्ट करे क्यो नर चोलो !

कवि—

'गणेश मुनि' कहे धन्य सती, तुझसे धरा हुई पुण्यवती।
शील की गंगा मे मैल धो लो .

०—☆—०

पार करेंगे नावड़िया | ४३

तर्ज : मन डोले मेरा तन डोले .

गुण गाएँ, हर्ष मनाएँ, मुनि पुष्कर है गुरुराज रे,
मेरी पार करेंगे नावड़िया...

रजनी माँही चन्दा प्रगटे, कमलनी ज्यो विकसाए।
त्यो गुरुवर कुल माँही जन्मे, सव जन मन हर्षाए,
अरे ओ सव जन मन हर्षाए ॥
मगल गाया, आनन्द छाया, सव मजा खुशी का साज रे...

पिता सूरज के नन्द कहाये, मात-वाली के जाये।
ग्राम नान्देशमा के देखो तुम, कैसे भाग्य सवाये—
अरे ओ कैसे भाग्य सवाये ॥
दर्शन पाये, जिया हर्षाए, अव हुआ सफल सव काज रे...

श्रमणसघ में दीपत गुरुवर, प्रवर्तक पद को पाई।
ज्ञान का सूरज वनकर चमके, ज्ञान के पुँज है भाई।
अरे ओ ज्ञान के पुँज है भाई ॥
ज्योति जगाए, मन को लुभाए, है गुरुवर पण्डित राज रे...

पंच महाव्रत पाले गुरुवर, तारे लाखो प्राणी।
देश विदेशो मे कहते हैं, जैन धर्म की वाणी,
अरे ओ जैन धर्म की वाणी ॥
वलि जाएँ, शीश नमाएँ, 'मुनि गणेश' सुधरे काज रे....



४४ | गुरु देवन के देव !

तर्ज : गुड़ला रै वादियो सूत

श्री गुरु देवन के देव, कि महिमा मैं गास्या जी मैं गास्यां।
नित करे सदा हम सेव, कि महिमा मैं गास्या जी मैं गास्या ..

गुरु तीरथराज कहाते हैं, पतितो को पावन बनाते हैं।
हम पाये चरण मे मेव, कि महिमा मैं गास्या जी मैं गास्यां ..

गुरु बिन घोर अन्धेरा है, इनसे ही ज्ञान उजेरा है।
मिले भव भव मे गुरुदेव, कि महिमा मैं गास्या जी मैं गास्या .

गुरु प्राणो से भी प्यारे हैं, जीवन नौका के सहारे है।
ये ही नैया करेगे खेव, कि महिमा मैं गास्यां जी मैं गास्या...

गुरु जीवन राह दिखाते हैं, अज्ञान अधेर हटाते है।
सत्सग की पाड़े टेव, कि महिमा मैं गास्या जी मैं गास्या...

गुरु आनन्द मगलकारी है, शुद्ध समकित देवन हारी है।
'गणेश' नमन करे सदैव, कि महिमा मैं गास्या जी मैं गास्यां ..



वांदन जास्यां ... | ४५

तर्ज : मैं तो झुरमट खेलन जास्यूँ

म्हा तो गुरुवर ने वांदन जास्यां मोरी माय,
हिवडा मे आज नही हरख समाय .

घणा दिनासुँ जोता जिणरी वाटडली दिनरात ।
ये तो ककू रे पगलिये चाली आया मोरी माय .

आज आपणे आगणिये मे साचो सुरतरु फलियो ।
ये तो मिलिया है पुण्य सूँ भारी मोरी माय...

महा उपकारी दीन-दयालु आये नगर हमारे ।
म्हा तो तन मन सू भक्ति करस्या मोरी माय .

ज्ञान सुणावे पथ वतावे भवसागर करे पार ।
ये तो तिरण तारण री जहाज मोरी माय ,,

उग्र तपस्वी महाज्ञानी है चमके इणरो तेज ।
ये तो सुध बुध म्हाणी घणी लेसे मोरी माय

वार वार इसड़ा ज्ञानी रो होवे कहाँ यहाँ आणो ।
'गणेश' पलक पावडिया विछावा मोरी माय .

o—☆—o

४६ | तीनलोक रो राज रे ...

तर्ज : गाडी चाले छकपक

गुरु जी आये म्हाणे शहर, करके म्हा पर मोटी मेहर ।
म्हाँणे रू रूम मे छाई खुशी आज रे ।
ओ म्हाँने मिल्यो तीन लोकरो राज रे....

चातक के ज्यूँ वाट तुम्हारी जोते सब नर-नारी ।
आने की जब खबर सुनी तो दौड आये हम जारी ॥
लेने भक्ति की महक,
सुनने वाणी की चहक,
म्हाणें रूं रूम मे छाई .

धन्य हुआ है नगर हमारा चरण शरण से आज ।
बच्चे बूढ़े युवक सबही तुम पर तो है नाज ॥
करें हम सेवा आठो पहर,
मिलेगी मुक्ति की सहर ।
म्हाणे रूं रूम मे छाई .

खूब विराजो आप गुरुवर करो महाउपकार।
ठाट निराला आयेगा अब होगा बेडा पार॥
मिटेगा पापो का जहर,
बहेगी ज्ञान की नहर।
म्हाणे रूँ रूम मे छाई .

धर्म ध्यान की फुलवारी यहाँ खिल जाये गुरुराज।
शुद्ध समकित पहचानेगे हम सुधरेगा भव काज।
उडेगा धर्मध्वज फहर,
पायेगे 'गणेश' आनन्द लहर।
म्हाणे रू रूम मे छाई ..



४७ | सद्गुरु करे विहार !

तर्ज : गुड़ला रै बांदियो सूत .

अव सद्गुरु करे विहार, कि ओलू आवेला जी आवेला ।
है इणरी महिमा अपार, कि ओलू आवेला जी आवेला...

गुरु पंच महाव्रत पाले हैं, और दोप वयालीस टाले हैं ।
है शुद्ध सयम के धार, कि ओलू आवेला जी आवेला ..

जव नगर हमारे आये थे, सव नारी नर हर्पाये थे ।
अव जाये छोड निराधार, कि ओलू आवेला जी आवेला

सुन्दर उपदेशो की झडियाँ, कई ज्ञान तत्त्व की सुलडियाँ ।
हमे आए याद हरवार, कि ओलू आवेला जी आवेला...

युवक का मानस जागा है, कुछ रग धर्म का लागा है ।
झट लेना फिर सभाल, कि ओलू आवेला जी आवेला.

हम कृपा तुम्हारी चाहते हैं, निज दिल के भाव वताते है ।
भव जल से देना तार, कि ओलू आवेला जी आवेला .

श्री सघ का है यही केना, माफी तुम आज दिला देना ।
'मुनि गणेग' दया दिल वार, कि ओलू आवेला जी आवेला

०—☆—०

तर्ज : बाजरा री पाणत करता...

आज तो गुरुदेव, म्हाने छोड जाए।
'क' जाए जाए जी अन्दाता, हिवडो भर आए
चार मास प्रभु री वाणी, आपने सुणाई।
'क' सूतोड़ी जनता ने थे तो खूब जगाई .
चन्द दिनो मे धरम रो, ठाट लगायो।
'क' सूनो कर चाल्या थानक मन नही भायो .
ज्ञान री बाता थे कर, म्हाने वश कीना।
'क' निरमोही बन अब किकर छोड दीना .
आवेला जद याद थाणी, गुणधारी।
'क' आँसुडा ढलकेगा तब आँख्यासू भारी ..
बालक री भूलाँ पर ध्यान, मत देवज्यो।
'क' मोटा वाजो आप जग मे सब खम लेवज्यो. .
कृपा कर पाछा वेगा, आप पधारज्यो।
'क' छोटी सी विनतडी ने हिया माही राखज्यौ
आपने विदाई देता, दुख होवे भारी।
'क' भावभिनी वन्दना 'गणेश' झेलो म्हारी ..



४६ | ओल्यूंड़ी

तर्ज ऐ म्हारी घूमर छे नखरालीऐ

ए म्हारा सतगुरु करत विहार ए माय ।
ओल्यूंड़ी तो दिन अरु रात म्हनै आय..

ए हिवड़ा ने कूंकर म्हैं समझाऊँ ए माय ।
दुखडो तो सयो नही म्हासू ओ जाय

ए ये तो ज्ञानरा भण्डार मोटा वाजे ए माय ।
सीखी नही ज्ञान कछु इण रे पाय...

ए ये तो चार मास कठिने वीतग्या ए माय ।
अवै घणो मनडो म्हारो पछताय...

ए म्हे तो सुवह-श्याम व्याख्यान मे जाती ए माय ।
चौपी मूतरा सू प्रेमडो लगाय..

ए गौचरी पाणी री वेला याद आसी ए माय ।
करस्यूं म्हें अर्जी किन्है दौड जाय.

ए यारी वोली मीठी घणी प्यारी लागे ए माय ।
सुणता ही दिलडा मे रस घोलाय

ए यारी सुरतिया पे जाऊ म्हैं वारी ए माय ।
पल भर मन सूँ नही विसराय..

ए म्हने धान नही भावे नीद उडगी ए माय।
दीधी जद जावण री वात सुनाय.

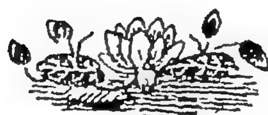
ए म्है तो गुरुजी रे सग मे जाम्यूँ ए माय।
पण नही इणरो साथ निभाय...

ए वादलिया ज्यूँ नेणा पाणी वरसे ए माय।
गुरु विन घडिय न मोहे सुहाय.

ए म्हनै सूता बैठा चेन नही आवै ए माय।
फिर कद मिलसी ज्ञानी गुरु आय...

ए म्हनै वेगा दर्शन देवै गुरुराज ए माय।
विनती आ मन मे आज बसाय.

ए सुखे-सुखे विचरे गुरुदेव ए माय।
'गणेश मुनि' ल्यो सबै आज खमाय .



५० | वाणी में अमृत बरसे

तर्ज . वटाऊ आयो लेवाने...

कैसे निर्मोही वनकर जाते हो ज्ञानी म्हाणा गुरुवरजी.

आवण री तो वात न जाणी, जावणरी करी वात ।
चार दिवस भी रया न यहाँ पर, किकर म्हाने विसरात.

सत पात्रणा री एक ही रीति, आवै नै झट जाय ।
थोडो सो रग लागता ही, देवे रे ये छिटकाय .

पाच दस म्हा मिलकर सखियाँ, आती थानक माय ।
धर्म चर्चा करने को म्हा, जावेगी अव किणरे पाय

वखाणरी है छटा निराली, सुन-सुन मनडो हरसे ।
जोड कला भी अद्‌भुत थाणी, वाणी मे अमृत घणो वरसे

सेवा भक्ति हुई न कुछ भी, रे गई मन रे माय ।
आज विदाई देता थाने, हिवडो रे म्हाणो कलपाय

भूल चूक जो हुई वै तो, माफी माँगे आज ।
म्हा हाँ परमादी ससारी, खमज्यो गुरु महाराज .

जल्दी पाछा दर्शन दीज्यो, म्हे जोवाला वाट ।
जावो जठे लगाजो गुरु जी, 'गणेश' नवा नवा ठाट...



तर्ज दिल लूटने वाले .

ओ जाने वाले राही तू, सन्देश मेरा ले चलना रे।
पग पग पर है माया ठगिनी, रख ध्यान हमेशा बचना रे ..

तू कहा से आया कहा जाएगा, कहा तुम्हारा ठिकाना है।
इन नागवान रग रलियो मे क्यो, वन कर फिरे दिवाना है ॥
तेरी मजिल तो है दूर पडी, मत बीच मे मित्र भटकना रे .

ये मात पिता सगी साथी, कोई भी साथ न आएगा।
प्रिय पत्नी भी छिटका देगी जव, तू नही खुश रख पाएगा ॥
इस झूठे जग की वातो मे, मत व्यर्थ ही मित्र उलझना रे ..

यह रसभरा नशीला यौवन, सध्या की सुन्दर लाली है।
मिट जाएगा पल मे आखिर, आएगी मृत्यु काली है ॥
प्रभु स्मरण ही है एक सत्य, जीवन मे पाप न भरना रे...

ओ राही ! खाली मत जाना, वरना तू कष्ट उठाएगा।
सद्धर्म का सवल ले चलना, परलोक मे तू सुख पाएगा ॥
कहे 'गणेश' जीवन उच्च बनाकर, विश्व मे तू चमकना रे .



सुने आपने कोमल कवि के
जीवन के मधुर तराने।
श्री केवल मुनि आये—जागृति—
का शंखनाद गुंजाने !



जागृति का शंखनाद

श्री केवल मुनि जी 'केवल'

श्री केवल मुनि जी : एक परिचय



आनन - हँसमुख पावन - मानस,
मिलन - सार व्यवहार सदा।
त्याग - तपोमय जीवन जिनका,
जान रहा ससार सदा ॥

देश, समाज, राष्ट्र को प्रतिदिन,
देते है जागृति - सन्देश।
ओजस्वी - हितकर - आकर्षक,
परम सरस होता उपदेश ॥

जैन दिवाकर जग - वल्लभश्री,
चौथमल्ल जी गुरु पाये।
वरदहस्त होने से उनका,
गहन ज्ञान - गुण - चुन पाये ॥

भाव भरे सगीत आपके,
गाते गायक - जन सारे।
विविध - भाँति की रचनाओ से,
बने हुए है कवि प्यारे ॥



भाव आरती | १

तर्ज : आरती करो शंकर की भोले. .

आरती करो जिनवर की, प्रेम दिनकर की।
शान्ति शशिधर की, आरती करो .
अपनी देह बनाओ मन्दिर।
शीश स्वर्ण का कलश मनोहर॥
हृदय सिंहासन पर बिठलाओ मूर्ति परम ईश्वर की....
प्रेम स्नेह का दीप जलाओ।
श्रद्धा का सुधूप लगाओ॥
रुम झूम नाचो रोम-रोम से रिमझिम ले जलधर की
नयन कमल मे भर निर्मल जल।
पावन सन्मति का धर श्रीफल॥
गीत गाओ वाणी वीणा पर ध्वनि हो कल निर्झर की
विविध भक्ति भावो के अक्षत।
नैवेद्य चन्दन पुष्प सुगन्धित॥
अर्पण करो चरन कमलो मे पूजा कर प्रभुवर की
भाव साधना भाव वन्दना।
भाव आरती भाव अर्चना॥
'केवल मुनि' कल्याणकारिणी तारिणी भवसागर की .



२ | प्रीति मेरी कभी न छूटे

तर्ज : मैंने देखी जग की रीत .

मेरी लगी चरण से प्रीत, प्रीत मेरी कभी न छूटे ।
हो, मैं गाऊँ तुम्हारे गीत, गीत प्रभु मीठे मीठे ॥
प्रीत मेरी कभी न छूटे ..

प्राणो के आधार प्रभु नयनो के तारे हो ।
आशा की उज्ज्वल ज्योति जीवन सहारे हो ॥
मेरे तुम ही सच्चे मीत मीत दुनियाँ के झूठे

तारन तरन भव सागर तिराईये ।
पतित पावन नाथ पावन वनाईये ॥
है यही कामना देव पिऊँ प्रेमामृत घूँटे ..

भाग्य से ही पुण्य से ही प्रभु तुम्हे पाया हूँ ।
'केवल मुनि' चरणो की शरण मे आया हूँ ॥
मैं लूँ कर्मो को जीत, जीत भव वन्धन टूटे .

०—☆—०

आशा लगी है | ३

तर्ज : घर आया मेरा परदेशी ..

आश लगी है दर्शन की, चरण कमल के वन्दन की ।।टेर।।

नयना पंथ निहार रहे, आओ प्राण पुकार रहे।
साध है अर्चन अर्पण की...

सीता जैसे राम रटे, राधा जैसे श्याम रटे।
ऐसी रट लग रही मन की ..

तुम हो चन्द चकोर हूँ मैं, तुम श्यामल घन मोर हूँ मैं।
कोकिल हूँ मधुकानन की...

ज्योति पुञ्ज दिव्य दिनकर हो, भव्य शान्तिमय शशिधर हो।
माधुरी हो नन्दनवन की .

वाणी सुधा-रस वर्षेंगे, तन मन आनन हर्षेंगे।
धन्य घड़ी है उस दिन की .

पद रज शीश चढाऊँगा, सेवा कर सुख पावूंगा।
'केवल मुनि' मन भावन की ..

—☆—

४ | ॐ शान्ति

तर्ज : मन डोले मेरा तन डोले ..

ॐ शान्ति जय ॐ शान्ति।
ॐ शान्ति की उठे पुकार रे ॥
ॐ शान्ति की बाजे बाँसुरियां...

राष्ट्र-राष्ट्र मे युद्ध द्वेष की कभी न वधके ज्वाला।
रणचण्डी अव पहन न पाए नर मुण्डो की माला ॥
अरे हॉ नर मुण्डो की माला—
ॐ शान्ति जय ॐ शान्ति
ॐ शान्ति की हो झकार रे ..

हिरोशिमा नागाशाकी का ध्वस भूल मत जाना।
उद्जन अणुवम कभी न फूटे ऐसा राग जगाना ॥
अरे रे ऐसा राग जगाना—
ॐ शान्ति जय ॐ शान्ति
मन-मन के मिल जाए तार रे. .

मानव मानव रहे मित्र वन वैर लडाई भूले।
'केवल मुनि' सव सुखी रहै, और प्रेम के झूले झूले ॥
अरे हाँ प्रेम के झूले झूलें—
ॐ शान्ति जय ॐ शान्ति
घर घर हो मंगलाचार रे

०—☆—०

सुनाने को आये | ५

तर्ज : जो वादा किया वो...

महावीर वाणी सुनाने को आये
जागो रे जागो बधु, जागो
उठोरे हम तो जगाने को आये...

मोह नीद मे कब से सोये हुए हो,
पर भाव मे स्व को खोए हुए हो।
दुनिया है क्या, तुम हो कहाँ,
सोचो समझो यह तुम को सोचाने को आये .

खाना कमाना व मौजे उडाना,
इसी को अगर जिंदगी तुमने माना।
हमे दो वता, मानवता है क्या ?
मानवता सीखो हम तो सिखाने को आये ..

सुज्ञान श्रद्धा की ज्योति जगाओ,
सदाचार से अपना जीवन सजाओ।
तप जप करो, नियम आदरो,
'केवल मुनि' यह तुमको वताने को आये ..



६ | मिलते है भगवान

तर्ज : देख तेरे संसार की हालत—

सम्यग् संयम सम्यग् दर्शन सम्यग् होवे ज्ञान ।
उसी को मिलते है भगवान—
चाँद-सा निर्मल, फूल-सा कोमल, उज्ज्वल सूर्य समान
उसी को मिलते है भगवान ।।ध्रुव।।
डसे न जिसको, क्रोध का काला ।
पिये नही जो मद का प्याला ।।
जिस पर नही, माया का जाला ।
जले न जिसके लोभ की ज्वाला ।।
शान्त धीर हो, नम्र सरल हो निर्लोभी गुणखान—
ईश्वर मिले न गगा नहाए ।
ईश्वर मिले न तीर्थ जाए ।।
ईश्वर मिले न राख लगाए ।
ईश्वर मिले न धूनि रमाए ।।
भक्ति तीर्थ हो, त्याग हो पानी, सदाचार का स्नान—
जिसका करुणा-निर्झर मन हो ।
जिसके अमृत-सने वचन हो ।।
जिसके निश्छल शान्त नयन हो ।
सत्य प्रेम ही, जिसका धन हो ।।
'केवल मुनि' वस ज्ञान-ज्योति का, पाए वही वरदान—

तेरा ही आधार | ७

तर्ज : चुप चुप खड़े हो—

डग-मग डग-मग नाव मझधार है ।
तेरा ही आधार प्रभु तेरा... ॥ध्रुव॥

झंझा के झकोरे प्रभु झूलने सी झूलती ।
छोटी-बडी लहरियो पै उतराती डूबती ॥
आशा की किरन तू ही तू ही पतवार है—

करुण क्रन्दन सुन चन्दना को तार दी ।
अर्जुन माली की नाथ बिगडी सुधार दी ॥
दयाशील देव क्यो देर मेरी बार है—

माता तूही पिता तूही तूही मेरा प्राण है ।
तेरे हाथ लाज अब मेरे भगवान है ॥
दीनबन्धु दीन की छोटी सी पुकार है—

मंगल करण तूही तारण तरण है ।
पतित पावन 'मुनि केवल' शरण है ॥
तेरी दया दृष्टि से बेडा मेरा पार है—

८ | कलकल करने वाले

तर्ज : रुक जा ओ जाने...

कल का ओ कहने वाले, कल का, वोल अन्त कव होगा कल का।
सोचता है तू वडी दूर की, श्वास का भरोसा नही कल का॥
करना जो आज करले, कल आये या न आए।
कल के भरोसे वैठा, वैठा ही रह न जाए॥
कल का ओ कहने वाले .
कल पर जो छोड़े उसके, होते न काम पूरे।
कहते है कि रावण के, कई काम है अधूरे॥
कल का ओ कहने वाले
दिन डूवने से पहले मजिल पे पहुँच जाए।
ऐसा चतुर मुसाफिर धोखा कभी न खाए॥
कल का ओ कहने वाले .
उडता हुआ समय नही, राह देखता किसी की।
जो चूकते न अवसर, सुनता है वस उसी की॥
कल का ओ कहने वाले...
'केवल मुनि' सजोले, हृदय से ज्ञान ज्योति।
उजियाला छुप न जाए, झटपट पिरोले मोती॥
कल का ओ कहने वाले...



पधारो गुरु जी | ९

तर्ज तेरे प्यार का आसरा चाहता हू ..

पधारो पधारो पधारो गुरु जी।
दया कर दया कर पधारो गुरु जी ॥
धन्य घडी धन्य है आज का दिन।
पावन करो नाथ मेरे घर का आगन ॥
विधि युक्त चरणो मे करता हूँ वन्दन ..
इधर भी महर कर निहारो गुरु जी
तुम्ही भव सिन्धु मे हो एक सहारे।
तुम्हारे सिवा कौन नैया उवारे ॥
सुनो देव, भक्तो की सुनलो पुकारे...
तारण-तरण अव तो तारो गुरुजी ..
कृपा-सिन्धु मुझ पर कृपा कीजिएगा।
शुद्ध-आहार पाणी है, ले लीजिएगा ॥
लाभ दीजिये, कुछ तो लाभ दीजिएगा ..
लाभ दे के, जीवन सवारो गुरुजी. .
सत्कार करता हूँ, पर उपकारी।
सन्मान देता हूँ कल्याणकारी ॥
गुरुदेव 'केवल मुनि' सुखकारी .
प्रार्थना मेरी अव स्वीकारो गुरुजी ..

१० | करिये रात्रि-भोजन त्याग

तर्ज : देख तेरे संसार की हालत—

जैन धर्म से जैन तत्त्व से, यदि होवे अनुराग,
करिये रात्रि भोजन त्याग ।
रात्रि भोजन त्याग भी तप है, कह गये हैं वीतराग,
करिये रात्रि भोजन त्याग ॥

साधु का कहना नही माना, खाने बैठा रात में खाना ।
पत्नि से बोला यहा आना, पूरे आम का अचार लाना ॥
मरे चूहे की पूछ देख फिर देखी उसने टाग—

एक समय रात्रि में भाई, गिरी छिपकली भिडी माँही ।
एक ने बड़े की कढी बनाई, मेढक गिरा न दिया दिखाई ॥
खाने बैठे देख काप गये बच गये लगा न दाग—

जलोदर जुआँ से होवे, मकड़ी से कुष्टि हो रोवे ।
केश खाये वो सुस्वर खोवे, जतु भक्ष से कई दुःख ढोवे ॥
सडे कपाल विच्छू खाने से जिसके फूटे भाग—

चिडिया कव्वे पक्षी कहाये, रात्रि मे वे भी नही खाये ।
भूखे हो तो भी उड जाये, मानव तू तो श्रेष्ठ कहाये ॥
बुद्धिमान है 'केवल मुनि' तो जाग जाग रे जाग—



राखी के दो तार | ११

तर्ज सावन का महीना—

सावन का महीना, राखी का है त्यौहार।
वहिन-भाई के प्रेम के साखी, राखी के दो तार—
रिमझिम करता हुआ आता है सावन।
रिमझिम मे मीठे गीत गाता है सावन ॥
वन मे तन मे मन मे आई है नई वहार—
भाई के हाथो मे राखी चमकती।
देख-देख वहिन की आँखे दमकती ॥
हृदय मे खुशी का है कोई न पारावार—
राखी है प्रेम की अनूठी निशानी।
चुप-चुप कहती हैं प्रीत है निभानी ॥
दीदी के लिए रखना सदा तू खुला द्वार—
दुख मे जो मां का जाया भाई न सभाले।
आँखो पे चश्मा डाले कानो पे ताले ॥
वहन को फिर रहेगा, बोलो किसका आधार—
वातो-वातो मे कभी रूठे मनेंगे।
जीवन मे कभी-कभी लड़ भी पड़ेगे ॥
मिल जावेगे वे फिर से होगा जो सच्चा प्यार—
रुक्मिणी ने भी कहा था भाई जल्दी आना।
प्यारे पिहर के पेड जल्दी वताना ॥
'केवल मुनि' राखी ने झुकाई है तलवार—

१२ | इन्सान में कई हैवान भी हैं

तर्ज छू लेने दो नाजुक.

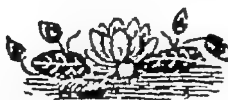
इन्सान सभी इन्सान नही, इन्सान मे कई हैवान भी हैं।
शैतान भी हैं, इन्सान मे तो, कोई कोई भगवान भी है..

औरो का भला नजरो मे रख, जो अपनी भलाई चाहता है।
सच्चा हमदर्द है, दुखियो का इन्सान है, करुणावान भी है

गैरो की जिसे परवाह नही, खुदगर्ज है पत्थर दिल वाला।
वो पेटू है, वह कीडा है, हैवान भी है, वो अनजान भी है..

गैरो का दर्द खुशी जिसकी, गैरो के आंसू पानी है।
शैतान के काम देख करके, अकल गुम है हैरान भी है..

जो विश्व का मंगल चाहता है, जिसको नही कोई कामना है।
'केवल मुनि' परम देवता हैं, उसके होते गुण गान भी हैं...



घर-घर गौचरी जावै | १३

तर्ज सारी सारी रात तेरी

ऋषभ देव प्रभु घर-घर गौचरी जावे ।
गौचरी जावे कोई नही, आहार वहरावे रे ..

युगिलया युग जव विलय हुआ था ।
धर्म-कर्म युग का उदय हुआ था ।।
केवलज्ञानी विना धर्म कौन समझावे रे

हाथी सजाए कई घोड़े सजाए ।
थालियो मे हीरे मोती भर भर लाए ।।
प्रभु को वहराएँ प्रभु देख फिर जावे रे. .

कोई कोई कन्या को भी सजा कर के लाए ।
सेवा करेगी कह कर भेट चढाएँ ।।
अविकारी प्रभु ऐसी भेंट न चाहे रे.

इनको क्या देवे सवको चिंता यही है ।
राजा को रोटी की कमी कुछ नही है ।।
वहराने की विधि उन्हे कौन ।वतावे रे...

एक वर्ष तक प्रभु फिरे द्वारे-द्वारे।
धीर वीर प्रसन्न वदन मौन धारे॥
धन्य प्रभु तपधारी, कर्म खपावे रे—

अतराय टूटी मन सभी का ही हर्षा।
देवो ने करी पुष्प-रत्नो की वर्षा॥
श्रीअगकुमार इक्षु रस वहरावे रे—

आज वही अक्षय तृतीया है आई।
वर्षी तप वालो को देने वधाई॥
'केवल मुनि' सभी हम गुण आज गावे रे—



सामायिक करो | १४

तर्ज : गरीबो की सुनो

तीन लोक की सम्पदा करे कोई एक दान।
सामायिक उससे वडी कह गये श्री भगवान ॥
सामायिक करो जीवन सुधरेगा,
जब लगन लगेगी तो बेडा पार होगा।
सुबह सुबह ही न्हाते-धोते खाते और कमाते हो,
दिन भर मौज-मजे करते हो रात हुए सो जाते हो।
यह जीवन की घडियाॅ हैं, अनमोल घड़ियाँ,
एक-एक मिनिट है मोती की लडियाँ।
इन्हे मोह ममता मे यो ही ना गँवाओ ॥
प्रभु चरण मे एक घडी तो लगाओ।
धन माया नही साथ चलेगी, धर्म चलेगा साथ मे

सामायिक की महिमा अद्भुत महावीर ने गाई है,
सामायिक विन कोई आत्मा कभी मुक्ति नही पाई है।
सामायिक है समता की शाति का सागर,
सामायिक है आत्मिक आनन्द का आगर।
कोई पुणिया जैसी सामायिक करेगा,
चक्रवर्ती भी मूल्य करन सकेगा।
'केवल मुनि' सामायिक सच्ची भले करो दिन-रात मे. .

१५ | युग की पुकार

तर्ज : छुप गया कोई रे...

नवयुवको जागो रे, युग की पुकार है,
जागरण की गूंज रही मीठी झकार है ।।ध्रुव।।

त्याग दो खोटी-खोटी, रूढियाँ कुरीतियाँ,
मित्रो अपनाओ अच्छी-अच्छी सुनीतियाँ,
भविष्य की ऑखे रही तुमको निहार है .

छोड दो ये मीठे-मीठे लड्डू खिलाना,
रुपया यह किसी अच्छे काम मे लगाना,
लाखो है नगे-भूखे लाखो वेकार हैं...

दहेज से बड़ी-वडी पुत्रियाँ कुँवारी है,
आज मध्य वित्त जन विपत्ति मे भारी हैं,
मानव से रुपया वड़ा कैसा अविचार है...

करो शुभ काम नाम चमके तुम्हारे,
'केवल मुनि' चमके जैसे चन्दा सितारे,
उजड़े भारत मे हमे लाना वहार है..



धनवानों से | १६

तर्ज : देख तेरे संसार की हालत...

देख रहे संसार की हालत फिर भी नही कुछ ध्यान।
अव तो सोचो रे धनवान ॥
सोने चाँदी के टुकडो का करो न तुम अभिमान।
अव तो सोचो रे धनवान ॥ध्रुव ॥

समझोगे तो शाति रहेगी, नही तो खून की नदियाँ वहेगी।
भूखी दुनिया अव न सहेगी, धन और धरती बँट के रहेगी ॥
आज विनोवा वोल रहे हैं सुनो लगाकर कान..

राजाओ के स्वप्न टूट गये, सदियो के साम्राज्य छूट गये।
नवाबो के ऐश रूठ गये, शतरजो के मोहरे फूट गये ॥
कौन से वम की शक्ति पर तुम सोये चादर तान

दुनिया एक मुसाफिर खाना, दो गज कफन ओढ कर जाना।
छोडो लोभ का ताना-वाना, गाओ विश्व प्रेम का गाना ॥
छोटे से जीवन के लिए मत गाओ भैरव-गान...

चेतो अव पापड मत वेलो, सोने-चादी से मत खेलो।
शिक्षा दया-दान मे देलो 'केवल मुनि' आनन्द यश लेलो ॥
महलो पर विजलियाँ गिरेगी कहता है आसमान...



१७ | कैसा जमाना

तर्ज : गम दिये मुस्तकिल .

एक मौजे करे, एक भूखें मरे, क्या वताना ।
हाय हाय रे कैसा जमाना ॥ध्रुव॥

एक क्रीम सेंट तैल मगावे, एक उतने का भोजन न पावे ।
यह चलेगा नही, जग सहेगा नही, समझाना ॥

सुन्दर भवनो मे उडती मिठाई, किसी दुखिया ने रोटी न पाई ।
न दिया ही जला, नही तैल मिला, घवराना ॥

झोपड़ी महल मे जंग चलेगा, और दोनो मे मेल न होगा ।
दोनो मिट जाएँगे, नष्ट हो जाएँगे, फिर क्या पाना ॥

तुम गरीवो को छाती लगाओ, दो मदद उनको ऊँचे उठाओ ।
'केवल मुनि' मानो कहा, जिसमे सवका भला सुख पाना ॥



ओ ब्लैक करने वालो ! | १८

तर्ज : ओ दूर जाने वाले...

ओ ब्लेक करने वालो ! क्या साथ मे चलेगा ।
सरकार, डाकू, डाक्टर कोई भी लूट लेगा ।।ध्रुव।।

पापो की पूँजी प्यारे, पचती नही कभी भी ।
कागज की नाव जल मे, डूवेगी जब गलेगा ।।

विश्वास हो या ना हो लेकिन यह बात सच है ।
जो भाग्य मे लिखा है, वो हर तरह मिलेगा ।।

पैसे की वात क्या है, सव चीज यही रहेगी ।
श्मशान की धधकती ज्वाला मे तन जलेगा ।।

एक ओर से कमाया, एक ओर से गया वह ।
नीयत है जैसे बरकत, अन्याय नही फलेगा ।।

आये अगर पकड मे, रुपयो की होगी चटनी ।
फदे में वो फसेगा, गैरो को जो छलेगा ।।

उपकार कर के प्यारो ! जीवन सफल वनालो ।
महकेगा नाम 'केवल' मुयश चमन खिलेगा ।।



१९ | ओ दहेज लेने वालो !

तर्ज ओ दूर जाने वाले .

ओ दहेज लेने वालो, मानवता क्यो भुलाओ।
क्यो कौम को विगाडो क्यो देश को डुवाओ . .

सौ तोला सोना माँगे, कोई मागता है मोटर।
कोई कहता रेडियो की, कोई कहता नगद लाओ .

कोई कहता जा रहा है पढने को वेटा लन्दन।
तुम उसका खर्चा देकर, दामाद को पढाओ

दो-चार लडकियाँ हो, थोडी सी होवे पूँजी।
मुँह मांगा तुमको दे दे, क्या खाएगा वताओ .

दव जाएगा कर्ज से, ना जाने कव छूटेगा।
अपने सम्वन्ध का तुम, दण्ड ऐसा ना दिलाओ

वहू सोने जैसी देखो, सोने के स्वप्न छोडो।
एक लाख भी मिले तो फूहड वहू न लाओ

कन्या कई कुवारी अठारह वीस तक की।
मा-वाप रो रहे हैं उनके न दुख वढाओ .

लाते गरीव कन्या देते गरीव को भी।
"केवल" समाज ऐसा, कहाँ आज है वताओ . .

☆

जाना ही पड़ेगा | २०

तर्ज : दुनिया में हम आए हैं तो .

संसार मे आया उसे जाना ही पड़ेगा ।
घर और कही जाके बसाना ही पड़ेगा ।।ध्रुव।।

उडते हुए पछी ने लिया रैन सबेरा ।
उडना ही पड़ेगा उसे होते ही बसेरा ।।
कल रात कही और बिताना ही पड़ेगा

बबूल वोयेगा तो उसे कॉटे गडेगे ।
और आम वोएगा तो उसे आम मिलेंगे ।।
सुख चाहे उसे काटे बचाना ही पड़ेगा . .

भिखारी से लेकर वड़े से वड़े मर गए ।
लाखो यहा पे जल गए लाखो ही गड गए ।।
तेरे लिए भी कफन मँगाना ही पड़ेगा .

'केवल मुनि' चमकेगा जो शुभ काम करेगा ।
गाएगी गीत दुनिया जो तू नाम करेगा ।।
तू मान या न मान सुनाना ही पड़ेगा . .



२१ | गा प्रेम से.......

तर्ज : आ, लौट के आजा मेरे मीत ..

गा प्रेम से गा रे प्रभु गीत,
तुझे प्रभु गीत तिरायेगा ।
गा भक्ति का गा रे सगीत,
तुझे प्रभु गीत तिरायेगा ।।ध्रुव।।

अच्छे पशुओं की अच्छे विहगो की, खाली नही जाती सेवा ।
वृक्षो की सेवा वेलो की सेवा, देती है फल फूल मेवा ।।
प्रभु सेवा सबसे पुनीत..

तारन तरन, प्रभु मगल करन से, लगाले लगन शान्ति पा ले ।
पावन चरण की ले ले शरण, अपने तन-मन मे ज्योति जगा ले ।।
प्रभु ही है सच्चे मीत .

प्रभु की भक्ति मे ऐसी है शक्ति,यह मुक्ति मे कर देती वासा ।
ज्ञानी गुनि कहे 'केवल मुनि' है चिन्तामणी पूरे आशा ।।
भक्ति से होगी जीत .



कैसे-जैसे | २२

तर्ज प्यार में तुमने धोखा सीखा . .

सवाल—क्रोधावेग मे प्राणी पागल हो जाता है कैसे ?
जवाव—वाढ़ में नदियाँ छोड किनारे पागल वनती जैसे !

सवाल—अभिमान मे फूल के मानव वर्राता है कैसे ?
जवाव—वारिस के पानी मे मेढक टर्राता है जैसे !

सवाल—फाँस डालने वाला कपटी खुद फँस जाता कैसे ?
जवाव—जाला वुनकर उसमे मकडी खुद फँस जाती जैसे !

सवाल—लोभी आत्मा अन्धा वनकर मिट जाता है कैसे ?
जवाव—मीठे रस के लालच मे मक्खी मर जाती जैसे !

सवाल—छोड़ कषाएँ राग द्वेष को मिले प्रभु से कैसे ?
जवाव—'केवल मुनि' गंगा मे यमुना मिल जाती है जैसे !



२३ | चार भावनाएँ

तर्ज · कभी सुख है कभी ..

भावना चार है चारो ही अपना रंग दिखाती है।
यह किस टाइप का प्राणी है, भाव नये बताती है.

"जो मेरा है सो मेरा है, और तेरा भी मेरा है।"
"दानवी भावना" ससार मे, विप्लव मचाती है..

"जो मेरा है सो मेरा है और तेरा है सो तेरा है।"
"मानवी भावना" जग मे, रहें कैसे सिखाती है.

"जो तेरा है सो तेरा है, और मेरा भी तेरा है।"
यह "दैवी भावना" है, प्रेम की गगा बहाती है

"न तेरा है, न मेरा है", इसे "ब्रह्म भावना" कहते।
यही शुद्ध भावना भगवान के पद पर बिठाती है

"कौरव और पाण्डव राम प्रभु महावीर चारो ही।"
प्रतिनिधि चार ही भावों के है नीति सुनाती है...

बनो भगवान 'मुनि केवल' देवता या फिर मानव ही।
स्व-पर-कल्याणकारी-भावना, जग मे पुजाती है.



संप कीजिये ! | २४

तर्ज : चुप चुप खड़े हो जरूर...

मेरे मित्रो फूट को विदा कर दीजिये ।
अब प्रेम कीजिए जी अब प्रेम कीजिए ।।ध्रुव।।
मोर नृत्य करके पैर को निहारता ।
अपनी कुरूपता पै चार आँसू डालता ।।
लड चुके खूब अब सप कर लीजिए
सच बोलो कब तक ऐसे बने रहोगे ।
कब तक इसी तरह तने तने रहोगे ।।
तानने से टूटती है तान मत कीजिए
दस रुपये मे लाये एक तश्तरी नई ।
मुफ्त मे न लेवे कोई टूक-टूक हो गई ।।
बुद्धिमानो इस न्याय पर ध्यान दीजिए
पति-पत्नी लड गये, एक कुत्ता आ गया ।
दोनो नही बोले सारी रोटियां वो खा गया ।।
किसका विगाड हुआ इन्साफ कीजिए
जागिए ! जागिए !! अब मत सोईये ।
दिल साफ कीजिए निर्मल होईये ।।
मानना पड़ेगा तुम्हे आज मान लीजिए
बीती बातें भूलिए, काँटे न चुभोइए ।
खो चुके हैं बहुत कुछ अब मत खोइए ।।
उन्नति समाज की हो 'केवल' ऐसा कीजिए

२५ | वनवासिनी रानी

तर्ज मैंने देखी जग की रीत...

राजा ने किया अन्याय, न्याय के लाले पड़ गए।
हो, रानी को मिला वनवास, वास मे काँटे गड़ गए ॥
पाव मे छाले पड गए ॥ध्रुव॥

साड़ी अस्त-व्यस्त हुई, टूटी मोहन माला है।
मूर्छा के भूमि गिरी, छूटी आँसू धारा है॥
नूपुर कुण्डल हुए टूक, हाथ के कगन मुड गए ..

केशर कचन रग-अग-लगी धूल है।
मुर्झाया हुआ मानों, कमल का फूल है॥
वेणी के बिखर गए फूल माग के मोती झड़ गए ..

शील के प्रभाव बीती वियोग की रात है।
'केवल' रानी के हुआ, सुख का प्रभात है॥
हुआ उदय पुण्य का सूर्य पाप के बादल उड़ गए ..



क्षमा-याचना | २६

तर्ज . घर आया मेरा परदेशी ..

राजा यह बोला वानी, माफ करो प्यारी रानी..

दु:ख है कि वनवास दिया, विन अपराध ही त्रास दिया।
शर्म से हूँ पानी पानी..

मेरे कारण दुख पाई, वन-वन मे तू भटकाई।
कष्ट उठाये गुण खानी

न्याय मार्ग प्रतिकूल गया, निर्णय करना भूल गया।
क्रोध मे हो गई नादानी. .

भूल शूल-सी खटक रही, घनसी चोटे पटक रही।
नत शिर हूँ मैं अभिमानी.

धन्य धन्य आदर्श सती, धन्य धन्य है शीलवती।
'केवल' धन्य है महारानी



२७ | कहानी श्रमण-महावीर की

तर्ज : निर्बल से लड़ाई बलवान की...

महा-क्रोधी से लड़ाई, महाधीर की।
यह कहानी है श्रमण महावीर की···

अष्ट-कर्मो को मिटाने, आत्म-ज्योति को जगाने।
भगवान वर्द्धमान तप कर रहे॥
कभी जंगल-उद्यान, कभी शून्य-श्मशान।
शात-एकात जगह मे ध्यान धर रहे॥
मन अमल-विमल, तन मेरु सा अचल।
नही परवाह करे दु.ख-पीर की...

राजगृही के निकट, चण्डकौशिक विकट।
एक नाग रहे नित्य फुफकारता॥
उससे डरे पशु-पछी, डरे नर-नारी-पथी।
नही किसी भी शक्ति से वह हारता॥
सर्प देता है व्यथा, जानी प्रभु ने कथा।
चले समझाने गति ले समीर की...

वह नाग-अति-काला, दृष्टि-विष मतवाला।
देख बांबी पे प्रभु को खड़े जल गया।।
उसने फन फैलाया, लहर-लहर-लहराया।
कई बार ऊँचा धरती से उछल गया।।
तेज-दृष्टि से निहार, डस लिया कर वार।
पीड़ा हुई जैसे विष-बुझे-तीर की..

देख प्रभु मुस्काए, ध्यान खोल फरमाए—
'शांत नागराज शांत! शांत!! शांत हो!!!
क्रोध छोड दो सुजान, क्षमामृत करो पान।
मत जीवन बिगाडो पथ-भ्रांत हो।।'
सुन के प्रभु के उद्‌गार, किया नाग ने उद्धार।
'केवल मुनि' शान्ति धारी हिमनीर की



चण्डकौशिक
को बोध

२८ | जिन्दगी का खेल

तर्ज : घर आया मेरा परदेशी....

क्यो अभिमान करे प्राणी,
थोड़े दिन की जिन्दगानी।

झूठी काया माया है, वादल की-सी छाया है।
छाया हुई किसकी रानी ?...

सब-कुछ छोड के जाना है, प्रीति तोड़ के जाना है।
भूल न जाना प्रभु वाणी..

जो आता है जाता है, फूल खिले मुर्झाता है।
दुनिया है आनी जानी

'केवल' प्रभु-गुण गा लेना, जीवन सफल वना लेना।
प्रभु-भक्ति है सुख दानी ..



जीवन के दो पहलू | २९

तर्ज : चुप-चुप खड़े हो...

सुख-दुःख दुःख-सुख दोनो साथ-साथ हैं,
दोनो आत-जात है जी...
दिन कर डूब गया अँधियारा छा गया,
उषा मुस्काई फिर उजियाला आ गया,
किसी वक्त दिन है, किसी वक्त रात है
सूखा-सूखा पेड हुआ रग-रूप खो गया,
मधु-ऋतु आई फिर हरा-भरा हो गया,
पतझड-मधु ऋतु दोनो न ठहरात है...
सयोग-गिरि से वहती वियोग-तरग है,
दुनिया मे फूल और काँटे संग-सग हैं,
मातम कभी है, कभी आ रही बारात है ..
सागर मे कभी भाटा और कभी ज्वार है,
सुख-दु:ख दोनो मानो बिजली के तार है,
इन दोनो मे बड़ी गहरी मुलाकात है.
सुख-दु ख से ही जीवन गतिमान है,
दोनो के अस्तित्व से ही जीवन की शान है,
पुण्य-पाप इन्ही के मात और तात है
सुख के हिंडोले झूल मद मे न फूलना,
दुःख के झोके मे प्रभु नाम को न भूलना,
'केवल मुनि' समता ही बड़ी अच्छी बात है ..

३० | प्रभु गीत गाले

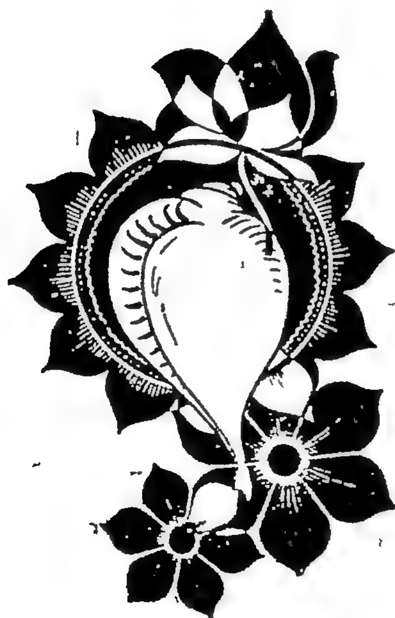
तर्ज : रुम झुम बरसे बादरवा .

पल-पल बीते उमरिया, मस्त जवानी जाये ।
प्रभु गीत गा ले, गा ले, प्रभु गीत गा ले ...
प्यारा-प्यारा बचपन पीछे खो गया, खो गया ।
यौवन पाकर तू मतवाला हो गया हो गया ॥
वार वार नही पावे रे—
गगा वहती है प्यारे-मौका है, नहा ले, गा ले .
कैसे कैसे बांके जग मे हो गये हो गये ।
खेल खेल कर अन्त जमी पर सो गये सो गये ॥
कोई अमर नही आया रे—
पंछी ! ये फूल रगीले, मुर्झाने वाले, गा ले .
तेरे घर मे माल मसाले होते हैं, होते हैं ।
भूख के मारे कई बिचारे रोते हैं, रोते हैं ॥
उनकी कौन खबर ले रे—
जिनके नही तन पै कपड़ा, रोटियों के लाले गा ले ..
गोरा गोरा देख वदन क्यो फूला है फूला है ।
चार दिनो की जिन्दगानी को भूला है भूला है ॥
जीवन सफल वना ले रे—
'केवल मुनि' समझाये, ओ जाने वाले, गाले.



क्रान्ति के स्वर

श्री सौभाग्य मुनि जी 'कुमुद'



श्री सौभाग्य मुनि जी 'कुमुद' : एक परिचय



आगम-ज्ञाता सरल-स्वभावी,
गुरुवर पाये अम्बालाल।
लघुवय मे ही सयम लेकर,
निकले प्रतिभावान कमाल॥

जिनवाणी का सिंहनाद कर,
सोई सृष्टि जगाते हैं।
अपनी भाव-भरी भाषा से,
अभिनव-क्रान्ति मचाते है॥

नव अभिधा मे जिन-गुण-गाकर,
सफल वनाते शुभ घडियाँ।
भाषण मे आकर्षण भारी,
मानो सावण की झड़ियाँ॥

भाव भरे शिक्षाप्रद इनके,
इसमे दिये गए संगीत।
अन्तर्मन से आप पढेंगे,
तो पायेगे जीवन जीत॥



शान्ति प्रार्थना | १

तर्ज : जय बोलो महावीर

श्री शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो।
प्रभु भव-भव के दुःख दूर हरो

प्रभु हस्तिनापुर में जन्म लिया,
मृगी रोग निवार आनन्द किया।
जीवन मे मगल ज्योति भरो

अचला-नन्दन त्रिभुवन प्यारे,
जो सुमरे कष्ट मिटे सारे,
समकित-धन दो मिथ्यात्व हरो

जय विश्वसेन-कुल-चन्द्र सदा,
पूजे नर देव सुरेन्द्र सदा।
घर-घर मे मगल मोद भरो

भविजन-वल्लभ कहलाते हो,
शरणागत पार लगाते हो।
"मुनि कुमुद" भवोदधि पार करो .



२ | पुरुषार्थ जगाएगा

तर्ज : जय वोलो महावीर.

नर नारायण वन जाएगा,
जव निज पुरुषार्थ जगाएगा .

पापो के वन्धन टूटेंगे,
विषयो के नाते छूटेंगे।
जव सोया सिंह जगाएगा ..

घर मे सोया एक ईश्वर है,
जानेगा वो ज्ञानी नर है।
सब जनम-मरण मिट जाएगा...

वादल के पीछे दिनकर है,
कर्मो के पीछे ईश्वर है।
उसकी जो ज्योति जगाएगा .

गुरु के चरणों में जाकर के,
श्रद्धा के कुसुम चढाकर के।
कहे 'कुमुद' जो अमृत पाएगा .



कौन सुनेगा ? | ३

तर्ज : आने वाले कल की तुम .

कौन सुनेगा आज यहाँ पर पीर को ।
भूल चुका है आज मनुज श्री राम कृष्ण महावीर को ..

कभी जटायु की सेवा मे राम वलि-वलि जाते थे ।
घायल पक्षी को गोदी मे ले आँसू टपकाते थे ।।
आज खडा है भाई आगे, भाई ले शमशीर को

कभी सुदामा के चावल खा, नटवर हर्षित होते थे ।
दीन-हीन ब्राह्मण के पग को, नयन नीर से धोते थे ।।
आज दु.खी को ठुकराते हैं, धिक्कारे तकदीर को

कभी वीर चन्दनबाला से, उडद बाकुले पाते थे ।
चण्डकोशिया के विष के, वदले अमृत वरषाते थे ।।
आज मनुज वरषाते हैं, कटुवाणी के विष नीर को .

राम, कृष्ण, महावीर की माला, जपने वालो सुन लेना ।
इनके उत्तम जीवन से कुछ, शिक्षाएँ भी चुन लेना ।।
"कुमुद मुनि" कहे जीवन वदलो, पिओ प्रेम के नीर को ..



४ | डगमग करती नाव

तर्ज   नील गगन पर उडते वादल...

त्रिशलानन्दन वीर प्रभु अव आ आ आ..
डगमग करती नाव हमारी, अव तो पार लगा...

रोती-रोती चन्दना पर, करुणा जल वरसाया।
सुदर्शन की शूलियो पर, सिंहासन चमकाया॥
चण्डकोशियो नाग उवार्यो वैसी कृपा ला...

अर्जुन जैसे पापियो को तुमने प्रभु उवारा।
गोशालक की गालियों को, भूल उसे था तारा॥
करुणा-सागर दीन-दयालु, अव तो दया दिखा...

आज देश में पापियो का, फहर रहा है झण्डा।
आज राज्य है लाठियो का, प्रेम पडा है ठण्डा।
सत्य-प्रेम के श्रेष्ठ पुजारी, आकर कष्ट मिटा..

मधुर-प्रेम की लहरियो का, अमृत स्रोत वहा जा।
सूखी जीवन क्यारियों मे, नव-जीवन सरसा जा॥
"कुमुद" धरा पर एक वार फिर ज्ञात पुत्र आ, आ

—०☆०—

जिनवाणी की गंगा | ५

तर्ज : तेरे मन की गंगा .

जिनवाणी की गगा और तेरे मन की धारा का
बोल भैया बोल, सगम होगा कि नही ?

कितना जीवन बीत गया है, अरे तुझे समझाने मे ।
हीरे जैसा जीवन खोया, तैंने पाप बढाने मे ।।
बढता तेरा पाप कभी कम होगा कि नही .

पागल-सा बन डोल रहा है, भूल सही इन्सानी को ।
तेने गड्ढा खोदा है, धारण करके शैतानी को ।।
मन का कचरा मैल, कभी कम होगा कि नही .

जिनवाणी की गगा का यह, योग सुनहरा आया है ।
भारी भूल करेगा मानव, जो नही पाप बहाया है ।।
दु ख का बढता बोझ, कभी कम होगा कि नही ..

ज्यो आया त्यो चला गया तो, पायेगा दु.ख भारी रे ।
कहे 'कुमुद' जिनवाणी से, तिर जाए नाव तुम्हारी रे ।।
भव का चलता चक्र कभी कम होगा कि नही ..

०—☆—०

६ | चन्दना री पुकार

तर्ज : मैं तो झुरमट खेलन जास्यूं....

म्हारे आँगण आया, मत जावो महावीर।
आँसूड़ा ढलकावे, म्हारी आँखडली...

चम्पा लुटगी मैं विकियोड़ी, पग वन्धन बंधियोडी।
म्हारी कौण सुणेला, दुनियाँ माय महावीर...

मात-पिता सब सखियाँ छूटी, छुट्यो सब परिवार।
थे तो दुखिया ने, मत ठुकरावो महावीर

आप पधार्यां मनडो हरख्यो, पण कांई पड गई चूक।
पगल्यां धरता ही पाछा क्यू फिरग्याओ महावीर..

उडद बाकुला देख आप क्यूं, पाछा फिर गया नाथ।
मैं तो दुखियारी और कांई लाऊँ महावीर.

थां विन दुःखिया की सुणवाई, कौन करेला नाथ।
मैं तो पलकां सूं पूजू, भगवान महावीर.

जोधाणा मे कियो चौमासो 'कुमुद' मुनि गुण गावे।
सती चन्दना रा कारज थे तो सार्या महावीर.



धर्म बिना जीवन सूना | ७

तर्ज . प्यार करो ऋतु प्यार की. .

धर्म बिना जीवन सूना है, सौरभ बिन जैसे कलिया।
चन्दा विन ज्यू सूनी रजनी, शील बिना ज्यो कामनिया ।।

भूल गया जो धर्म कृत्य को, भूल गया सुख की गलिया।
अमृत प्याला त्याग मूर्ख वह, निगल रहा विष की डलियाँ ।।
पाप गठरियां शिर पर धर कर, डूब रहा गहरी नदियाँ

चचल यौवन जीवन अस्थिर चार दिनो की रगरलियाँ।
धर्म बिना नही शान्ति मिले तू, चाहे गवा दे ऊमरियाँ ।।
वन्द तिजोरी पडी रहेगी, सोने-चाँदी की डलियाँ

धर्म सनातन द्वीप जहाँ डगमग नैया को त्राण मिले।
दु ख-दर्द हटे सुख-शान्ति मिले, आनन्द कुसुम रसवान खिले ।।
'मुनि कुमुद' धर्म की सदा विजय है, धर्म परम ज्योतिर्मणियाँ...



६ | गूँज रही है बाँसुरियां

तर्ज : प्यार करो ऋतु प्यार की..

ठुमक-ठुमक कर नाचे कन्हैया,
बाजे पैर की पैंजनियाँ।
वृन्दावन के मस्त गगन मे,
गूँज रही है वाँसुरियाँ॥

यमुना की लहरे, फर-फर फहरे, फूलो की कलियाँ चटकीली।
नाचै पखेरू, वाजत घूघरू, छटा अनोखी रगीली॥
चचल वछड़े कुदक रहे हैं,
वोल रही है कोयलियाँ.

वाल सखा सग मिल-जुल करके, रुमझुम रास रचावे रे।
झनक-झनक झाँझरियो की, झकार मची मन भावे रे॥
पुलकित है पशु-पक्षी सारे,
खिल रही सव की मन कलियाँ...

जग वल्लभ है मोहन मुरारी, वासुदेव वन आए है।
नीति धर्म के सच्चे रक्षक, दीनवन्धु कहलाए हैं॥
सव के प्रिय, सव के हितकारी,
'कुमुद' कन्हैया साँवरिया



जाग-जाग तेरी उमर जाए | ९

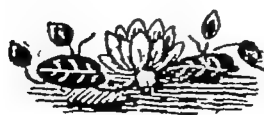
तर्ज बार-बार तोहे क्या

जाग-जाग तेरी उमर जाए, दो दिन का महमान।
तन, धन, यौवन, चचल चपला समान॥

तिनके ऊपर बून्द है, नही अचल-अटल।
मुरझाता है शाम को, नित हसता कमल॥
एक बात का अपने दिल मे, हरदम रखना ध्यान।
क्या ? तन

नभ मे उगता चाँद है, सुन्दर धवल।
हो जाता है अस्त वह, सब है चपल॥
इसीलिए तो मैं कहता हूँ, उसका रखना ध्यान।
क्या ? तन ..

करले अपनी जिन्दगी, मानव सफल।
दुर्व्यसनो की आग मे, जाए न जल॥
'कुमुद' झूँठ नही जाने वाला, यह ऋषियो का ज्ञान।
क्या ? तन..



१० | ओ धन वालों

तर्ज : फिरकी वाली तू कल....

ओ धनवालो, कि भूल मत जाना, ये धन का खजाना।
चलेगा नही साथ मे, इससे सुकृत कमाना तेरे हाथ मे

सोचा था कभी तूने गुरु की शरण मे आऊँगा तू ना आया।
सत्य का राही वन कर धर्म की, ज्योति, पाऊँगा तू ना पाया ॥
तेरी आशा निश-दिन रहती, क्यो थैली ना भरती,
कैसे लिखू, तुम्हारी कहानी, रे पूछ अभिमानी,
तू अपने दिमाग से...

सोचा था तू ने धन से सुख और शान्ति, आएगी पर ना आई।
हक दुखियो का छीना सोचा, रौनक, आएगी पर ना आई ॥
उनके मुख से आह निकले, कव पुण्यवानी वदले,
उमर वीते तेरी मतवाली, पियो प्रेम प्याली,
दु:खो मे पड़े भ्रात से...

धन के दीवाने लाखो मरके नरक मे, जाते है अव भी जाये।
सच्चाई रखने वाले सज्जन मुक्ति को, पाते हैं अव भी पाये ॥
कहते तुमको हरदम प्यारे, तू दिल मे ना धारे,
कैसे सुधरे 'कुमुद' जिन्दगानी, तू धार जिनवाणी,
टलेगा वुरी घात से ..

मद भरियो जोवनियो | ११

तर्ज : ढोला ढोल मजीरा .

भोला भूल मती ना जा जे रे।
मद भरियो जोवनियो थारो, ढलतो ला जे रे..

नीच ठिकाणे उपज्यो रे, कियो मूघलो अहार।
हाड-मांस रा डील रो थू, कर तो रहे सिणगार .

गौरी-गौरी चामडी री थारा मन मे ऐंठ।
पतो नही है थोडा दिन मे, व्हेला अगनी भेंट

तरह-तरह सिणगार करे तू धोवे साफ शरीर।
ऐंठ वजारा निकले ज्यू, सबसे वडो अमीर...

थोडा दिन री पामणीया, जोवन री झलकार।
ई मे आँधो व्हे जासी तो, जासी जमारो हार

जीव-देह दोई भिन्न है रे, कर आतम को ज्ञान।
देह नष्ट हो जावसी फिर, क्यो करता अभिमान

सतगुरु को शरणो पकड रे, सीख हिया मे मान।
साची-साची 'कुमुद' कहे तू, भज ले रे भगवान



१२ | पहलाँ री कमाई

तर्ज : वाजरा री पाणत करता

पहला री कमाई सू थू अठे आयो ।
'क', पायो-पायो रे जनम अनमोल पायो

माता रा गरभ मे तू दु:ख पायो ।
'क' रो रो आयो रे धरती पे जीव घवरायो

देखने रंगीली माया ललचायो ।
'क' आयो जोवनियो रगीलो गहरो मद छायो .

छैल-छविलो धकियो भरमायो ।
'क' रग लागो रे पापाई रो कुमत छायो

पाप रो भरियोड़ो घट फूटवा आयो ।
'क' जाग जाग रे हठीला जाग, अवसर पायो .

ऊमरियां वीते रे थारो काल आयो ।
'क' थोडी वाधले पुनवानी यू 'कुमुद' गायो.



रुलाया ना करो | १३

तर्ज मोहन हमारे मधुवन

विश्वास देकर औरो को, रुलाया ना करो।
गिरते हुए को धक्का दे, गिराया ना करो...

जो हैं तुमसे हीन वह मुर्दा नही है नर है।
उसके भी वाल-वच्चे, उसके भी एक घर है॥
वसा न सको तो कम से कम उजाडा ना करो

सुख-दु ख पवन के झोके, ये आते-जाते है।
दे कौन कितना साथ, ये हमको वताते हैं॥
मानवता के महत्त्व को, भुलाया ना करो

सुख में उडाये गुलछर्रे, मिल करके साथ मे।
ओ मित्र ! किनारा ना करो, कष्टो की रात मे॥
मैत्री के पावन मूल्य को, ठुकराया ना करो

होती परीक्षा कष्ट मे, हैं कौन किसका मीत।
वैभव की घडियो मे तो गाते, सब ही यश के गीत॥
'कुमुद' वनाया स्नेह तो, छिटकाया ना करो



१४ | कर्जा चुकाना पड़ेगा....

तर्ज : जो वादा किया वो.

जो कर्जा लिया वो चुकाना पड़ेगा,
रो के चुकाओ चाहे हँस के चुकाओ
तुमको देना पड़ेगा

भूल गया है भोले, रंग रलियों मे।
उलझ गये हैं भौंरे, विप कलियो मे।।
खोया नफा और खाया खता, अव तो जगना पड़ेगा..

चार दिनो की रंगीली दुनियाँ।
एक दिन सूनी होगी सपनो की वगियाँ।।
धर्म कमा और सत्य सजाले अव तो जाना पड़ेगा ..

पापो की गठरी से तिर न सकेगा।
वुरी गतियो मे गिर गिर के मरेगा।।
छाई घटा तेरी डगमग नय्या इसे तिराना पड़ेगा

सद्गुरु के सग जीवन वनाले।
ज्ञान का अमृत पीके पचाले।।
'कुमुद' कहे तेरा होगा भला तुझको करना पड़ेगा..



श्रेयांसकुमार का विनय | १५

तर्ज म्हाने जै पुरिया .

आओ तीन लोक रा नाथ, परसो परसो म्हारे हाथ ।
म्हारा सपना ने साचो वणाओ प्यारा प्रभुजी
तन मन वलिहारी .

प्रभु तीन लोक राचन्द, पूजे मिलकर सुर नर वृन्द ।
म्हारा मन मे आनन्द घणो छायो प्यारा प्रभुजी
तन मन वलिहारी

आज पवित्र हुँ आगणियो, छायो धर्म तणों चादणियो ।
म्हारो हृदय कमल विकसायो प्यारा प्रभुजी
तन मन वलिहारी ..

धन धन आज म्हारो भाग, उमड़े रोम-रोम मे राग ।
सागे कल्पवृक्ष घर आँगन मे सरसायो प्यारा प्रभुजी
तन मन वलिहारी...

परसो इक्षु रस की धार, इच्छा पूरो गुण भडार ।
मुनि "कुमुद" आनन्द वरताओ प्यारा प्रभुजी
तन मन वलिहारी .



१६ | सफल बनाले

तर्ज · प्यार करो ऋतु

जीवन मे शुभ ज्योति जगा ले,
सफल बनाले चन्द घडियाँ।
मुर्झा जाएगी कुछ दिन में,
तेरे जीवन की कलिया .

चचल यौवन, चचल वैभव, चचल तेरी रंग रलियाँ।
उठ जाएगा तेरा जीवन, पड़ी रहेगी धन डलिया ॥
पागल बन कर भटक न जाना,
यहाँ पग-पग दुःख की डलियाँ ..

पल-पल मिलना, पल-पल विछुडना दुनिया है दु.ख की नदियाँ।
दु ख तो यहा पल-पल मे मिलेगा, पर सुख की रहती कमियाँ ॥
हँसते चेहरे कम ही मिलेगे,
लाखो आमू की लडियाँ .

ए मानव तू भूल न जाना, दुनियाँ एक वसेरा है।
जाना पडेगा तुझको आगे, ज्योही हुआ सवेरा है ॥
प्रेम की गगा वहा जाना रे,
'कुमुद' सफल हो जीवनियाँ .



तर्ज लौट के आजा मेरे .

आ लौट के आजा मेरे श्याम,
तुझे तेरा धाम बुलाता है।
यहा विगड गया रे सब काम,
तुझे तेरा धाम बुलाता है ॥

चलती हैं छुरियां, खू की ये नदियाँ, बहती है अब तो आजा ।
कटती है गैया, आर्यो की मैया, कहती है कष्ट मिटाजा ॥
नही रहा रे धर्म का नाम.

दूध न मिलता, दही न मिलता, मक्खन का होगया टोटा ।
छाछ बिना कई बच्चे बिलखते, आया समय यह खोटा ॥
घी नकली बिकता आम

आजा - मुरारी बंशी तुम्हारी, जग को पुनः तू सुना जा ।
दूध दही की अमृत नदियाँ, पुन यहाँ पे बहा जा ॥
कहे "कुमुद" सुनो घनश्याम.

१८ | चेतन सो रहा है

तर्ज : मिलो न तुम तो जी घबराए...

अमृत जैसा समय ये जाए, जाए तो फिर ना आए,
कि चेतन सो रहा है,
जीवन खो रहा है...
श्वास-श्वास को सफल बना ले, जीवन ज्योति जगाले,
चेतन सो रहा है..
ऐ मेरे प्राणी चलाचल की दुनियाँ मे मोह क्यों ?
सत्‌गुरु यह सन्देश सुनाए, तेरी नीद उड़ाए।
कि चेतन सो रहा है .
कलियो पे भँवरे कितने दिनों तक फूल रे,
फूल मिलेगा धूल, फूल क्यों पापो मे मशगूल।
कि चेतन सो रहा है...
ओस की बूँद-सा जीवन ये तेरा जान ले,
सूर्य किरण से यह ढल जाये, इस पर क्यो इतराए।
कि चेतन सो रहा है ..
तन, धन यौवन से सेवा का सुन्दर लाभ ले,
पग-पग यश के फूल खिलाए, वह ही लाभ उठाए।
कि चेतन सो रहा है...
आत्म-रमण का विषयों को विषवत् त्याग दे,
'कुमुद' तो तुम को साफ सुनाए, भव-भव कष्ट मिटाए।
कि चेतन सो रहा है ..

न ऐंठो धनवान | १९

तर्ज : ये दो दीवाने दिल के...

चेतो दीवाने धन के, न एंठो वन ठन के।
न ऐंठो न ऐंठो, न ऐंठो धनवान...

धन तो मकडी का जाला, क्यो तू फसाया।
फंस-फस के जीवन का सव, सार गवाया॥
देखे कई पुतले धन के, मोहताज थे कफन के...

धन जो पाया है तुमने सार निकालो।
दीन दुखी के उजड़े जीवन बसा लो॥
डिब्बे जो तेरे धन के, ना चलेंगे साथी बन के .

फूलों को देखो अपनी, सौरभ लुटाते।
वृक्षो को देखो सबको, फल हैं खिलाते॥
कुदरत के साथी बनके, दिखाओ कुछ करके...

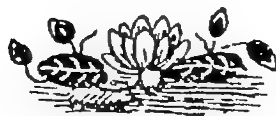
आज जमाना वदला, बदली हैं बाते।
सपनों की दुनिया छोडो, बीत गई राते॥
'कुमुद' दानी वन के, कमाओ लाभ पुन के ..



२० | जग उठ रे ?

तर्ज : उड़ उड़ रे उड़ उड रे

जग उठ रे जग उठ रे, जग उठ रे म्हारा चतुर पामणां
अब थारी गाडी हकवा मे ..
पल-पल मे थारी उमर जावे, मौत पांगथी आवे जिवडा. .
मोह नीद रे वश मे सूग्यो, भूल आपणो पथ जिवड़ा...
वचपन खेलन माही गवायो, यौवन मे मद छायो जिवड़ा...
पर की निन्दा कर-कर आपणा, घर मे कचरो लायो जिवडा .
मुनियाँ रो उपदेश न मान्यो, धर्म-स्थान नही आयो जिवडा .
वीती सो तो वीत गई रे, अबे थने चेतायो जिवडा .
पाप करम सब भरम छोड़कर, धर्म सू नेह लगा जिवड़ा
प्रभु सुमिरण सब सकट नाशी, 'कुमुद' सदा सुखदायी जिवडा..



लुट गये आके | २१

तर्ज . छुप गये सारे नजारे

लुट गये आके, लुभाके, होए क्या बात हो गई ?
तेरे जीवन की तेरे हाथो घात हो गई...

मिल गये जैसे से तैसे, होए क्या बात हो गई ?
तेरे जीवन की तेरे हाथों घात हो गई....
धन का खजाना कि रात-दिन पाना, कि पापो का ताना बनाना।
तू तो पापो मे ही तो दीवाना है।
तू तो माया मे सब को भुलाना है।
अब दु:ख होए, कि रोए, होए क्या बात हो गई,
तूं ने खोया उजाला, गहरी रात हो गई..
जीवन की प्याली, कि हो रही खाली, कि यौवन की लाली, निराली।
तेरे हाथो ही बुझे ये दिवाली है,
तेरी किस्मत तो तुझ से ही काली है।
तुझ को जगाए, बताए, होए क्या बात हो गई,
तेने जीती थी बाजी, फिर से मात हो गई...
अब राह आजा कि जिन्दगी बनाजा, कि प्रेम का बाजा, बजाजा।
तेरे हाथो मे अवसर ये ताजा है,
प्यारे बनजा तू दु खियो का राजा है।
दु खड़ा मिटाओ, कि आओ, होए क्या बात हो गई,
'कुमुद' सारी दुनिया ही तेरे साथ हो गई...

२२ | भारत रो भाग जगायो

तर्ज : खम्मा, खम्मा खम्मा रे कुंवर .

खम्मा खम्मा खम्मा म्हाणां मोटा मोटा पुरुषा ने,
भारत रो भाग जगायो जिओ...
काम पण कीना म्हाने शिक्षा पण दी दी,
सूतोडा ने आय जगाया जिओ...

ऋषभदेव भगवान मनाऊँ, आदिनाथ अवतरिया जिओ।
नीति धर्म री वातां वताई ने, आर्य पणो सिखलायो जिओ...

अचला रा नन्द शान्तिनाथ अवतारी,
जो मिरगी मार निवार्यो जिओ।
सुमरण करतां सव दु ख जावे, भविजन हिवेड़े धार्यो जिओ..

चिन्तामणि प्रभु पार्श्वनाथ ने, झुक-झुक शीष झुकावा जिओ।
जलता नागण नाग वचायो, प्रेम रा पुष्प चढ़ावा जिओ...

पशुओ पे करुणा कीदी नेमीनाथजी, वे राजुल रा प्यारा जिओ।
गिरनार जाई प्रभु सजम लिनो, सबरा हार हियारा जिओ..

शासन रा धणी महावीर मन भाया,
त्रिशला रा नन्द कहलाया जिओ।
पशुओ रा यज्ञ मेट दीदा वड़ भागी,
अहिंसा रो विगुल वजायो जिओ...

मर्यादा राखी श्रीराम रघुवशी, धर्म रो झण्डो फहरायो जिओ।
करोड़ांइ लोग ज्यारी माला फेरे, परमातम पद पायो जिओ...
मथुरा मे जनम्या गौकुल मे खेल्या,
जग वल्लभ गिरधारी जिओ।
नीति धर्म री रक्षा कीधी, जावा म्हा वलिहारी जिओ...
करुणा रा सागर बुद्ध जनम्या भारत मे,
करुणा रो पाठ पढायो जिओ।
वाल पणां सु दया दिल धारी, मरतो हस वचायो जिओ ..
घणां महापुरुष हुआ आपणा इ देश मे, वीर धीर गुणधारी जिओ।
वीतरागी पुरुपा रा चरण कमल मे,
जावे, 'कुमुद' वलिहारी जिओ .



२३ | समाज का कलंक : दहेज

तर्ज · बाजरा री पाणत...

टावरा री शाद्यां रुक जा, पड़जा आंटो।
गेरो घुसग्यो रे समाज मे दहेज रो कांटो..

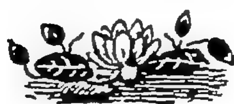
लाखा इ उजडग्या थांरा जात रा भाई।
रोणां पड़ग्या रे जमारा मे बतावा कांई...

बेटी रो जनमणो अभिशाप बणग्यो।
बेटी जनमताइ बापूसा रो मूडो उतरग्यो..

दहेज री चिन्ता सू दिन रात गलग्या।
ज्यू त्यू काड़ी बेटी अबे नरा ताल बणग्या...

सोचो समझो भाया छोड़ो रीतड़ी खोटी।
नहि तो कर देला बरबाद या है भूतड़ी मोटी...

गरीबां री दशा रो विचार लावज्यो।
केवे "कुमुद" दहेज जोवा मती जावज्यो...



तर्ज आओ वच्चो तुम्हे .

देखो नेता लोगो देखो हालत हिन्दुस्तान की।
कष्टो की ज्वाला मे जलती, जिन्दगी इन्सान की...
आज देश मे लाखो भूखे सोकर रात विताते हैं।
लाखों को लज्जा ढकने को, नही वस्त्र मिल पाते है ॥
कई गरीवी से तग आकर, आत्म हत्या कर जाते हैं।
ठिठुर-ठिठुर कर सर्दी मे, कई वच्चे प्राण गवाते हैं।
कौन गरीवो को पूछे यहाँ, पूछ वडी धनवान की .
ओ वगलो मे रहने वालो ? गावो मे आ जाओजी।
मोटर से नही, पैदल चलकर, घर-घर अलख जगाओजी।
गाव-गाव मे ठहर-ठहर कर, उन मे घुलमिल जाओजी ॥
नेता वनकर नही, आदमी वनकर वात चलाओजी।
तभी तुम्हे मालूम होगा, क्या हालत आज किसान की ..
याद रक्खो तुम्हे चुना है, अपने कष्ट मिटाने को।
याद रक्खो तुम्हे चुना है, गाव को स्वर्ग वनाने को ॥
नही भेजा है जनता ने बगलो मे मौज उडाने को।
भ्रष्टाचार चलाने को, (या) अपने घर वनाने को ॥
"कुमुद" सेवा करो तिरादो, नय्या हिन्दुस्तान की.

—०✩०—

राज में अन्याय चाले | २५

तर्ज : फागण की...

राज में अन्याय चाले, पापी मोजां माणे हो।
चोड़े धाड़े रिश्वत खावे, शक न आणे हो,
साचा रोवे रे, हाँ रे साँचा रोवे रे, ये जुल्म खोर तो सुख सू सोवे रे....

भर्या वजारां लूट मचाई, सेठां पेठ गवाई रे,
धान वेचता, धड़्या उड़ावे, लाज न आई रे,
हवेल्यां वणवा दो, हाँ रे हवेल्यां, वणवा दो,
सेठाणी ने सोना सूँ लदवादो...

नेताजी कुर्सीरा रसिया, नोट वोट का गरजी हो,
रैयत भूखी पण वगला मे हाले खुरपी हो,
वोतल उड़वा दो, हाँ रे वोतल उड़वा दो, वेती गंगा मे हाथ धोवा दो..

साधे साचो जोग जगत मे, सांचा जोगी थोड़ा रे,
घणा खरा है रागी भोगी, ये उज्जड़ घोड़ा रे,
भेंट चढवा दो, हाँ रे भेंट चढवा दो, ये माल मसाला रोज छणवा दो...

कठे आज वे मानवी, जो देश धरम पे मरतारे,
गौरव को झण्डो तो जग मे ऊँचो रखतारे,
धन-धन पुरखा ने, हाँ रे धन-धन पुरखा ने,
भारत मातारा साँचा वेटा ने...

आज धर्म सूं चिड़ता जावे, देश बतावे भूडो रे,
आर्य धर्म रो गौरव गाता, लाजे मूड़ो रे,
धिक-धिक देवा रे, हाँ रे धिक-धिक देवा रे,
या कशा ने कई ज्यादा केवांरे ..

सीता, तारा, दमयन्ति पदमनियाँ आगे हूंगी रे,
फैशन पाछे पागल ये, तितलियाँ रेगी रे,
गौरव जावे है, हाँ रे गौरव जावे है, भारत नारी मान घटावे है. .

जठे दूध री नदिया वेती, आज खून री नदियाँ रे,
मछली अडा माँस बिके है, गलियाँ गलियाँ रे,
दारू सूगो रे, हाँ रे दारू सूगो रे, यो नीति धर्म हुओ मूगो रे....

धीगा मस्ती, लट्ठा बाजी, आपा-धापी भारी रे,
भगवान भारत देश की है, दशा करारी रे,
सज्जन दु.ख पावे, हाँ रे सज्जन दु.ख पावे,
'कुमुद' तो थाने साफ सुणावे रे ..



२६ | मुनि स्थूलिभद्र और कोशा

तर्ज : मेरी छोटी-सी है नाव तोरे...

कोशा— आओ मेरे शिर मौड़, मेरे कलेजे की कोर,
आज हर्ष हिलौर, स्वागत करु दिल खोल के...

स्थूलिभद्र— तजो मोह के विचार, कर आतम उद्धार
तेरा बेड़ा होवे पार, जीवन मिलाओ क्यो धूल मे...

कोशा— प्रीत पहले की क्यो छिटकाई।
क्यो यह निःरसता अपनायी॥
कहो मेरे प्यारे नाथ, जोडू तुम्हे दोनो हाथ
श्री चरणो मे माथ, स्वागत करू दिल खोल के...

स्थूलिभद्र— कोशा, पहले था मैं अज्ञानी।
नही जीवन की कीमत जानी॥
पड़ विषय विकार, खोया जीवन का सार
खोई घड़िया वेकार, जीवन मिलाओ क्यों धूल मे...

कोशा— नाथ फूल सी देह तुम्हारी।
क्यों यह तप की चले दुधारी॥
क्यो यह लिया दुःख मोल, त्याग सुख अनमोल
जरा देखो आखे खोल, स्वागत करू दिल खोल के...

स्थूलिभद्र— कोशा आत्मा का नही कोई साथी।
भव - सागर मे यह दु.ख पाती॥
सेवे विपय विकार, बढे कर्मो का भार।
पड़े नर्को में मार, जीवन मिलाओ क्यो धूल मे. .

कोशा—   स्वामी भूले क्यो वे रग रलिया।
खिल जाती थी दिल की कलिया ॥
छोड़ो-छोड़ो यह वैराग, स्वामी मुझ को न त्याग।
मेरी चरणों मे लाग-स्वागत करूँ दिल खोल के . . .

स्थूलिभद्र—   कोशा मोह का चश्मा हटाओ।
तप संयम से प्रीति लगाओ ॥
मिले शान्ति अपार, आप अमृत की धार,
अब जन्म सुधार, जीवन मिलाओ क्यो धूल मे . .

कोशा—   स्वामी मुश्किल है सयम पलना।
जैसे खाण्डे की धार पर चलना ॥
तजो यह मुनि वेश, देखो आनन्द विशेष,
मेटो परीषह क्लेष, स्वागत करूँ दिल खोल के . .

स्थूलिभद्र—   भोग क्षणभर है आनन्ददायी।
फिर घोर दुःखो की खाई ॥
होता फिर पश्चात्ताप, पल्ले पडता है पाप,
होता उससे सताप, जीवन मिलाओ क्यो धूल मे .

कोशा—   स्वामी सत्य है आपका कहना।
मुझे पहनाया धर्म का गहना ॥
पाप बुद्धि को निवार, किया भारी उपकार,
ठहरो यहाँ माह चार, स्वागत करू दिल खोल के . . .

कवि—   कोशा बारह व्रतो को धारे।
भव-सागर से हुई है किनारे ॥
स्थूलिभद्र मुनिराज, तारण तिरण जहाज,
'कुमुद मुनि' के शिरताज,
जीवन लगाया धर्म-ध्यान मे . .



२७ | ओ बंगले वाले !

तर्ज . दिल लूटने वाले...

ओ बगले वाले धनवानो, कंगालों का दु ख पहचानो।
इनकी आहो मे आग जले, इनका दु·ख अपना दु·ख मानो. .
ये वच्चे छाछ बिना रोए, तुम रोज उडाओ गुलछर्रे।
ये टूटी टपरी मे रहते तुम रखते अलग-अलग कमरे ॥
इनकी नारी बिन साडी फिरे, तुम रेशम के पर्दे तानो. .

ये रोगी औषधि बिन मरते, तेरे बिस्कुट कुल्फी खाते है।
ये बच्चे अनपढ ही रहते नही, फीस के पैसे पाते है ॥
तुम पिक्चर और पेपर के हित पैसे को पानी ज्यो जानो ..

ये सर्दी मे ठिठुरे बच्चे, तुम काश्मीरी कम्बल लाते।
ये रात दिवस मेहनत करते, फिर भी नही पूरा अन्न पाते ॥
तुम कुर्सी तकियो पर बैठे, लाखो पर अपना हक मानो...

ये अपनी पीडा कहते है, गहरी निश्वासें भर करके।
यह भेद क्रान्ति को लाएगा, हम कहते तुम्हे जगा करके ॥
यदि इससे बचना हो तो तुम, इनको भी अपना अग मानो...

ये चाँदी के जहरीले फ़न, कही डस नही ले इस जीवन को।
जीवन रक्षक जिसको मानो, कही लूट नही ले जीवन धन को ॥
कुछ दान करो दु ख दूर हरो, यह बात 'कुमुद' की तुम मानो...



भाव बिना कल्याण नहीं | २८

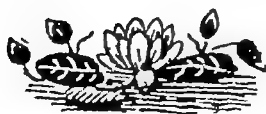
तर्ज : प्यार करो ऋतु प्यार की. .

भाव बिना कल्याण नही है, भाव बिना सूनी करणी।
भाव की नाव चढे जो प्राणी, पार हो जाए वैतरणी...

सर्वज्ञो के चरण-कमल पाकर भी, कई नही तिर पाए।
सहज समागम सद्गुरुवाणी, सुनकर कई सिद्धि पाए ॥
शुद्ध भावना सहजवृत्ति है, पाप ताप भव भ्रम हरणी...

उडद वाकुले तुच्छवस्तु पर, चन्दना के थे भाव वडे।
पतितोद्धारक वीर प्रभु रहे, वड़े प्रेम से द्वार खड़े ॥
उडद वाकुले ग्रहण किये थे, चन्दना बैठी भव तरणी..

भावो से शूली सिहासन, नाग वने फूल मालाएं।
भरत ज्ञान पाए भावो से, मरुदेवी मुक्ति जाए ॥
'कुमुद' शुद्ध भावो की धारा, मुक्ति महल की निस्सरणी



२९ | फँस गयो भंवरा !

तर्ज : लोभीड़ी तो जाणे...

फुलड़ा री माया मे फस गयो भंवरा !
भूल गयो ठाण भटक गयो भवरा !
रग ने सुगन्ध धूल मिल जासी भवरा..

दूव पे अटक्यो ओस रो पाणी।
झिल-मिल सागे मोती से दाणी।
लपक्यो कोई साचो मोतीडो जाणी।
हाथ मे आयो वो तो पाणी रो पाणी..

वादल रो पच रग घनुष तणायो।
एक-पखेरू देख लुभायो।
उड़-उड थाक्यो पर कछु नही पायो।
खाली उड्यो पाछो खाली ही आयो...

धन ने जोवन फूल सेमर केरो।
वीजुरी चमक डको काड पतियारो।
उठ जासी पल मे कजर वालो डेरो।
'कुमुद' प्रभुरा गुण गान उगेरो..

०—✫—०

प्रभो ! तुम पार लगाना रे | ३०

तर्ज · ढोला ढोल मजीरा...

जय-जय त्रिशलानन्द सुहाना रे... ।
मैं चरणो का दास प्रभो तुम पार लगाना रे ।
वीतराग सद्गुण के सागर, शासनपति भगवान ।
अधमोद्धारक देव दयानिधि पाये केवलज्ञान ।।
अन्तिम तीर्थंकर कहलाना रे...

कुण्डलपुर के राज्य ठाठ को तुमने ठोकर मारी ।
पत्नी यशोदा छोड चले तुम, बन करके ब्रह्मचारी ।।
वन मे तपस्या का व्रत ठाना रे..

पाकर के कल्याण मार्ग को, सबको बोध दिया था ।
अर्जुनमाली सुदर्शन को, भव से पार किया था ।।
तारा चण्डू नाग दीवाना रे.

अन्तर्यामी करुणासागर, मोक्षपुरी के वासी ।
इस सेवक के नाथ तुम्ही हो, अविकारी अविनाशी ।।
मेरी विनति पर चित्त लाना रे...

मेरे पापी मन मन्दिर मे, तुमको प्रभु बिठलाऊँ ।
तन मन श्रद्धा भेट चढाकर, गीत प्रीत के गाऊँ ।।
प्यारे इससे खुश हो जाना रे..

ज्ञान ज्योति मुझ को भी देना, मैं भी आनन्द पाऊँ ।
जीवन को जगमग चमका कर पाखण्ड पाप हटाऊँ ।।
गाये 'कुमुद' मनोहर गाना रे...



गीतों की मधुर बहार

श्री मगन मुनि जी 'रसिक'

श्री मगन मुनि जी 'रसिक' : एक परिचय

कोमल-शिशु-वत निर्मल मानस,
वाणी जिन की अति प्यारी।
त्याग और वैराग्य भावना,
लख हर्षित जनता सारी॥

पूज्य प्रवर्तक अम्वालाल जी,
के हैं शिष्य गुणी ज्ञानी।
कल्याणी श्री जिनवाणी पर,
ध्यान - निरत रहते ध्यानी॥

जन-भाषा के माध्यम से ये,
करते रहते धर्म प्रचार।
स्थान - स्थान पर सगीतों से,
ले आते हैं नई वहार॥

ज्ञान - ध्यान मे मग्न - अहर्निश,
काव्य - रसिक भी हैं भारी।
रचना के पद - पद मे रस की,
भाव - भंगिमा है न्यारी॥



मंगलकारी हो ! | १

तर्ज : दूर कोई गाए, धुनी ये...

महामंत्र नवकार, जपो सभी नर नार।
मंगलकारी हो, नव-पद भारी हो...

अरिहत, सिद्ध देव, आचरज करो सेव।
सघ अवतारी हो, नव-पद भारी हो...

उपाध्याय ज्ञानदाता, मुनियों की गुण-गाथा।
महाव्रतधारी हो, नव-पद भारी हो...

ज्ञान ने दर्शन सार, चारितर तप धार।
जय-जयकारी हो, नव-पद भारी हो...

जपा श्रीपाल राय, दुख टला पलमाय।
आतमा ने तारी हो, नव-पद भारी हो ...

चवदा पूरव सार, जिनवाणी उर धार।
ज्ञान रा भण्डारी हो, नव-पद भारी हो..

माला फेरो दिन-रात, 'रसिक मुनि' जोडो हाथ।
बनो सुखकारी हो, नव-पद भारी हो....



२ | त्रिशला जी रा लाल

तर्ज : बाजरा री पाणत..

त्रिशला जी रा लाल घणा व्हाला लागे।
'क' बोलो-बोलो रे महावीर भायाँ भाग जागे..

कुण्डलपुरी मे घणो आनन्द छायो।
'क' जनम्या-जनम्या रे महावीर भलो जोग पायो...

काली रे घटा मे ज्यूँ वो चाँद चमके।
'क' आया भारत मे महावीर ज्याँरी सूरत चमके. .

सिद्धारथ राजा मन मे खुशियाँ लावे।
'क' देखे-देखे रे लाला रो मुखडो वारी जावे...

छप्पन कुमारी सुण ने दौड़ी आवे।
'क' नाचे कूदे रे महलाँ मे घूम-घूम गीत गावे...

इन्दर इन्द्राण्या मिलने मोछव कीनो।
'क' लेग्या-लेग्या रे मेरू पे पुरो जश लीनो....

रतना रा पालणिया मे, महावीर झूले।
'क' सखियाँ हालरियो सुणावे रे 'रसिक' फूले...



तर्ज · बाजरा री पाणत करता....

आओ ए सखी री धीमी धीमी चालो।
'क' जनम्यो जनम्यो रे गोकुल मे कानो वशी वालो .

नन्द ने जशोदा घर, वाजा वाजे।
'क' देव नाचे रे गगन मे इन्दर गाजे

साँवरी सूरत घणी ह्वाली लागे।
'क' भाग जागो ए जशोदा थारो पूत सागे...

पालणियो बांधो ए झट झूमका वालो।
'क' जी मे खेले रे झूले रे प्यारो नन्द लालो. .

खेलावाँ चालावाँ सखि हिलमिल ने।
'क' गीत गावाएँ 'रसिक' आपा मिलझुल ने....

अष्टमी आई ने लारे खुशी लाई।
'क' मन वसियो कन्हैयो आयो जग माही...



४ | वीर जयन्ती

तर्ज : ढोला ढोल मजीरा...

भोला भूल मती ना जाज्ये रे,
वीर जयन्ती आज मनावाँ, वेगो आज्ये रे ..
कुण्डलपुर मे जन्म लियो प्रभु, सिद्धारथ के लाल।
रानी त्रिशला मात सलोनी, वरत्या मगल माल ।।
भोला भूल मती ना . . .
चेत सुदी तेरस को जनम्या, चौबीसवां अवतार।
सुर, नर सब ही हर्ष मनाया, निरख, निरख दीदार।।
भोला भूल मती ना . .
झूठ, कपट, पाखण्ड, अनीति फैली देश मझार।
हिसा ने साम्राज्य जमाया, छाया घोर अधार।।
भोला भूल मती ना . . .
सत्य, अहिसा पाठ पढाने, जन्म लियो महावीर।
हिसा, अत्याचार मिटाया, हरि भक्तन की भीर।।
भोला भूल मती ना ..
छुआछूत और भेदभाव का, सारा भ्रम मिटाया।
भूले भटके हुए राही को, सन्मारग वतलाया।।
भोला भूल मती ना . .
आओ, आओ प्यारे मित्रो, जय से गगन गुंजाओ।
'रसिक' जयन्ती आज मनाओ, मगल गीत सुनाओ।।
भोला भूल मती ना ..

तर्ज · सावन का महीना . . .

मानव तन मनवा, मिले ना कही और।
सोच समझ ले अरे सयाना, कर ले दिल मे गौर . . .
पहले जनम मे पुण्य कमाया।
इसीलिये मनवा तू जग मे आया॥
रात गई अन्धियारी, अब होने आई भोर . . .
हीरा जनम है इसे मत खोना।
नही तो पड़ेगा फिर तुझे रोना॥
आई मगल वेला, पाए ना ऐसी ठौर . . .
घडिया गुजरती जा रही तेरी।
बज रही सिर पर काल की भेरी॥
जब आयेगा परवाना, तब नही चलेगा जोर . . .
मोह के भवर मे नैया है डोले।
बिजली झबू के अरे मोती पोले॥
तू गीत प्रभु का गाले, काहे को मचावे शोर . . .
पाया है कुछ तो हाथो से दे ले।
'रसिक' भलाई इस दुनिया मे ले ले॥
हर दिल मे एक अनोखी, उठ जाए आज हिलोर . . .



६ | प्रेम के पवन में

तर्ज · जरा सामने तो आओ...

जरा प्रेम के पवन मे चलिये,
दुनियां मे आने का यही सार है।
क्यो जीवन बिताओ बिन प्रेम का,
मेरे दिल की यही पुकार है .

घन के घमण्ड मे कभी मत फूलो, पास कभी नही रह सकता।
चंचल तितली समझो इसको, कोई काम नही आ सकता॥
तुम सोचो समझो यह विचार है, मेघ विजली का ज्यूँ झलकार है ..

निर्धन को कोई नही पूछे, अन्न मिला के नही मिला।
पूजी वाला अपने भवन मे, सोया पड़ा है दीपक जला॥
भूख से विचारा वेकार है, दर-दर का भिखारी बिन प्यार है ...

सुनकर आहे प्रेम से उनकी, तन, मन, धन से सुखी करो।
प्रेम विना है जीवन अलूना, सब के दिलो मे प्रेम भरो॥
ये 'रसिक' जीवन दिन चार है, फिर जाना आखिर उस पार है ..



अमोलक आठम | ७

तर्ज : तेजा की, लागो, लागो जेठ .

आई आई अमोलक आठम आज भारी रे।
कन्हैया जनम्यो रे आधी रात मे ..
फूली फूली खुशियाँ मे, मात जशोदा रे।
मुखडो तो जोवेरे, प्यारा लाल रो
लागे लागे सांवरी सूरत, मन मोहन रे।
सूरजडो लजावे निरखी लाल ने
माडे माडे चान्दा सूरज, माता जशोदा रे।
काजल तो घाले रे, नेणा माँयने .
लावे लावे चकरी भवरा, लाला ने रमावेरे।
झाझरिया पेरावे प्यारा पाँव मे . . .
छोटी छोटी आगल्या ने, पकडे नन्द जशोदा रे।
नाच तो नचावे घर रे आगणे .
पावे पावे दूध माता, पालणे पोढावेरे।
हीन्दो तो देवेरे, गावे हाल रो ..
मीठी मीठी वोली बोले, लाला ने बुलावे रे।
आवे रे गिरधारी, दोड्यो गोद मे . . .
आवो आवो सखियां म्हारी, लाड लडावो ए।
माथा पे मुकट सोवे मोरियो ..
गावो गावो गीत 'रसिक' बाजा वाजे रे।
बधायाँ बाटो ए गोकुल माय ने . .

८ | तपस्या कर लीजो

तर्ज : बाजरा री पाणत ..

मुगतपुरी मे जाणो वे तो, तपस्या करली जो ।
'क' म्हारो केणो म्हानो भाई बहिना, आज सुण लीजो ..

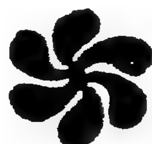
खाता खाता उमर थाणी, बीत गी सारी ।
'क' नही धापणो आयो रे, केऊँ इण वारी .

तपस्या करता जीवडलो, मुगत्या मे जावे ।
'क' साची केऊं ओ साथीडा घणो सुख पावे...

काम क्रोध सु होवे मेली, भोली आतमा ।
'क' पाछी तपस्या रुपी नीर मे, था धो लो आतमा. .

लाडू, जलेबी, गुलाबजामुन, खादा मोकला ।
'क' खादा भुज्या मरमरी, सीयाला मे दाल ढोकला . ,

घणी तरेरी चीजा जग मे, मन मे जाण लो ।
'क' लेवो 'रसिक' रसना जीत, म्हारी केण मान लो . .



तर्ज : सावन का महीना

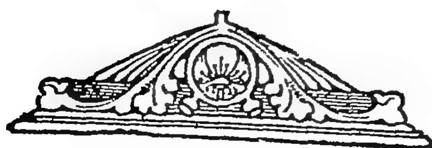
गुरुवर की महिमा, छाई है चारो ओर।
भवरा रे झूमे कलियाँ पर ज्यो जनता आवे दौड .

नर नारी गाते हैं गौरव तुम्हारा।
तेज चमकता है जैसे सितारा॥
जनता के प्राण सहारे, हो शासन मे सिर मौर .

आगम के ज्ञाता गहरा है चिन्तन।
शैली निराली सुनते हैं सब जन॥
गरजन सुन वादल की, सावन मे नाचे मौर

सन्मति मारग आप दिखाओ।
अवगुण जीवन को दूर भगाओ॥
कदम आपके वढते, हैं मुक्ति नगर की ओर

गुरुदेव मेरा वन्दन स्वीकारो।
नैया भवर मे है पार उतारो॥
'रसिक' पुकारे मेरे हो कालजिया की कोर .



१० | उड़ने म्हूँ लंका जाऊँ

तर्ज : रावण के देश गयो .

उडने म्हूँ लका जाऊँ, पल मे म्हूँ पाछो आऊँ,
सिया ने मुन्दरिया देऊँ, दया भगवान की ..
मस्तक पे हाथ धर दो,
इतनी तो महर कर दो।
उड़ने की शक्ति भरदो, दया भगवान की .
रामजी को दूत वाजूँ,
लका पे जाय गाजूँ।
देरी होवे तो लाजू, दया भगवान की . . .
कहो तो मैं सीता लाऊ,
कहो तो मैं रावण लाऊँ।
कहो तो मैं लका लाऊँ, दया भगवान की . . .
एक छलाँग भर लूँ,
समुन्दर पार कर लूँ।
सीताजी का दर्शन कर लूँ, दया भगवान की ..
प्रभु से मैं सीख लेऊँ,
चरणो मे धोक देऊँ।
'रसिक' सफलता लेऊँ, दया भगवान की .



तर्ज : जरा सामने तो...

महावीर का हुआ निर्वाण है,
दुनियां से पधारे भगवान् हैं।
प्रभु त्रिशला के प्यारे लाडले,
उनको लाखो मेरा प्रणाम है . .

पावापुरी मे चरम चौमासा जिनवर जी ने आन किया।
सकल विश्व के रखवारे प्रभु सबको निर्मल ज्ञान दिया।।
क्रान्तिवान जगत के भान हैं,
सत्य अहिंसा की रखली शान है

गौतम जैसे ज्ञानी गणधर, प्रभु की शरण मे आये थे।
सब की नैया पार लगाई, वर्धमान सुहाये थे।।
भु जगत-पति जग भान है,
दुनियाँ लेती यह निशदिन नाम है . .

देव श्रमण को प्रतिबोधवा, गौतम जी को भेज दिया।
दिवाली की अर्धनिशा मे, मोक्षपुरी मे वास किया।।
निराधार बना था जहान है,
गाए 'रसिक' सदा प्रभु गान है



१२ | तृष्णा री आग

तर्ज : ढोला ढोल मजीरा ..

तृष्णा थारो पार कुण पाया ए।
वडा-वडा नर-वीरा ने, थे धूल मिलाया ए . .

पिता-पुत्र और भाई-भाई मे, थूँ ही वैर बढ़ावे।
दूध-पाणी ज्यू प्रेम होवे, वह पल मे नष्ट करावे . .

धन-धरती रे कारणे रे, रण-संग्राम कराती।
राजा, राणा, रणधीरा ने, बिना मौत मरवाती . .

तृष्णा-रूपी अगन जाल मे, दुनियां जल मर जाय।
दिल सुँ तृष्णा दूर हटावो, जीवन सुखी वन जाय .

मोह-माया रा नाटक में थू, अजव खेल दिखलावे।
छोटा-मोटा सभी भरम ने, पर-भव गोता खावे .

सन्तोषी है सुखी जगत मे, दु.खी जो तृष्णावान्।
छोडो तृष्णा वनो सन्तोषी, 'रसिक' प्रभु फरमान .



प्रभु प्राण रा आधार | १३

तर्ज . म्हाने जयपुरियारो लहरियो

प्रभु प्राण रा आधार, आया-आया म्हारे द्वार।
वोले चन्दनवाला पाछा कूकर फिरग्या ओ म्हारा अन्दाता,
छीजे म्हारी आँतडली . .

मैं हूँ घणी दुख्यारी नाथ, म्हारी कुण सुणेला वात।
म्हा पे करुणा करी ने पाछा, आई ज्यो म्हारा अन्दाता,
छीजे म्हारी आँतडली

म्हारे कणी जनम रा पाप, छुट्या मायडली ने वाप।
आई पराया घरा मे दिनड़ा काटू ओ म्हारा अन्दाता,
छीजे म्हारी आँतडली .

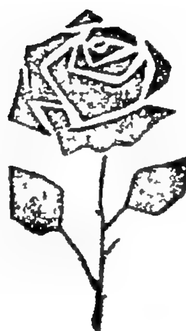
भारी वन्वन मे वन्धाणी, नही मिलियो अन्न और पाणी।
मै तो तीन दिनारी भूखी-प्यासी बैठी ओ म्हारा अन्दाता,
छीजे म्हारी आँतडली...

जिनराज पाछा आवो, मुझे दर्शन दिलावो।
म्हारा आँगणिया मे पगल्या वेगा करज्यो म्हारा अन्दाता,
छीजे म्हारी आँतडली....

घणा जीवां ने थां तार्या, भव-जल सुं उवार्या।
अवे तार वारी म्हारी वारी, आई ओ म्हारा अन्दाता,
छीजे म्हारी आँतड़ली...

भलो जोग मिल्यो है आज, म्हारे आई धरम री जहाज।
म्हने बैठाई ने मुगत्याँ ले चालो, म्हारा अन्दाता,
छीजे म्हारी आँतडली..

प्रभु पाछा क्युं सिधाया, म्हारा नेण-भर आया।
रानी-त्रिशला 'रसिक' जाया सुनलो म्हारा अन्दाता,
छीजे म्हारी आँतड़ली..



अयोध्या सूनी पड़ी | १४

तर्ज : सावन की बहार .

सखि ! राम चले री वनवास, अयोध्या सूनी पडी...
दशरथ नन्दन, रघुकुल चन्दन।
रानी कौशल्या के आनन्द कन्दन ॥
हुए सब ही के चित्त उदास
राजतिलक का उत्सव छाया।
सखियो ने घर-घर मगल गाया ॥
कहे दशरथ जाओ वनवास....
वन मे जाने की करली तैयारी।
राजसिहान को ठोकर मारी ॥
मिला चवदे वर्षों का वनवास
संग मे चले हैं लछमन भैया।
सीता चली है सुनो मोरी सैंया ॥
रानी कैकयी के मन मे उल्लास .
सूने, सूने लगते महल अटारी।
राम विना मेरी सूनी गुल क्यारी ॥
मेरा सूना पड़ा रे रणवास
सुनरी सखि ! मेरा जिया घवराए।
'रसिक' नयन दोनो जल बरसाए ॥
मेरी आज टूटी रे सव आश ..

१५ | आज खमावें

तर्ज थारी मोह माया ने छोड़..

यो सुन्दर अवसर आयो, प्रसन्नता लावें।
हम शुद्ध मन कर के, सब को आज खमावें..

ये पर्व पर्युपण, ठाट-बाट से बीत्या।
कर धर्म-ध्यान सब, मनख जमारो जीत्या॥
यो साचो धर्म तैवार, शास्त्र मे गावे...

है आज सवत्सरी, जग में मंगलकारी।
दिल क्षमा धरो अनमोल, सुनो नर नारी॥
इस क्षमा पर्व की, अविचल महिमा गावे...

नित रक्खो आपस मे प्रेम, यही सिखलावें।
सब वैर भाव तज, समता दिल मे लावे॥
हो निज आतम कल्याण 'रसिक' सुख पावे...



धन की माया | १६

तर्ज : बटाऊ आयो लेवाने...

दुनिया धन मे मुर्झाई दिन रात।
धन्धा मे भोली दौड रही....

भूख-प्यास भी सहन करे रे, ठण्ड सुं भय नही खाय।
थर-थर धूजे कोमल काया, धन कमावा ने जाय...

कौडी-कौड़ी भेली करने, जोड़े लाख दो लाख।
करोडपति री ईच्छा राखे, लेख लिख्या ही फल चाख

पैसा ने परमेश्वर माने, भूल जाय भगवान्।
दीन-हीन कोई आवे द्वार पे, देय सके नही दान...

धर्म-काम करवारी वेला, घर माही छिप जाय।
सतगुरु देवे सीख ज्ञान री, लागे न हिरदारे माय

चेतन जासी एकलो रे, धन नही आवे लार।
क्यू अनरथ कर धन कमावे, डूब मरेला मझधार .

वाह ! वाह ! रे धन थारी माया, सव ने नाच नचाय।
'रसिक' प्रभु रा भजन विना रे, परभव मे दु:ख पाय .



१७ | जमुना किनारे

तर्ज : एक परदेशी मेरा...

जमुना किनारे मोहन आज आ गया।
फोड़ के गगरी सारा माखन खा गया॥

माखन बेचत चली रे गुजरियां।
वडी रे सलोनी वाजे रे घुंघरिया॥
वांसुरी वो हाथ मे ले पास आ गया..

कहे कन्हैया सुनरी गुजरियां।
माखन दे दो ओ मेरी मइयां॥
लिपट झिपट नजदीक आ गया..

मतना लूटो माखन कन्हैया।
मथुरा मे जाकर आऊं रे सावरिया॥
बाँसुरी की तान मे वो रंग छा गया...

मुरली सुना दे मीठी मुरारी।
माखन दे दं, सुनो गिरधारी॥
'रसिक' सूरत वाला श्याम आ गया...



तर्ज : बाजरा री पाणत

आयो रे दिवस मोटो, ध्यान देवज्यो 'क'
निर्मल भावां सुं थां भाया वायां सब ने खमाज्यो...
बारा रे महिना सुं आज, दिन आयो 'क'
प्रेम वढावा रो सन्देशो यो लारे लायो...
राग, द्वेष ने मेट भायां, प्रेम वढाज्यो 'क'
खम्या धार लो हिरदा मे, क्रोध दूर हटाज्यो..
कटुकवचन छोड़, मीठा बोल ज्यो 'क'
बात बोलवा रे पेल्या थे, मनडा मे तोल ज्यो .
वीर प्रभु री वाणी सुणने, ईं पे चाल ज्यो 'क'
पाया मनख जमारो भाग सु, थां मती खोवज्यो ..
छोटा, मोटा प्राणियां पे करुणा लावज्यो 'क'
वैर बाधो मती, प्रेम री यो पाठ पढज्यो..
कपट छोडने खमत खामणा, आज करलो 'क'
थाणो वेवेला कल्याण, सांचो प्रेम भरलो...
थोड़ा दिन रो जीवणो है, आखिर चालणो 'क'
करलो जीवन थाँ 'रसिक' म्हारो यो ही गावणो..



१६ | कर्म बड़े बलवान

तर्ज · वटाऊ आयो लेवाने...

जग मे कर्म वडे वलवान,
नर नारी डरता रेवज्यो..

हस-हस वांधे कर्म चीकणा, नर अज्ञानी होय।
पड़े भुगतणा उदयकाल मे, रोवे छुडावे नी कोय...

जैसा वोवे वीज खेत मे, वैसा ही फल पाय।
वोवे पेड बबूल का रे, आम वो किण विध खाय..

खन्दक मुनिवर खाल सिचाई, अशुभ कर्म अनुसार।
बन्धन पड़ियो काचराँ को, साँचो आगम अधिकार..

मरघट माही ध्यान लगायो, ज्ञानी गजसुखमाल।
सोमल व्राह्मण खीरा उन्दाया, बान्धी है मस्तक माटी पाल...

चेतो-चेतो प्राणी सव ही, अशुभ करम सुं डरज्यो।
नरक टले और नर भव सुधरे, लीला मुगत माही करज्यो...

राखो थे विवेक सदा ही, कर्म बन्ध नही होय।
'रसिक' प्रभु जिनराज कहे रे, ज्ञान-दर्पण मे ले वो जोय...



तर्ज : जय वोलो महावीर ..

सगठन की वीणा वजने दो
मोहे मधुर - मधुर धुन सुनने दो .

अव नया जमाना आया है, सन्देश प्रेम का लाया है।
टूटे हुए दिल को मिलने दो...

वीणा यह तान सुनाती है, सगठन का पाठ पढाती है।
मुर्झी हुई कलियाँ खिलने दो...

अभिनव क्राति ऐसी लाओ, जागे मानस मजिल पाओ।
इतिहास के पन्ने लिखने दो...

सव को एक राह दिखाना है, वाधाएँ दूर हटाना है।
यह विमल भावना भरने दो ..

दुनियाँ यश गाथा गायेगी, इस पथ पे कदम वढ़ायेगी।
आशा के दीपक जलने दो ..

आओ आनन्द के आँगन मे, वध जाओ एक ही वधन मे।
गगा यमुना को मिलने दो .

वीणा के तार मधुर वोले, अन्तर-घट के पट झट खोले।
अव 'रसिक' प्रेम रस झरने दो...



२१ | जम्बूकुमार : संवाद

तर्ज . म्हाने जयपुरियारो लहरियो ..

म्हाणा आलीजा भरतार, म्हाणा हिवड़ा रा हार।
म्हाणी प्रीतड़ली ने मत छिटकाई जो हो रसिया,
हिलमिल संग जाणो—

म्हारी गुणवन्ती नार, आपा लेवां सजम भार।
थाने मुगतियारा मेला मे ले चालूँ ए सज्जनी,
हिलमिल संग जाणो—

म्हाने परणी लाया लार, अबे छोडो निराधार।
म्हाणा हथलेवा रो वचन निभाई जो हो रसिया,
हिलमिल सग जाणो—

चालो चालो म्हारी लार, म्हैं भी ले जावा ने त्यार।
माने एकड़ ली नी छोड़ूँ वचन पालूँ ए सज्जनी,
हिलमिल संग जाणो—

नाजुक जवानी है थाणी, वाला उमर है म्हाणी।
थोडी जवानी ढलवादो, सजम लीजो हो रसिया,
हिलमिल सग जाणो—

प्यारी जवानी दिवानी, नदिया पूर का ज्यू पाणी।
ढलता घड़ी दोय देर नही लागे ए सज्जनी,
हिलमिल संग जाणो—

नही वालूडा खेलाया, नही दूध म्हां पिलाया।
नही सावणियारा झूला ही झुलाया हो रसिया,
हिलमिल सग जाणो—

प्यारी या है माया जाल, जाणो सपना रो ख्याल।
थाने मुगतियारा झूला मे झूलाई देऊं ए सज्जनी,
हिलमिल सग जाणो—

थाने कुणी तो भरमाया, साचा प्रेम ने तोड़ाया।
म्हाणे वादलियां ज्यू नेणा पाणी वरसे ओ रसिया,
हिलमिल संग जाणो—

स्वामी सुधर्मा भरमायो, ज्ञान अनमोल सुणायो।
म्हारा हिवडा मे गहरो रंग छायो ए सज्जनी,
हिलमिल संग जाणो—

म्हाणा सज्जन साजनिया, बोली आठ ही कामणिया।
प्रीति जोडो रे वादिला काया कलपे हो रसिया,
हिलमिल सग जाणो—

वोले जम्बू जी कुमार, सुनलो चन्दावदनी नार।
धन जोवन काया मे काई रीझि ए सज्जनी,
हिल-मिल सग जाणो—

म्हाणा रसिया 'रसिक', म्हाने भली दीधी सीख।
म्हाँ भी सयम लेवाने साथे चाला हो रसिया,
हिलमिल सग जाणो—



२२ | राम-कौशल्या-संवाद

तर्ज : दिल लूटने वाले जादूगर....

राम—माता कौशल्या अरज सुनो, चरणो मे शीश झुकाता हूँ।
मैं पिता-वचन सिर धारण कर, वनवास भुगतने जाता हूँ ..

कौ०—हे राम ! तुम्हारे जाने से, मैं कैसे दिवस विताऊँगी।
आँखो से आँसू वरस रहे, मैं धीरज कैसे लाऊँगी

राम—केकयी ने जो वर मागा है, यह राज भरत जी पायेगा।
ये राम रहेगे वनखण्ड मे, जो चवदे वर्ष वितायेगा ॥
मैं खुशी-खुशी तन, मन में माता, रंज जरा नही लाता हूँ ..

कौ०—कल राज-तिलक होने वाला, सारी नगरी भी पुलकित है।
आनन्द के वाजे वाज रहे, नर-नारी कितने हर्षित हैं ॥
यह क्या वाणी वोलो वेटा, मैं दिल मे धोखा खाऊँगी ...

राम—नही समय सरीखा रहता है, परिवर्तन आता जाता है।
सन्तोप धरो दिल में माता, यह राज ! राम नही चाहता है ॥
अनमोल पिता के वचन मिले, ऐसा अवसर कव पाता हूँ ...

कौ०—जव भरत भूप वन जायेगा, तुम वन-वन भटकोगे लाला।
सव ठाठ यहाँ रह जायेगा, सकट में कलपोगे लाला ॥
कचन-काया मन मोहन है, मैं कहाँ देखने आऊँगी ..

राम—जंगल को अयोध्या समझूंगा झूपी को मानूं महल वड़े ।
भूमि को शय्या-फूलो की, जानूंगा माता समय पड़े ॥
वनचर होवेगी मेरी प्रजा, मैं राजा वनकर जाता हूँ .

कौ०—कहाँ मीठे भोजन खाओगे, कहाँ दूध-मलाई पाओगे ।
भूखे-प्यासे रह जाओगे, तुम फूल ज्यो कुमला जाओगे ॥
मनुहार करेगा कौन तेरी, किस के संग भोजन खाऊँगी . .

राम—जगल मे फल मीठे-मीठे, मैं रुच-रुच भोग लगाऊँगा ।
चिन्ता न करो, चिन्ता न करो, मैं सुख से समय विताऊँगा ॥
आज्ञा पालन मे सव कुछ है, मैं सत्य वात वतलाता हूँ .

कौ०—तुम वन मे जाते हो लाला, सग कौन तुम्हारे आयेगा ।
वहाँ घोर भयानक जगल है, कैसे तू दिल वहलायेगा ॥
क्या विधना ने यह लेख लिखा, मैं क्यो कर मन समझाऊँगी .

राम—संग लछमन भैया आने को, तैयार खडा है आगन मे ।
और जनक दुल्हारी सेवा मे, रहने को आती है वन मे ॥
जो लिखा लेख नही टलने का, सारग धनुष ले जाता हूँ

कौ०—यह मात तुम्हारी कौशल्या, विलखेगी महलो मे लाला ।
कव मिलना होगा तेरे से, झूरेगी महलो मे लाला ॥
रघुकुल के शीतल चन्दा हो, मैं कुशल कामना चाहूँगी .

राम—लो अन्तिम वन्दन मेरा है, अन्न जल होगा तव आऊँगा ।
जननी ! तेरे ही चरणो की, सेवा का लाभ उठाऊँगा ॥
अव 'रसिक' राम । होगा वनवासी, शुभ सन्देशा चाहता हूँ



२३ | आचार्य श्री आनन्द ऋषि जी के प्रति

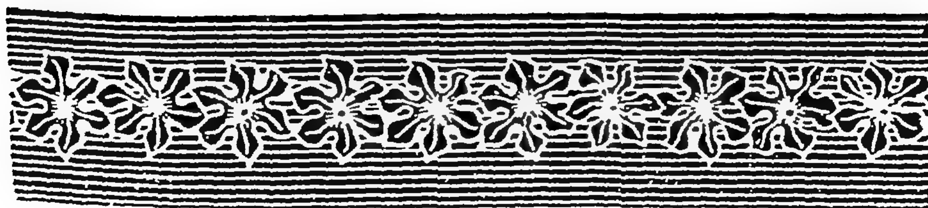
तर्ज · जय वोलो महावीर...

जय आनन्द आनन्द गाये जा।
चरणों में शीश झुकाये जा.
आचार्य देव गुणधारी है।
जन जन को वल्लभकारी है॥
नित मगल दर्शन पाये जा
देवीचन्दजी तात कहाये है।
माता हुलपां के जाये हैं॥
चिचोड़ी नगर सुनाये जा...
जीवन मे कैसी विमलता है।
दिनकर सम तेज चमकता है॥
मुख मण्डल लख हरषाये जा ..
ये श्रमणसघ के नायक हैं।
ये सन्मति पथ के दायक हैं॥
उस पथ पर कदम वढ़ाये जा..
ऋषिवर आनन्द का नाम रटो।
कलिमल भावो से दूर हटो॥
यह गीत 'रसिक' सुनाये जा. .

○

चन्दन की महक

श्री चन्दन मुनि पंजाबी



चन्दन मुनि जी : एक परिचय

विमल - धर्म का जन - जन मे ये,
गगा - स्रोत वहाते हैं।
मानस के कलिमल को हरते,
उत्तम सन्त कहाते हैं॥

प्रतिभाशाली - कविवर जग में
काव्य - छटा दिखलाते हैं।
गागर मे सागर भरने की,
सहज - कल्पना पाते हैं॥

ज्ञानामृत की वरसा द्वारा,
शुष्क - चमन खिल जाते हैं।
भव्य - काव्य को पाकर जन - मन
फूले नही समाते हैं॥

चन्दन एक बावना उत्तम,
अन्य चन्दनो से होता।
कवि - मुनियों मे चन्दन मुनि को,
सुनते चाव सहित श्रोता॥



बनो तुम ज्ञानी जी | १

तर्ज . रेशमी सलवार...

गुण पे हो बलिहार, बनो तुन ज्ञानी जी।
कहती है ललकार श्री जिनवाणी जी .

जब जल और दूध मिला कर, कोई हस के आगे धरता।
वह केवल दूध ही पीकर, झट पेट है अपना भरता॥
तजता पानी जी
जो बालू में हो चीनी, न चीटी देर लगाती।
वह छोड के फीका रेता, बस मीठा ही है खाती॥
बड़ी सयानी जी ..
है देखा छाज सभी ने, हर चीज जो साफ बनाता।
वह सार-सार को रख कर, सब ककड फूस गिराता॥
रीत पुरानी जी ..
जल जलधि का जो खारा, जब बादल है पी जाता।
वह उसको मधुर बना कर, फिर मोती है बरसाता॥
कैसा दानी जी
है कोयल चाहे काली, सुन बोली खुश हो जाते।
विष, विषधर का तज 'चन्दन' बस मणी वहाँ से लाते॥
उत्तम प्राणी जी .



२ | परदेशी से !

तर्ज : इक परदेशी मेरा दिल...

उठ परदेसी ! प्रभात हो गई !
सोते-सोते तुझे सारी रात हो गई...
सोया क्यो तू निन्दिया मे पाव को पसार के।
देख जरा एक वार अखियां उघाड के॥
विदा तेरे साथ की जमात हो गई ...
झूमते है फूल ये जो खिली गुलजार है।
चन्द रोज दुनिया की रौनक-बहार है॥
कहके ये रवाना वरसात हो गई ...
रात को ईशारो मे ही कहा यो सितारो ने।
मिटना है फौरन ही सुन्दर नजारो ने॥
होते ही उजेला सच्ची बात हो गई ...
दूर तू हटा के झूठे मोह-अभिमान को।
जपा कर दिन-रात प्यारे भगवान को॥
'चन्दन' से तेरी मुलाकात हो गई ...



कोई काम कर जा | ३

तर्ज : इक परदेशी मेरा दिल ले गया...

आने वाले ! दुनिया मे नाम करजा।
भूले न जमाना कोई काम करजा ..

वही है भलाई जो भुलाई करके।
कैसी वह भलाई जो सुनाई करके॥
स्वार्थो को सज्जना ! सलाम करजा . .

जमी जड़ जग से हिलाई पाप की।
भक्ति सिखाई भाई - माई - वाप की॥
अपने को 'महावीर', 'राम' करजा .

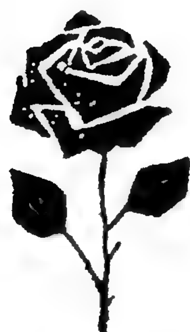
दूर कर खुदी का खयाल दिल से।
वदियों - वुराइयों को निकाल दिल से॥
पर उपकार सुवह - शाम करजा . .

दीन - हीन दुखी जो वेचारे पड़े है।
कर्मों के मारे - वेसहारे पड़े हैं॥
दूर दुख उनका तमाम करजा ..

वात है ये तेरे लिए गहरे गौर की।
अपने ही जैसी जान, जान और की॥
खुशी का खजाना खास - आम करजा .

ऊपर तू चाहे कितना कठोर हो।
करुणा का अन्दर मगर जोर हो॥
अपने को वांवरे ! बादाम करजा .

कपट-कुटिलता न कर कलेश तू,
मोह-द्रोह दिल से विसार दे द्वेष तू।
सारा सनसार सुख-धाम करजा..
शुद्ध शील शान से निभाया सेठ ने,
सूली का सिंहासन बनाया सेठ ने।
चरणो मे उनके प्रणाम करजा...
सन्तों का संग हो, सुपात्र - दान हो,
तप हो या जप हो या ज्ञान-ध्यान हो।
'चन्दन' सभी तू निष्काम करजा



प्यारे भारत में | ४

तर्ज : कोरो काजलियो

होवे धर्म प्रचार प्यारे, भारत मे...

ईर्ष्या करे न कोई भाई, दिल मे सव के हो नरमाई
सरल वने नर-नार, प्यारे...
मदिरा, मास, जुआ और चोरी दूर हो जगसे रिश्वतखोरी
न खेले कोई शिकार, प्यारे ..
मुनिजनो का लेना शरणा, सुन उपदेश अमल कुछ करना
लेना जन्म सुधार, प्यारे...
तज कर निंदा, झूठ, लड़ाई, गले मिलें सब भाई-भाई
वहे प्रेम की धार, प्यारे...
मुख से कोई न देवे गाली, वोली वोले इज्जत वाली
मीठी और रसदार, प्यारे..
महावीर के वने पुजारी, सत्य, अहिसा - धर्म के धारी
मन्त्र जपे नवकार, प्यारे...
धर्म का झण्डा लहरे मारे, प्रेम परस्पर फैले सारे
होवे जय-जयकार, प्यारे. .
'चन्दन' कहे सुनो नर-नारी ! सादा हो पोशाक तुम्हारी
खिले अजव गुलजार, प्यारे...



५ | कोई महावीर हो जाए

तर्ज . कभी सुख है कभी दुख है

अगर मन शुद्ध करने की, कोई तदबीर हो जाए।
कोई नेमी, कोई पार्श्व, कोई महावीर हो जाए .
करे न क्रोध जो क्रान्ति, वसे मन मे सदा शान्ति।
यही शिमला, यही कुल्लु, यही कश्मीर हो जाए
वचे शतरज पासों से, भजे भगवान श्वासो से।
तमाशो और ताशो से, ये दिल दिलगीर हो जाए...
गुणीजन का वनूँ चाकर, रहूँ मैं रोज गम खाकर।
मुझे जो देखले आकर, वही तसवीर हो जाए...
करे न छल-कभी अकड़े, 'सुदर्शन' का जो पथ पकड़े ।
न क्यो फिर टूट कर टुकड़े, सितम-शमशीर हो जाए .
किसी को जो सतायेगा, किसी को जो दुखायेगा।
न हरगिज चैन पायेगा, बुरी तकदीर हो जाए
जगाऊँ आत्मा सोई, जो है अज्ञान मे खोई।
न मुझ से भूलकर कोई, कभी तकसीर हो जाए .
अहं के तोड सब वन्धन, रटे जो 'त्रिशलाजीनन्दन'।
न क्यो दुनिया मे अय 'चन्दन', वही अकसीर हो जाए .



क्षमा का पुजारी | ६

तर्ज : चुप-चुप खड़े हो ..

क्षमा का पुजारी वीर 'गजसुकुमाल' था।
देवकी का लाल था जो, देवकी का लाल था ..
प्रेम भरी वाणी, सुन, 'नेम भगवान' की।
दिल मे अनोखी जोत, जग गई ज्ञान की ॥
संयम ले दुनिया का, काटा मोह-जाल था. .
माता ने आशीर्वाद दिया प्रेम-प्यार से।
वेडा पार कर जाना, वेटा ! ससार से ॥
यही वात वार-वार कह रहा गोपाल था...
मन को वना के दृढ वज्र समान जी।
जा के शमशान मे लगाया झट ध्यान जी ॥
'सोमल' वहाँ पे तव, आया तत्काल था..
देखलो निन्नानवें हजार भव वाद जी।
प्रतिशोध आगया अचानक ही याद जी ॥
वदला चुकाया सिर अगनी को डाल था .
गुस्सा एक राई भी न, लाए मुनि मन मे।
कर गए 'चन्दन' वे, वेडा पार क्षण मे ॥
शान्त स्वभाव कैसा, उनका कमाल था .



७ | जरा विचारो जी !

तर्ज : रेशमी सलवार...

प्यारा भगवन नाम, हमेश चितारो जी !
हीरा जनम अमोल, मुफ्त न हारो जी !...

रंगीन नजारे जग के, जो दिल को बहुत लुभाते।
हैं केवल एक छलावा, फिर नरक-गति दिखलाते ॥
नयन उघाड़ो जी !..

न चीज उठाओ पर की, न भूल करो बेईमानी।
नित सदाचार को पालो, न बोलो कड़वी वाणी ॥
सत्य उचारो जी ! ..

हैं प्यारे प्राण सभी को, सब जीना चाहते प्राणी।
इस दिल मे करुणा भरके, तुम बनो दयालु-दानी ॥
जीव न मारो जी।...

तन इत्र से जिन के तर थे, और मुख मे पान के बीड़े।
इक रोज जो देखा उनकी, इस देह मे पड गए कीड़े ॥
मान निवारो जी !...

एक बार जो पत्ता टूटे, न जुडता फिर दोबारा।
इस जीवन के तईं 'चन्दन' है करता साफ ईशारा ॥
जरा विचारो जी ! .



किसको आता है! | ८

तर्ज यहाँ दिल का लगाना .

यहाँ लेकर जनम जीवन, विताना किस को आता है।
पुजारी सत्य का वनकर, दिखाना किस को आता है . .

कमाने के लिए धन तो, कमाता देखो हर जन है।
मगर ईमानदारी से, कमाना किस को आता है . .

मिटाते गैर की हस्ती, हजारो हमने देखे हैं।
अहिंसा, सत्य पर खुद को, मिटाना किस को आता है . .

अरे! मनके पे मनके तो, गिराते हैं वहुत वन्दे।
महा चचल मगर, मन का, टिकाना किस को आता है . .

हजारो हमने देखे है, मोहव्वत करते मतलव से।
विना मतलव मोहव्वत का, लगाना किस को आता है . .

खिलाने के लिए छत्ती, पदार्थ भी खिला देते।
विदुर वन प्रेम से किन्तु खिलाना किस को आता है . .

गिरी दुख के गिरा कर सव, गरीवो को रुलाते हैं।
मिटा कर कष्ट पर 'चन्दन' हसाना किस को आता है

६ | हिम्मत होगी कि नहीं

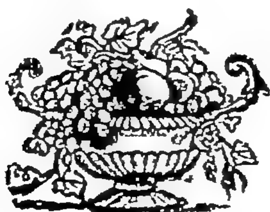
तर्ज : मेरे मन की गंगा

गीत प्रभु के गाने और अपने पन को पाने मे।
वोल मानव ! वोल, हिम्मत होगी कि नही ?..

क्या करता तू मेरा-मेरा, कौन यहाँ पर तेरा है।
मोह माया का यह तो पगले ! एक भयानक घेरा है ॥
झूठी इस दुनिया से नफरत होगी कि नही ?...

काम, कपट, मद, क्रोध, लोभ ये, सारे जानी दुशमन हैं।
तेरे आतम-धन को जो कि हरते रहते निश-दिन हैं ॥
दूर कभी यह गहरी गफलत होगी कि नही ?..

तन, यौवन का नशा हमेशा, नही किसी का रहता है।
मिलता फूल धूल मे आखिर, 'चन्दन' सच यह कहता है ॥
कम काया से तेरी उल्फत, होगी कि नही ?...



अमोलक जन्म पाया है | १०

तर्ज बहारो फूल बरसाओ .

प्रभू के गीत नित गाओ, अमोलक जन्म पाया है।
सुमानव बनके दिखलाओ, अमोलक जन्म पाया है. .
समझते हो सिर्फ अच्छा, हमेशा पीने खाने को।
बने हो किसलिए नास्तिक, भुलाकर जग से जाने को ॥
जरा अब होश मे आओ, अमोलक जन्म पाया है....
कभी परलोक को दिल से, भुलाना है नही अच्छा।
भलाई तज बुराई का, कमाना है नही अच्छा ॥
कपट, छल, लोभ, विसराओ, अमोलक जन्म पाया है ..
स्वर्ग के देव भी जिनकी, सदा सेवा बजाते थे।
कहाँ है चक्रवर्ती वे, धरा को जो कम्पाते थे ॥
न धन-यौवन पे इतराओ, अमोलक जन्म पाया है ..
रहे न कस से जालिम, रहे रावण से न कामी।
मगर इक रह गई उनकी, जगत के बीच बदनामी ॥
समझ कर सबको समझाओ, अमोलक जन्म पाया है...
'मुनि चन्दन' वचन मन से, वदन से व ईशारे से।
कभी भी कष्ट न कोई, किसी को हो तुम्हारे से ॥
सदा आराम पहुँचाओ, अमोलक जन्म पाया है...



११ | तरना होगा कि नहीं ?

तर्ज . मेरे मन की गंगा .

ज्ञान-गुणो की गगा और तप-जप की यमुना मे।
बोल बन्दे ! बोल, तरना होगा कि नही...

"मेरे जैसा कोई भी न, जनमा और जमाने मे"।
रहा मनाता खुशिया निश-दिन, जुल्म-सितम के ढाने मे ॥
यम की महामार से डरना होगा कि नही...

गया भूल भगवान, दया को, दारा-सुत की महफिल मे।
किया दीवाना दौलत ने यो, कभी न सोचा अपने दिल मे ॥
अत समय धन-जन का शरणा होगा कि नही...

धर्म, कर्म को और शर्म को, वेच सर्वथा खाया है।
'चन्दन' कहे नर्क का तुझको, खौफ जरा न आया है ॥
पापो का फल आखिर भरना होगा कि नही...



बातें करते हैं | १२

तर्ज इक रात मे दो ..

अय वीर ! सुनो दुनिया वाले, किस ज्ञान की वाते करते है !
अपना न इन्हे कुछ इल्म अभी, भगवान की वातें करते है !..

मोह, ममता, मद मे, माया मे।
नित रहते छल की छाया मे॥
ये काम-दाम के दीवाने, कल्याण की वातें करते है !..

कुछ सुनते न, कुछ कहते न।
दो भाई भी मिल रहते न॥
वन पूर्व-पश्चिम पर देखो, निर्माण की वाते करते है !...

नही निन्दा-चुगली तजते हैं।
नही नाम प्रभु का भजते हैं॥
सुख-चैन-ऐन के अन्वेषक, तूफान की वाते करते हैं !..

न नर्क कही, न स्वर्ग कही।
है पुण्य - पाप-परलोक नही॥
बस खाओ-पीओ मौज करो, अज्ञान की वातें करते हैं !...

न जीवन मे है शुद्धि कुछ।
न निर्मल ही है वुद्धि कुछ॥
अय 'चन्दन' छोड अहिसा को, अभिमान की वातें करते हैं !...



१५ | महापुरुष पैदा कर

तर्ज : कभी सुख है कभी दुख है ..

अरे ओ देश भारत ! फिर, वही सन्तान पैदा कर।
हुई जो धर्म पर हस-हंस के थी कुर्बान पैदा कर....

लुटाई साल भर दौलत, खजाना खोलकर अपना।
'ऋषभ' जिनराज सा दानी, पुरुष धनवान पैदा कर...

उतारा मांस था तन का, कबूतर के बचाने को।
दयालु 'मेघरथ' जैसा, महाबलवान पैदा कर ..

दया पशुओ की ला मन मे, मुनि बन जो गये वन मे।
यतिवर 'नेम जी' जैसा, श्री भगवान पैदा कर...

जरूरत 'राम' की है फिर, जमाने को बडी भारी।
'सती सीता' 'भरत' 'लछ्मन' बली 'हनुमान' पैदा कर...

चले थे वाद करने पर, झुके आगे सचाई के।
'गुरु गौतम' जी गणधर सा, महाविद्वान पैदा कर...

बनाया देखलो शूली, सिंहासन एक ही पल मे।
'सुदर्शन सेठ' जैसा फिर, गुणी इनसान पैदा कर. .

'प्रदेशी' 'भूप' को जिसने, कराई सगति सच्ची।
चतुर 'चित' जैसा अय 'चन्दन' पुनः प्रधान पैदा कर...



मिले मंगल तुम्हें | १६

तर्ज : आपकी नजरो ने समझा.

यह मिला नर जन्म है कल्यान के काबिल तुम्हें।
एक पल भी चाहिये होना नही गाफिल तुम्हे...

मोह से भी, द्रोह से भी, एकदम मुख मोड कर।
कीजियेगा नेकिया ही, कुल बुराइया छोड कर॥
भूल कर भगवान होगा, चैन न हासिल तुम्हें.

लोक भी, परलोक भी है, स्वर्ग भी है, नर्क है।
जो नही आता नजर कुछ, यह नजर का फर्क है॥
लग रहा क्यो सत्य का जी । स्वर्ण भी पीतल तुम्हे.

डूबने देता नही जो, जीव को मझधार मे।
इक अहिसा धर्म ही है, सार इस ससार में॥
दिल बनाना चाहिये यह, कमल-सा कोमल तुम्हे .

है पढा या अनपढा, या रक है या राव है।
विन विनय के धर्म का, होता न प्रादुर्भाव है॥
अय 'मुनि चन्दन' विनय से, ही मिले मगल तुम्हें ..



१३ | दर्शनार्थियों से!

तर्ज कभी दुःख है कभी सुख है ..

अगर दर्शन को जाते हो, मेरी इक बात सुन जाना।
कि बनकर दर्शनी सच्चे, जगत को आप दिखलाना...

न रहना देखते फिरते, ये गन्दे खेल टाकी के।
कि रखना साथ मे आसन, न रोटी रात को खाना...

नुमायश हो न जेवर की, न फैशनदार सूटो की।
सजे तन पर तो भारत का, वो बस प्राचीन शुभ बाना....

बढ़ाना ज्ञान गुरुओ से, मिटाना मन की शकायें।
मुफ्त मे घूम कर अपना, समय न आप खो आना.

लगा कर मुख पे मुखपत्ति, न बैठे आप दो घड़िया।
बजे जब रात के नौ, मागते हो आके फिर खाना .

अरे ! दर्शन को निकले हो, कमाई कुछ तो कर जाओ।
जो खाली हाथ लौटोगे, पड़ेगा दिल मे पछताना...

नियम स्वाध्याय आदि के, करो दो-चार गुरुओ से।
यही है सार दर्शन का, सुनो 'चन्दन' का ये गाना..

इन से सीखो | १४

तर्ज नदी किनारे बैठ के आवो ..

वीर प्रभु से सीखो प्यारो ! जग मे धर्म फैलाना ।
हिंसक यज्ञ मिटाकर इकदम, भारत स्वर्ग बनाना ..

'गजसुकुमाल मुनि' से सीखो, गुस्से को पी जाना ।
सर पर आग टिकाई सोमल, रंज जरा नही माना...

मेघकुंवर से सीखो भाइयो ! दुःख सह जीव बचाना ।
'धर्मरुचि' से धर्म पे सीखो, हँस-हँस प्राण गवाना..

'नेमनाथ' भगवान से सीखो, करुणा-नदी बहाना ।
जीवदया हित तजकर शादी, जगल किया ठिकाना ..

जम्बूकुंवर यति से सीखो, मिलते सुख ठुकराना ।
बन कर त्यागी निश्चल-सच्चे मुक्ति के सुख पाना .

संजय भूप से सीखो 'चन्दन' पा सगत तर जाना ।
शरण गुरु की लेकर अपना, जीवन सफल बनाना

१७ | ठिकाना भूल गए

तर्ज जब से पिया परदेस गए...

सुख इधर-उधर हैं ढूँढ रहे, हम असल ठिकाना भूल गए।
सुर-लोक गए, परलोक गए, पर मुक्त मे जाना भूल गए...

तन-मन को सतत जलाती है।
जो नर्क-लोक दिखलाती है॥
वह, क्रोध की आग कहाती है, हम उसे बुझाना भूल गए...

उस सच्चे निरअभिमानी ने।
श्री हरिश्चन्द्र नृप दानी ने॥
सब सत्य धर्म पर वारा था, हम वचन निभाना भूल गए..

न याद हमें भगवान रहा।
न याद हमे कल्याण रहा॥
रहा याद पतन, न उत्थान रहा, हम होश मे आना भूल गए

दम-दान-दया उपकार नही।
अनुकम्पा—करुणा—प्यार नही॥
तप, त्याग, त्रपा की सार नही, इनसान कहाना भूल गए..

जो कोई हम से रूठ गया।
दिल—दर्पण जिसका टूट गया॥
वह हम से हमेशा छूट गया, हम उसे मनाना भूल गए..

अय 'चन्दन' कब से सोते हैं।
नर जनम अमोलक खोते हैं॥
न अब भी जाग्रत होते हैं, हम तरना-तराना भूल गए..

ओ लोभी वन्दे | १८

तर्ज नगरी नगरी द्वारे द्वारे

ओ दुनियां के लोभी वन्दे ! होश मे कव तू आयेगा।
जीवन-हीरा कौडी वदले, क्या तू व्यर्थ लुटायेगा ?

छन छन की झनकार मधुर सुन, भूला दीन इमान को।
शादी का ले नाम बेचता, प्यारी तू सन्तान को ॥
मरने के पश्चात् साथ मे, धेला भी न जाएगा...

जनमेगी जव कन्या तेरे, करले जरा विचार तू।
उसकी शादी पर फिर कितने, देगा नकद हजार तू ॥
आयेगी तव याद रे ! नानी, कन्नी तू कतरायेगा...

देखो गीता साफ पुकारे, लोभ नर्क का द्वार है।
फिर भी ठगनी माया से क्यो, तेरा इतना प्यार है ॥
निकलेंगे जव प्राण वदन से, रोयेगा-पछतायेगा..

देख सिकन्दर ने क्या पाया, इतने जुल्म गुजार कर।
अन्त गया सनसार से खाली, दोनो हाथ पसार कर ॥
'चन्दन' वन सन्तोषी सुख तू, भारी जिससे पायेगा....



१९ | मुश्किल न था

तर्ज : किसलिए तोड़ा मेरा दिल....

दीन का दिल क्यो दुखाया, दीन-दिल क्या दिल न था ?
विन दुखाए दीन-दिल क्या, चैन-सुख हासल न था ? .

जिस तरह प्रिय प्राण तुम को, हैं सभी को जगत मे !
हो रहा आसक्त मदिरा, मांस में क्यों रक्त में ॥
भूल कर करना किसी को, भी कभी घायल न था..

ओ वगर ! पत्थर वनाया, किसलिए तूने जिगर ?
छोड कर घर-वार करना, क्या नही तुझ को सफर ?
सपन तक मे भी भुलाना, जुलम का तो फल न था...

दिल, दया, भगवान-भक्ति, तन तपस्या में निरत।
शील, सत, सन्तोष, समता, सरलता, सेवा सतत ॥
तैरना ससार-सागर, फिर अरे ! मुश्किल न था...

है सचाई साफ सुन, 'चन्दन मुनि' की वात मे।
स्वर्ग, मुक्ति को लगाना, पौडियां हैं हाथ में ॥
'नर्क औ' तिर्यञ्च के तो, तू कभी काविल न था..



सत्य सहारा काफी है | २०

तर्ज : दिलदार कमन्दां वाले दा ..

सुख मुक्त पुरी के पाने को, इक सत्य सहारा काफी है।
हो दुनिया मुबारक दुनिया को, हमे प्रीतम प्यारा काफी है...

इन लेकर ताशो-पासो को,
क्यो व्यर्थ गवाए श्वासो को।
तुम देखो खेल-तमाशो को, हमे ज्ञान-नजारा काफी है

न चाहे योगाभ्यास करो,
न चाहे व्रत - उपवास करो।
न चाहे दिल को दास करो, छल-छन्द विसारा काफी है ..

तलवारो, तेज कटारो से,
जो बचना यम की मारो से।
अन्याय, अत्याचारो से, कुल किया किनारा काफी है

न कभी किसी से राड़ ठने,
न पडें चबाने लोह-चने।
जो चाहो अपना विश्व वने, नेह-नजर निहारा काफी है...

क्यों लोक सुधारा चाहते हो,
परलोक सुधारा चाहते हो।
दुख-शोक सुधारा चाहते हो, नर जनम सुधारा काफी है...

क्यो लें न जप के शरने को,
क्यो ले न तप के शरने को।
'मुनि चन्दन' भव से तरने को, यह तत्त्व विचारा काफी है...

२१ | मानव कहाने वाले

तर्ज ओ दूर जाने वाले . .

सुनले घडी की टिक-टिक, घड़िया लगाने वाले !
क्षण हाथ ये न आएँ, हाथों से जाने वाले..
गफलत की नीद सोता, अनमोल सास खोता।
आखिर रहेगा रोता, हीरे लुटाने वाले !..
परलोक भूल करके, नास्तिक वने हुए थे।
इक रोज उड गए वे, गप-शप उडाने वाले..
जो तोडते सितारे, और मोडते थे धारे।
कहा वीर वे करारे, धरती कम्पाने वाले .
लकेश, कंस, कीचक, कौरव महा भयानक।
रहते भला वे कव तक, आफत उठाने वाले..
सतोप - सत्य - सागर, दमितात्मा दिलावर।
हैं देवता से वढकर, नेकी कमाने वाले..
दुनिया मे उनके घर-घर, झण्डे झुले हैं फर-फर।
जो थे दया के ऊपर, हस्ति मिटाने वाले...
'चन्दनमुनि' सुनाता, वीता है वक्त जाता।
क्यों होश मे न आता, मानव कहाने वाले !...



नहीं यह लूट अच्छी है | २२

तर्ज बहारो ! फूल बरसाओ

विवाह वालो ! समझ जाओ, नही यह लूट अच्छी है ।
किसी को लूट मत खाओ, नही यह भूख अच्छी है .
विवाह कैसा रचाते हो, बड़ी झोली फैलाते हो ।
हजारो ही गिनाते हो कमी फिर भी वताते हो ॥
जरा तो दिल मे शरमाओ, नही यह लूट अच्छी है..
कर्म जो तुम कमाओगे, खड़े सन्मुख ही पाओगे ।
अगर कीकर लगाओगे, कभी न सेब खाओगे ॥
जरा तो होश मे आओ, नही यह लूट अच्छी है
तुम्हारे भी कभी लडकी, कहो तो क्या नही होगी ?
अरे ! उस वक्त तुमको भी, मुसीवत भुगतनी होगी ॥
इसे न मन से विसराओ, नही यह लूट अच्छी है..
चला जव काल आयेगा, नही धन साथ जायेगा ।
दया जो दिल वसायेगा, वही सुख-चैन पायेगा ॥
प्रभु के गीत नित गाओ, नही यह लूट अच्छी है ..
कभी भी लोभ-लालच का, नतीजा है नही अच्छा ।
'मुनि चन्दन' सन्तोषी ही, कहाता है पुरुष सच्चा ॥
सन्तोषी बन के दिखलाओ, नही यह लूट अच्छी है...



२३ | शिक्षा है भगवान की

तर्ज . आओ बच्चो ! तुम्हे दिखाएँ....

आओ भाइयो ! तुम्हे बताएँ, बाते हम कल्याण की,
सत्य, शील का पालन करना, शिक्षा है भगवान की...

स्वर्ग निवासी देवों को भी, दुर्लभ जो बतलाई है,
रत्न अमोलक मानव की वह, देही तुमने पाई है,
इस को सफल बनाने वाली, भक्ति ही बतलाई है,
नही भुलानी थी जो बिल्कुल, दिल से वही भुलाई है,
जाकर जल्दी मिलने की न, काया यह इनसान की...

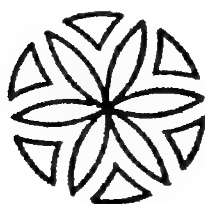
अच्छे कर्म कमाओगे तो, अच्छे ही फल पाओगे,
अच्छे कर्म भुलाओगे तो, पीछे फिर पछताओगे,
इमली-आक लगा करके न, सेव—सन्तरे खाओगे,
जैसी करनी, वैसी भरनी, दृढ़ विश्वास जमाओगे,
कथा सामने अपने रखना, रावण के अभिमान की

दीन-दुखी पर करना करुणा, मानव का गुण माना है,
जितना भी हो औरो को जी ! अच्छा सुख पहुँचाना है,
मर्म यही है दया धर्म का, जिसने भी पहचाना है,
नेक नही है उस-सा कोई, उस-सा नही सयाना है,
बात यही है सबसे बढकर, सबसे चढकर ज्ञान की...

इज्जत-आदर पाता है तो, सादा बन कर रहियेगा,
सदा बोलना वाणी मीठी, वचन कटुक न कहियेगा,
सहनशीलता, समता से हर—बात सभी की सहियेगा,
दुर्व्यवहारो से न सीना कभी किसी का दहियेगा,
पुण्यवान की चाल यही है, चाल यही गुणवान की....

नही किसी से करो ईर्षा, नही किसी से द्वेप करो,
नही किसी की करना निन्दा, नही किसी से क्लेश करो,
खान-पान पहरान रख निर्वंध, उन्नत भारत देश करो,
सपने मे भी भूल कभी न लोफर अपना वेश करो,
अरे ! सन्तति हो तुम प्यारी, प्यारे हिन्दोस्तान की .

विपयों और विकारो के न, घूमो पीछे फैशन के,
दुर्गति के दिखलाने वाले, दुश्मन हैं ये जीवन के,
सदाचार को सतत सामने, रखना अपने नयनन के,
जलवा अगर देखना सुख का, शब्द सुनो ये 'चन्दन' के,
घोट-घोट कर बूटी पीलो, दमन, दया की दान की..



२४ | खाते-खाते चल दिए

तर्ज . कव्वाली...

आने वाले आ रहे थे, आते-आते चल दिए।
जनम इस ससार मे वस, पाते-पाते चल दिये..

वज रहे थे साज मीठे, गाने वाले थे मगन।
आ अजल पहुँची वेचारे, गाते-गाते चल दिए .

एक मिस्टर घर से दफ्तर जा रहे थे दौड़कर।
वस से जो टक्कर लगी वस जाते-जाते चल दिए...

सेठ जी के सामने था, थाल ताजा माल का।
ग्रास इक मुँह मे था डाला, खाते-खाते चल दिए .

हैं कहाँ चगेज नादर, जो नहाए रक्त मे।
वस सितम ससार पर वे ढाते-ढाते चल दिए...

अय "मुनिचन्दन" पड़े वीमार इक जो ताजदार।
दे हजारो फीस डाक्टर, लाते-लाते चल दिए. .



ज्ञानी उसको कहते हैं | २५

तर्ज : कभी सुख है कभी दु ख है ..

जिसे हो आपकी पहचान, ज्ञानी उसको कहते है।
वसाए दिल मे जो भगवान, ध्यानी उसको कहते हैं. .

किसी को जो सताती ही रही वह जिन्दगी क्या है ?
कटे उपकार मे जो जिन्दगानी उसको कहते हैं

जवानी वह नही साहव ! मिटे जो रग रागो मे।
लुटे जो धर्म की राह मे, जवानी उसको कहते हैं ..

दु खी दर्दी का दु.ख सुनकर, उसे जो प्रेम से झटपट।
कलेजे से लगाए मेहरवानी उसको कहते हैं .

है केवल काम किस्से का, सिखाना झूठ, छल, झगड़ा।
वदल दे जिन्दगी को जो, कहानी उसको कहते हैं...

वुराई तज भलाई का भरे हरदम जो दम 'चन्दन' !
सही अर्थो मे हम हिन्दोस्तानी उसको कहते हैं .



कलियाँ नहीं, काँटे है | २६

तर्ज दिल लूटने वाले ..

तू जिसको मोहब्बत कहता है,
वह केवल एक छलावा है।
जल नही है यह तो रेता है,
मन-मृग का इक वहलावा है. .

अधखिली रंगीली-कलियों को, ललचाई निगाह से क्यो ताके।
ये कलियां नही रे ! काटे हैं,
सब झूठा उलफत दावा है..

मोह माया के इस सागर को, मतवाले ! तरना सहज कहाँ ?
तू बैठा जिस पर काठ समझ,
वह पत्थर की इक नावा है ..

इस लोभ कपट की दुनिया मे, सब मतलब के ही बन्दे हैं।
इक चाय की प्याली बिस्कुट से,
हो जाता प्रीत दिखावा है

हर रोज हजारो हसरत को, मन बीच लिए ही जन जाते।
रह सकता 'चन्दन' कौन यहाँ,
जब आता अन्त बुलावा है...





चटकती कलियां : महकते फूल

विविध कवियों की रचना

२ | श्री वीर प्रभु

तर्ज . रसने ! रट लेना, सदा सुखद शुभ नाम...

जय वोलो, जय वोलो, श्रीवीर प्रभु की जय वोलो...
दुनिया मे जब जुल्म वढा था, हिंसा का यहाँ जोर वढा था।
आप लिया अवतार, प्रभु की...
पुण्य उदय भारत का आया, कुण्डलपुर मे आनन्द छाया।
हो रहा जय जयकार, प्रभु की..
राय सिधारथ राज दुलारे, त्रिशला की आंखो के तारे।
तीन लोक मनहार-प्रभु की...
भर यौवन मे दीक्षा धारी, राज पाट को ठोकर मारी।
करी तपस्या सार, प्रभु की...
तप कर केवलज्ञान को पाया, जग का सव अन्धेर मिटाया।
कीना धर्म प्रचार, प्रभु की...
पशु हिंसा को दूर हटाया, सव को शिव मारग दरशाया।
किया जगत उद्धार, प्रभु की ..

तर्ज देख तेरे संसार

वर्द्धमान श्री महावीर को, मेरा हो प्रणाम।
तेरी महिमा बडी महान.
करुणा सागर दीन दयालु, तारा सकल जहान,
तेरी महिमा बड़ी महान...
पिता सिद्धारथ त्रिशला जाया।
घर-घर मे था आनन्द छाया॥
देव - देविया मंगल गाया।
धर्म का तू अवतार कहाया॥
कुण्डलपुर मे जन्म लिया था, वीर प्रभु भगवान ..
दीन - दुखी का तू रखवाला।
तूने तारी चन्दनवाला॥
फेरी जिसने तेरी माला।
उसका सकट तूने टाला॥
चण्डकौशिया जैसे तारे, वडे-वड़े शैतान.
यज्ञ - वलि को दूर हटाया।
दया धर्म का नाद वजाया॥
छूआ - छूत का भेद मिटाया।
मानवता का मान वढाया॥
ज्ञान मुनि जिन धर्म का जग मे, खिला खूब उद्यान...

विविध कवियों की रचना : एक परिचय

भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, प्रेरणा,
शिक्षा-प्रद गीतो का सार।
सत्य - धर्म की ज्ञान ज्योति से,
बन जाये सुखमय ससार ॥

नीले नभ मे भाति - भांति के,
दिखते ज्योतिर्मय तारे।
वैसे ही ये गीत निराले,
भाव - रश्मिमय हैं सारे ॥

आध्यात्मिक या नैतिकता के,
पढ कर उर मे भाव भरो।
विविध रग के सुमन सजाये,
पाठक - गण स्वीकार करो ॥

भाव - भरे सगीत मिलेंगे,
आत्म शान्ति व सुख का मूल।
मिल जुल करके पढो पढाओ,
चटकती कलिया, महकते फूल ॥

महामंत्र : नवकार | १

तर्ज : दिल लूटने वाले

नवकार मन्त्र है, महामन्त्र इस मन्त्र की महिमा भारी है।
आगम मे कथी गुरुवर से सुनी, जीवन मे जिसे उतारी है...

अरिहताण पद पहला है, अरि आरती दूर भगाता है।
सिद्धाण सुमिरण करने से, मन इच्छित सिद्धि पाता है।।
आयरियाण तो अष्ट सिद्धि और नव निधि के भण्डारी हैं..

उवज्झायाण अज्ञान तिमिरहर, ज्ञान प्रकाश फैलाता है।
सव्वसाहूण सब सुखदाता, तन मन को स्वस्थ बनाता है।।
पद पाँच के सुमिरन करने से, मिट जाती सकल बीमारी है...

श्रीपाल सुदर्शन मेणरया, जिसने भी जपा आनन्द पाया।
जीवन के सूने पतझड मे फिर, फूल खिले सौरभ छाया।।
मन नन्दनवन मे रमण करे, यह ऐसा मगलकारी है

नित नई बधाई सुने कान, लक्ष्मी वरमाला पहनाती।
"अशोक मुनि" जय विजय मिले शान्ति प्रसन्नता बढ जाती।।
सम्मान मिले सत्कार मिले, भव-जल से नैया तारी है



४ | तेरे घर में उजाला हो जाए

तर्ज · विदिया चमकेगी, चूड़ी खनकेगी ..

जय महावीर कहो, कि जय-जय वीर कहो,
तेरे घर मे उजाला हो जाए।
प्रभु महावीर कहो, श्री महावीर कहो,
तेरी नाव किनारे लग जाए.
वोली चन्दना, करूँ प्रभु वन्दना, क्या भक्ति में जोर नही।
लाख चौरासी में भटकी, फिर भी ना सोची सुध लूँ,
अव तो छूटेगी, बेडी टूटेगी, मुर्झाई कली ये खिल जाये..
जगन्नाथ, मेरी अरदास, क्या तुझ को मजूर नही।
तीन दिनो की भूखी-प्यासी, जाऊँ किसके द्वारे,
नैया डोले जी, खाये हिचकोले जी,
तेरी कृपा का फल मिल जाए..
सुन पुकार, वो दीन दयाल, फिर चन्दना के पास आए।
मुझ को कुछ नही चाहिए देवी, पूरी करले चाह,
राह खुल जायेगी, मुक्ति पायेगी,
प्रभु कृपा जिस पर हो जाए..
तेरह वोल, वड़े अनमोल, प्रभु ने पूर्ण पाए।
हथकडिया भी कंगन वन गई, पल की लगी न देर,
प्रभु जव आए जी, उड़द वहराए जी,
'सीता' ये मगन होके गाए..

जन्मे हैं वीर कुमार | ५

तर्ज : ये वो दीवाने दिल के...

जयन्ती देखो आई, आनन्द अति लाई,
जन्मे हैं, जन्मे हैं, जन्मे हैं वीर कुमार
त्रिशला की गोद लेके आई सवेरा,
अज्ञान का देखो मिटा अन्धेरा।
प्रभु वीर चमके, घन दूर हुए तम के...
छप्पन कुमारियाँ मगल गावे
चौसठ इन्द्र जन्म-महोत्सव मनावे।
नरकों मे शान्ति छाये, सब झूम-झूम गाये...
मेरु शिखर पर प्रभु को ले जाये,
अंगुष्ठ से प्रभु मेरु को कपाये।
हा देवता भी चमके, प्रभु का मुख दमके...
सुहागिनी मीठी लोरियाँ गाती,
सोने के पालने मे प्रभु को झुलाती।
हाँ वीर नाम पाये, महावीर कहाये...
यौवन मे आते ही सयम धारा,
जैन शासन का चरम सितारा।
हा उज्ज्वल वन के, सुज्योति जलाके .



६ | प्रभु का स्वर्ग से अवतरण

तर्ज : धीरे-धीरे बोल कोई...

जन जन की मन कलियो मे, उत्सव है रग रलियों मे।
खुशियो की रग रलियो मे, कुन्दनपुर की गलियो मे ।।
यह धवल चिह्न वतला रहे, हैं स्वर्ग से प्रभु आ रहे

तेरस का शुभ दिवस था मधुमास।
पूर्ण हुई माता त्रिशला की आश ।।

मुख वढ गया, हाँ वढ़ गया, यश चढ़ गया, हाँ चढ़ गया।
सव नगर जन हर्षा रहे, हैं स्वर्ग से प्रभु आ रहे...

वदियो से जव विगड गया ससार।
भ्रष्ट हुआ था मानव का आचार ।।

यह जान के, पहचान के, हित आन के, कल्याण के।
संकेत कुछ समझा रहे, हैं स्वर्ग से प्रभु आ रहे.

देव नाम पर होता था वलिदान।
यो फूलता था देश मे अज्ञान ।।

कोई प्राण दो, जी दान दो, सम्मान दो, आराम दो।
वोलते जन जा रहे, हैं स्वर्ग से प्रभु आ रहे

भूले भटके जो भी थे राहगीर।
उनके मार्गदर्शक थे महावीर ।।

भव काट दो, हाँ काट दो, दु.ख पाट दो, हाँ पाट दो।
हम शरण तेरी पा रहे, हैं स्वर्ग से प्रभु आ रहे..

—कविरत्न श्री सुमेर मुनिजी महाराज

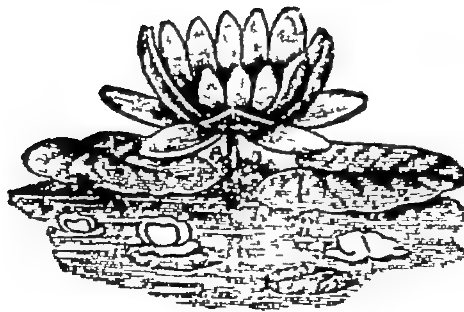
तर्ज · धीरे-धीरे बोल कोई सुन ना ले...

जय जय हो गुण धाम की, वर्द्धमान भगवान की।
आशा के विश्राम की, महावीर भगवान की॥
वीतराग विचर रहे, नर लोक पावन कर रहे..
भोगवाद में उलझा था संसार।
व्यक्तिवाद में मानव था बेकार॥
वैराग का, गत राग का, तप त्याग का, हाँ त्याग का।
वह तेज सब मे भर रहे, नर लोक पावन कर रहे.
धर्म नाम पर यज्ञ और बलिदान।
करते थे कुछ अज्ञानी इन्सान॥
यह जानने, पहचानने, भगवान ने, समझा उन्हे।
दुख प्राणियो के हर रहे, नर लोक पावन कर रहे
जाति नही है ऊँच नीच का माप।
कौन महान है, कर्म बताता आप॥
इस सत्य को, हाँ सत्य को, गुरु तथ्य को, हा तथ्य को।
प्रभुजी उजागर कर रहे, नर लोक पावन कर रहे.
नारी को समझा जाता था हीन।
सर्व कायदे नर के थे आधीन॥
दे ज्ञान को, विज्ञान को, नर मान को, अभिमान को।
प्रभु तोड़ क्रान्ति कर रहे, नर लोक पावन कर रहे.

अपनी सुन्दर करणी से इन्सान।
वन सकता है निश्चय वह भगवान ॥
यह सत्य सुन, कर दुःख दमन, प्रत्येक जन, अपना अमन।
प्रभु के चरण मे जो रहे, नर लोक पावन कर रहे...

सत्य अहिंसा अभय और अनेकान्त।
महावीर के ये थे प्रिय-सिद्धान्त ॥
कोई जानकर, पहचान कर, श्रद्धान कर, फर्मान कर।
नर पाप अपना हर रहे, नर लोक पावन कर रहे...

—कविरत्न श्री सुमेर मुनिजी महाराज



तर्ज : इक चीज मागते हैं.

उस वीर के चरणो मे, वन्दन है वारम्वार।
कौन वीर है यह वतलाओ, सच्ची वात हमे समझाओ ॥
वीतराग वह होना चाहिए, जग का जीतन हार...

जीवन क्या है यह समझाना, मरम धर्म का तत्त्व वताना।
प्रश्न हमारा यह सुलझा दो
समझो जी समझा दूं करके थोडा-सा विस्तार .

मन मन्दिर को खोल के रखना, चिन्तन डावां डोल न रखना।
समता से समझा जाता है
अगर समझना है जीवन का, मोक्ष और संसार..

जड चेतन का जोड मिला जो, तप सयम से उसे मिटा दो।
महावीर के सुख-शासन मे
मिटने को मुक्ति कहते हैं, जुडने को ससार...

—कविरत्न श्री सुमेर मुनिजी महाराज



९ | अद्भुत वाणी है

तर्ज · इक प्यार का नगमा है . . .

महावीर जिनेश्वर की, यह अद्भुत वाणी है।
जिन्दगी जोड़ इसमे सभी, यही तो जिन्दगानी है . . .

नर जीवन श्वासो का, इक ताना वाना है।
यह बुद्बुद् है जल का, पल मे मिट जाना है ॥
मन मोड़ यह कुछ भी नही, सच्ची जिनवाणी है . . .

मेरे मन के मन्दिर मे, तेरी मूर्ति सजदी है।
तेरी सच्ची शिक्षाएँ अहा अच्छी लगदी है ॥
नही पालन करने से, जीवन की हानी है . . .

मायावी दुनियाँ मे, तू छलता जाता है।
तृष्णा के चक्कर मे, तू ढलता जाता है ॥
तू सम्भल-सम्भल प्राणी, दुनिया यह फानी है .

प्रभु की उस आज्ञा को, अब सफल बनाना है।
तज करके कुटुम्ब-छोटा, जग कुटुम्ब बनाना है ॥
कहता है 'सुमेरू' सदा, यह बात सुहानी है . .



तर्ज : बार-बार तोहे क्या समझाऊँ .

बार-बार यूं रुदन मचावे, मत जावो महावीर।
चरणो की दासी हूँ, नयनो से वरसे नीर

छूट गया है नाथ आज सब आलम्बन।
हाथ पांव मे पड़े हुए हैं प्रभु वन्धन॥
तीन दिवस से भूखी प्यासी, अबला हुई अधीर

कैसे-कैसे स्वामी कर्म कमाये हैं।
वही आज उदय में मेरे आये हैं॥
करो अनुग्रह मुझ पर तुम हो सागर वर गम्भीर .

लाखो पतितो को भव पार लगाया है।
आओ स्वामी आज मेरा क्रम आया है॥
करुणा गंगा वहाकर मेरी हर लो सारी पीर . .

महासती चन्दनबाला का सुन क्रन्दन।
आए है महावीर खिला फिर अन्तर्मन॥
अरे 'प्रेम' फिर टूट पडी है, कर्मों की जजीर . .



११ | तू है तारणहार

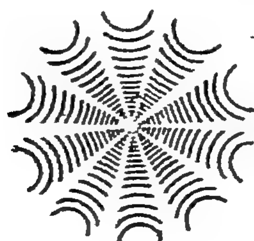
तर्ज : चल चल चल मेरे साथी ..

सुन सुन सुन मेरे स्वामी, ओ अन्तर्यामी,
सुन ले सुन अपना जान के।
आया द्वार, करो पार, तू है तारणहार ..

तू दया का सागर है, मेरी छोटीसी गागर है।
भरदे इसे भक्ति से, फिर मुझे न कोई डर है॥
मानो मेरा, मैं हूँ तेरा, लागी है तेरी एक धुन ..

दुखियो का तू नाथ है, तू करुणा की वरसात है।
मगलमय महावीर, मेरे जीवन मे तू साथ है॥
रगरग मे नसनस मे वहता है भक्ति का खून ..

मैंने माना है नाथ तुझे सेवक वनालो मुझे।
चाहूँ ना मैं कुछ और, ये आतम गुणो से सजे॥
तू दयालु तू कृपालु दे दो अनंत तेरे गुण .



तर्ज · झट जावो चन्दन हार लावो .

तारो-तारो पारसनाथ तारो, तमारा गुण नहि भूलुँ,
तमे बलतो उगार्यो कालो नागरे, तमारी वात शु बोलु

कमठ पच अग्नि तपे, बाल तपस्वी राज।
नाग वले छे काष्टमा, जुवे अवधिज्ञाने जिनराज रे

काष्ट चिरावी काढीयो, सँभलाव्यो नवकार।
धरण ईन्द्र पद पामीयो, एवो मोटो प्रभु नो उपकार रे . . .

जोग भोगनी वातडी, समजावे शुभ पेर।
पण शिखामणथी वस्यु, कमठ बावानी आँखमा झेर रे .

कमठ मेघमाली थयो, प्रभु काउसगमा धीर।
जल वरसावे जोरमां, आवी नाके अड्योछे नीर रे .

धरण ईन्द्र आसन चल्युँ, आव्यो प्रभुनी पास।
नागरूप करीने उचकिया शिरछत्र फणा आकाश रे

थाक्यो कमठासुर हवे, नम्यो प्रभु ने पाय।
'चन्द्र' कहे गुण पारसना, जैन समाज सारी गाय रे . . .



१३ | दर्श दिखादे

तर्ज : तू कौन सी बदली में मेरे चाँद...

भगवान महावीर तू फिर दर्श दिखा दे।
सत्य अहिंसा का धर्म सब को सिखा दे..
छाया था सारे विश्व मे अज्ञान अन्धेरा,
रोशनी ले ज्ञान की किया था उजेला।
आके अभी जग मे, सर्व तिमिर मिटा दे..
द्वेष - पापाचार ने जन-जन को, सताया,
शूलों को बना फूल जग को पथ बताया।
पथ भूले पथियों को, पथ दिखा दे...
बन्धन मे पडी चन्दना को तुमने उबारी,
अज्ञानी अर्जुन की गति तुमने सुधारी।
कल्याणकारी धर्म वीणा फिर से सुना दे...
जिसने भी तेरी ली है शरण तीन करण से,
बन जाता निर्भय वो सदा जन्म-मरण से।
राही बने शिवपुर के कर्म मिटा के...
संसार - सागर पार करन वाणी प्रकाशी,
अपना के तिरे भव्य यह जिनवाणी नौका-सी।
भजता हूँ तुझे नित्य मैं 'जिनेन्द्र' तिरादे...



दान की महिमा | १४

तर्ज : देख तेरे ससार की हालत .

अरे मुसाफिर ! जग मे आकर कर जाना कुछ दान,
दान की महिमा वडी महान
तीन लोक मे होते रहते दानी के गुण गान,
दान की महिमा वड़ी महान...
दान, शील, तप, भाव, वताया, नाम दान का पहला आया ।
जिसने जो कुछ वैभव पाया, पूर्व दान की है सब माया ।।
ऊँची गतियो मे जाने का, यही प्रथम सोपान...
नदियाँ सागर को दे देवे, सागर से वादल पा लेवे ।
फिर वादल जग पर वरसावे, वही पुन. नदियो मे आवे ।।
कमी नही होने देते हैं दानी के भगवान ..
क्षण-भगुर ये कच्ची काया, उससे भी चचल यह माया ।
खाली हाथ यहाँ था आया, पूर्व दान-फल से कुछ पाया ।।
यही छूट जाये सव वैभव, दो दिन का महमान...
खुद का पेट सभी भरते हैं, खुद के लिये सभी मरते हैं ।
धन से परहित करने वाले, जग मे नाम अमर करते हैं ।।
जनम-जनम का हो जाता है, दानी का अहसान...
कर्ण महान कहाया कैसे, नाम दधिचि ने पाया कैसे ?
भामाशाह पुजाया कैसे, नाम चमकते "मोती" जैसे ।।
तन की शोभा शील धर्म है, धन की शोभा दान ..

१५ | अर्हत्-कीर्तन

तर्ज . धीरे-धीरे बोल कोई ..

अर्हं-अर्हं हर स्वर मे, हर स्वर मे कह हर स्वर मे ।
गूँज उठे यह घर-घर मे, घर-घर मे यह घर-घर में ।।
नाम अर्हं सार है, नर लोक का आधार है...
काम क्रोध अहकार अनेको पाप ।
जीवन मे पैदा करते सन्ताप ।।
छोड दे, तू छोड दे, मोड़ दे मन मोड दे ।
तो नाव तेरी पार है, नर लोक का आधार है...
न्याय-नियम मे जीवन को दो मोड़ ।
सत्य प्रेम से उलटा पथ दो छोड ।।
पायेगा, वह पायेगा, लायेगा, वह लायेगा ।
जीवन मे धर्म वहार है, नर लोक का आधार है ..
खान-पान मे मर्यादा हो साथ ।
रहन-सहन मे सयम हो दिनरात ।।
आचार मे, आचार मे, व्यवहार मे, व्यवहार मे ।
जहाँ न्याय का सचार है, नर लोक का आधार है...
आलस मे जो उलझा है दिनरात ।
"मुनि विनोद" की सुने नही जो बात ।।
चमन यह, चित चमन यह, जनम यह, नर जनम यह ।
उसका सकल वेकार है नर लोक का आधार है...



तर्ज : वार-वार तोहे क्या ..

वार-वार तुझे सजग बनाएँ, ज्ञानी कहे पुकार।
जीवो को तजकर, अपने ही मन को तू मार॥

जीवों को फिरे मारता, नही मन भरा,
औरों को फिरे तारता, नही खुद तरा।
लोगो का क्या दोप है फिर, जव तुझ मे ही खार ..

मन तेरा लासानी यह, फिरे भटक-भटक,
झूठी दुनियाँदारी मे, यहाँ गया अटक।
माँग रहा है ऐसी चीजे, जिनका कही न पार...

मन तो चाहता झूलू मैं, सुख का झूला,
कर्म न देते साथ जव, फिर क्यो भूला।
कर्म होय जव शुभ तेरे तव, होगा तेरा उद्धार...

मन जीते जग जीत है, सुनते आए,
वडी पुरानी रीत यह, सुनते आए।
दो अक्षर का वोध जगत, पाया इतना ही सार...

मान और मन, इन दोनो को जिसने मारा,
सफल समझो, फिर उसका तो जीवन सारा।
मानव मन की ममता का तू कव से वना सवार ..



१७ | प्रभु ! शरण तेरी आया

तर्ज . जव जब वहार आई ..

जव जव भी कष्ट आया, कोई भी न पास आया,
प्रभु ! शरण तेरी आया !
जितने भी संगी-साथी, कोई न काम आया,
प्रभु ! शरण तेरी आया...

मरते थे जिनके ऊपर, अँखियाँ उन्होने फेरी ।
विपदा ने आ के जिस दम, जिन्दगी है मेरी घेरी ॥
फिरते हैं मुँह छुपाये, अपना जिन्हे वनाया...

माता - पिता व वन्धु, कोई वना न मेरा ।
पी कर के मोह-मदिरा, कहता था जिनको मेरा ॥
साथी हैं सारे सुख के, दु·ख का कोई न पाया...

'राकेश' शरण मे तेरी इक वार जो भी आया ।
नैया को उसने अपनी, उस पार है लगाया ॥
है जिन्दगी उसी की, प्रभु-गीत जिसने गाया..



जगाने के लिए | १८

तर्ज : छू लेने दो नाजुक...

मानव चोला यह पाया है,
तन - मन को जगाने के लिए।
अहिंसा संयम और तप का,
कुछ रंग चढ़ाने के लिए ॥
तू कौन है, आया कहा से यहां,
और कहा पर तुझको जाना है ?
यह राज समझ, मजिल को समझ,
कुछ होश मे आने के लिए .
भोगो मे न यूँ ही खो देना,
अनमोल जवानी की घडिया।
मौका नायाब मिला तुझको,
कुछ धर्म कमाने के लिए..
जनम-जनम का दुखियारा,
फिरता है जीव मारा - मारा।
दान, शील, तप भावना से,
सब दुख मिटाने के लिए..

—कविरत्न श्री सुरेश मुनि जी महाराज



१६ | हीरा-सा जन्म

तर्ज नील गगन पर उड़ते...

झूम - झूम कर गीत प्रभु के गा गा गा,
हीरा - सा यह जन्म मिला, ना इसको व्यर्थ गंवा..

इक दिन माटी मे मिल जाए, यह कंचन-सी काया।
जिस पर मन तेरा ललचाया, यह वादल की छाया ॥
सोया पडा क्यो पैर पसारे, अव तो होश मे आ ..

दुनिया के वाजार मे आकर, कर कुछ नेक कमाई।
आगे के लिए कुछ न कमाया, पूँजी गांठ की खाई ॥
क्या खोया क्या पाया जग मे इसका पता लगा...

चार दिनो की चादनी है, आखिर घोर अन्धेरा।
जिसको समझा है तू अपना, कोई भी नही तेरा ॥
मन मन्दिर में जोत जगा कर ध्यान प्रभु का ला...

काम क्रोध मोह लोभ अरु माया, पीछे लगे लुटेरे।
जाग - जाग अव जाग वावरे ये दुश्मन हैं तेरे ॥
इन से अपना पिण्ड छुड़ाकर परमातम पद पा.

—कविरत्न श्री सुरेश मुनि जी महाराज



क्या जाने ? | २०

तर्ज : आंखो मे खुशी छा जाती है...

बाते जो बनाया करते हैं,
वो करके दिखाना क्या जाने ?
करने की लगन जिनके मन मे,
वो बाते बनाना क्या जाने ?

जो गरज गरज कर आते हैं वो कम ही बरसते देखे हैं,
और उछल-उछल चलने वाले, राहो मे ही बसते देखे हैं,
हिम्मत ही नही जिन पावो मे, वो मन्जिल को पाना क्या जाने ?

जहाँ जुल्मोसितम के साए मे, अरमान दिलो के पलते हैं,
वहाँ वीर हकीकत से फिर भी, सर ऊंचा उठा के चलते हैं,
मजूर है सर कटवा लेना, पर सर को झुकाना क्या जाने ?

दुख के बदले सुख आन मिले, दुनिया का 'पथिक' यह असूल कहा,
तुमने तो दिये काटे सबको, बदले मे खिलेंगे फूल कहां,
शीशे घर वाले, दूसरो पे पत्थर बरसाना क्या जाने ?

दुःख भी झेले, दर्द भी पाए, फिर भी इसको होश न आए।
पग-पग भटके, राह न सूझे, अधेरे मे यों चला जा रहा है॥

—कविरत्न श्री सुरेश मुनि जी महाराज



२१ | जीवन ज्योति

तर्ज : गाता रहे मेरा दिल...

जीवन ज्योति मेरी जल, सत्य की राहो पे चल...
नही मिले फिर ये जन्म, नही मिले ये वतन...

ओ मेरे मन पंछी, तू आत्म नभ मे उडना,
तूफा आये लाखो, तू ना मचलना।
सीधी राहे वढते जाना, देखो ना भटकना...

ओ मेरी इन्द्रियों, तुम सत्कार्यों को करना,
दु:खियो की सेवा में खुद को लगाना।
शक्तियों को सफल वनाना एक दिन है मिट जाना...

तू सुनले मेरे मनवा, नही यहाँ हमेशा रहना,
करले करनी ऐसी, कि फिर ना हो आना।
उज्ज्वलता से जीवन जीना, दिव्य ज्योति जलाना...



हुण्डी जाली है | २२

तर्ज . रेंशमी सलवार.

कैसे हो कल्याण ,, करनी काली है ।
नही होगा भुगतान हुण्डी जाली है...

तू तन का काला धव्वा, धोता ले फौरन पानी ।
तेरे मन पर कितने काले, धव्बो की पडी निशानी ॥
क्यो न निहाली है

तेरा विगडा पडा है इजन, गाडी किस तरह चलेगी ।
दीपक मे तेल खतम है, बत्ती किस तरह जलेगी ॥
बुझने वाली है .

तेरे अन्दर जान नही है, कैसे फिर देह चलेगी ।
तेरी नैया फूट रही है, कैसे फिर पार लगेगी ॥
डूवने वाली है

नकली हुण्डी को जला दे, इस मन को शुद्ध बनाले ।
पी 'धन' ज्ञानामृत प्याले, क्यो मरता प्यास बुझाले ॥
सुगुरु गुणशाली है .



२३ | सुयश के सुमन

तर्ज · नीले गगन के तले . .

एऽऽ कर्तव्य पथ पे चले,
सुयश सुमन खिले . . .

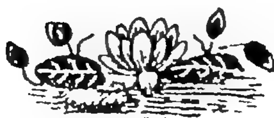
ऐसे जो जीवन खोकर जाये,
फिर - फिर नाही मिले . . .

सद्गुण मोती जीवन मे चमके,
काम करो तुम भले . .

रहना नही है जाना ही होगा,
मृत्यु कभी ना टले .

जीवन मे आके, करले भलाई,
जन - जन से मिलके गले .

विश्व-प्रेम की त्याग नेम की,
उज्ज्वल ज्योति जले .



भक्ति में मनवा | २४

तर्ज : सावन का महिना . .

भक्ति मे मनवा, हो जावो रसबोर।
मयुरा रे नाचे जैसे मेघो का सुन शोर .

मीरा ने विप का प्याला पिया था,
सीता ने अगनि मे ध्यान किया था।
विष अग्नि देखो, चला न कुछ जोर .

भक्ति से गौतम केवल पाये,
चन्दना ने दिया दान दीप जलाये।
मुक्ति मे जाने की भक्ति है सच्ची डोर . .

हनुमान की थी राम की भक्ति,
ध्रुव प्रह्लाद मे इनकी थी शक्ति।
भक्ति की शक्ति पे करो ना जरा गौर

भक्ति की सरिता मे झूम-झूम बहना,
उज्ज्वल लहरो मे तल्लीन रहना।
भक्ति की ज्योति से मिलेगी दिव्य ठौर .



२५ | तेरे भरोसे

तर्ज . इन्हीं लोगों ने ..

तेरे भरोसे - भरोसे मेरी नैया,
सहारा तेरा .

सागर में हलचल, तूफानी है लहरे
दूर है किनारा खिवैया ..

तेरे भरोसे, किश्ती उतारी।
तू ही है पार लगैया ...

तू ही सुनेगा, दुख की कहानी।
तू ही है मात-पिता भैया ...

भव भव भटका तेरी शरण विन।
तू ही है दुख से छुडैया ..

भक्ति के रग मे, तन मन रंगदे।
वर्धमान मडल के तिरैया .



आत्मा ने तारो रे | २६

तर्ज तेजा की लाग्यो-लाग्यो जेठ...

तारो, तारो, तारो निज आत्मा ने तारो रे।
मिनख जमारो आयो हाथ मे..

हिंसा झूठ चोरी जारी लोभ लालच छोडो रे।
मनडा ने मोडो रे माया मोह सूँ .

वैर जहर झगडा राड आपसी मिटाओ रे।
जिनेन्द्र गुण गावो चित्त चाव सूँ

ध्यान जिनराज मे थे, स्नेह लगाओ रे।
लाभ कमावो सतसग सूँ .

मीठा-मीठा ज्ञान-ध्यान आतम मे रमावो रे।
सटके सीधावो शिव लोक मे...

ज्ञानी वण माँयली आखिया सूं जोवो रे।
चेतन ! सोवो रे मती नीद मे. .

जागण रो यो मोको आयो, सुगुरु जगावे रे।
धर्म सुणावे जिनराज रो .



२७ | मिनख जमारो पायो

तर्ज . तेजा की, लाग्यो-लाग्यो जेठ...

पायो पायो मिनख जमारो भल भाई रे।
हीराँ ने रत्नो सू तोल्यो ना तूले...
कीजो-कीजो सफल भजन कर भाई रे।
सोनारी घड़ियाँ तो आई हाथ में..
दीजो दीजो दान दया रा भाव लाई रे।
कीर्ति तो वढ़ेला थाँरी चौगुणी...
रहसी-रहसी नाही थिर काया माया थाँरी रे।
जावेला जिणारो पतो है नही...
गाडी गाड़ी गाढो क्यू थे आतो चंचल नारी रे।
विजली रे भलकारे साथे जावसी ..
रोया धोया रेंवे नही दया इणने नावे रे।
आतो रे चिरताली चवड़े मान लो. .
वालपणो खोयो ने जवानी गई सारी रे।
पछे तो वूढारा लेवे वारणा...
कोई नही पूछे ताछे, मन ही मन विलखावे रे।
रोया ने झिक्यां सूं हीरो है कठे...
इण सू थाने कहूँ भायो मानो वात म्हारी रे।
करणी तो करोनी मुक्ति जाणरी...
गायो गायो मादलिया मे पौप सुदी माँई रे।
छठ रे दहाड़े 'मिश्री' मोद सूं .

तर्ज : दिल लूटने वाले जादूगर

यदि भला किसी का कर न सको तो बुरा किसी का मत करना।
अमृत न पिलाने को घर मे तो जहर पिलाते भी डरना॥

यदि सत्य मधुर न वोल सको तो झूठ कठिन भी मत बोलो।
यदि मौन रखो सबसे अच्छा, कम से कम विप तो मत घोलो॥
वोलो तो, पहले तुम तोलो फिर मुख ताला खोला करना...

यदि घर न किसी का बाध सको, तो झोपड़ियाँ न जला देना।
यदि मरहम पट्टी कर न सको तो खार नमक न लगा देना॥
यदि दीपक बन कर जल न सको तो अन्धकार भी मत करना...

यदि फूल नही बन सकते तो काटे वनकर न विखर जाना।
मानव वनकर सहला न सको तो दिल भी किसी का दुखाना-ना॥
यदि देव नही वन सकते तो दानव वनकर भी मत मरना.

"मुनि पुष्प" अगर भगवान नही तो कम से कम इन्सान बनो।
किन्तु न कभी शैतान वनो और कभी न तुम हैवान वनो॥
यदि सदाचार अपना न सको तो पापो मे पग मत धरना....

●

२६ | सुखी न मिलियो एक भी

तर्ज . बटाऊ आयो लेवा ने

मैं तो ढूंढ्यो रे सहु जगमाय, सुखी न मिलियो एक भी...

हाट हवेली भर्या खजाना भोगण वालो नाय।
भाटो - भाटो देव मनावे, पुत्र के बिना झूरे माय.

पइसो पायो नाम कमायो, करे सवाई वात।
कवर साव कपूता जनम्या, बापूजी रोवे दिन-रात..

पदमण मिली दयालू कही पर, सेठ न लावो लेय।
मिली करक्क्षा नार कर्म सूं, खावे ना खावणदेय...

छप्पर पलंग है महल मालिया, जाली झरोखादार।
विना कथ के झूरे कामनी, खारा लागे रे घरबार ..

करी कमाई लक्ष्मी पाई, बंगला मोटर - कार।
विना नार के लगे अलूणा, छोड गई रे मझधार . .

देह मिली देवा सी सुन्दर रोग न छोड़े लार।
क्रोडपत्यां ने खाता देख्या, पालक की सब्जी लूखो-आहार .

पलटन सी वढ रही है घर मे आमदनी है नाय।
उण रे कन्या चार कुंवारी, कोई कमावण नही जाय . .

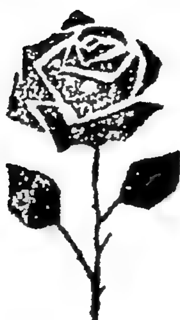
एक पेट का जाया लड़े नित, कोई के बहु परिवार।
कोई कुवारा कोई दुखियारा कोई दिवाल्या कर्जादार

धन-वैभव पद पायो ऊँचो नही बोलण को ढग ।
कवि-पण्डित लेखक ज्ञानी ने, पैसा-पैसा सूँ देख्या तंग

कोई के कांई कमी है घर मे, कोई के कांई दु.ख ।
इण ससार समुद्र माही, दु.ख तो घणा ने थोडा सुख

इण जगती सू जो मुख मोड्या लाग्या धर्म के पथ ।
मन ने जीत्या 'जीत' जगत मे सांचा सुखी है निर्ग्रन्थ

—कवि श्री जीतमल जी चोपडा, अजमेर



३० | प्रभु गुण गा जा

तर्ज : घटा घन घोर घोर ..

समय वलवान जान, तजो नर अभिमान, प्रभु गुण गा जा...

एक समय श्री हरिश्चन्द्र ने भरा नीच घर पाणी,
काशी वीच कुमार को वेचा, वेची तारा रानी।
श्मशानी वेपधार, दुःख सहे अपार, सत्य के काजा...

एक समय श्रीरामचन्द्रजी हो गये वन के वासी,
रावण ने धर कपट रूप सीता को जाल मे फाँसी।
विछुड गई प्यारी सीया, करती वो पिया-पिया, आन छुडाजा..

एक समय श्रीकृष्ण जगत मे थे वलधारी नामी,
मरते समय मिला नही पाणी तीन लोक के स्वामी।
तेरी तो क्या है हस्ति, किस पे छाई है मस्ती, जरा वतला जा...

दुनियाँ को कर फतह सिकन्दर कहता मेरा-मेरा,
काल चक्र ने आन दवाया, जमी पे कर दिया डेरा।
पसारे दोनो हाथ खाली, ऊपर से मिट्टी डाली, भूला सव साजा..

सुख देख मत फूलो रे मन मे दुःख देख नही रोना,
'जीतमल' फँस माया जाल मे जन्म वृथा नही खोना।
करो भक्ति प्रभु की प्यारी, तन-मन से होकर वारी, लगन लगाजा .



घड़ी की करामात | ३१

तर्ज : तू हिन्दू बनेगा

है जिसने घडी तेरी घडी ठीक घड़ी है।
घडियाँ हैं वहुत पर वो घडी एक घडी है..
उसने तो घडी काम की खातिर थी वनाई।
तू ने घरी टेवल पे कलाई पे लगाई।
टिक-टिक ये करे देती है वो रोज दुहाई।
क्यो मस्त है घडियों मे घडी अपनी भुलाई।
सिर पे जो खडी देख उसे कैसी घडी है.
घड़ियाँ तो विगडती हैं सँवरती हैं जहाँ मे।
कायम ये हमेशा कहाँ रहती है जहाँ मे।
तू लाख वना ले ये लोहे काँच की घडियाँ।
उस जैसी घडी एक न वनती है जहाँ मे।
आए न फरक जिसमे कभी ऐसी घडी है..
सैकिण्ड से मिण्ट, मिण्टो से इक घटा बनाया।
दिन साल बीत गए यूँ ही वक्त गँवाया।
विज्ञान चलाया कही ज्योतिष है लगाया।
उस असली घडी का तो 'अमर' भेद न पाया।
रुकती न घड़ी भर वो घडी ऐसी घडी है..



तर्ज : ओ दूर जाने वाले...

इन्सा कहाने वाले सुन अपना तू अफसाना।
दुख दर्द से भरा वो, गुजरा हुआ जमाना...

टाँगें थी तेरी ऊपर, औंधा लटक रहा था।
माँ का शिकम ही तेरे, रहने का था ठिकाना...

नौ मास पूरे करके ससार मे तू आया।
वचपन गुजर गया तो वनने लगा दीवाना .

दिन चार चाँदनी के कटने मे देर क्या थी।
फिर आ गया वुढ़ापा, हँसने लगा जमाना...

वचपन यौवन वुढापा, तीनो ही तुझ पे आये।
आखिर वो दिन भी आया, जिस दिन तुझे था जाना..

वस खत्म है कहानी, तू वुलवुला है पानी।
कोई ऐसा काम करजा, भूले न जो जमाना..



३३ | रिश्वत

तर्ज : इक परदेशी मेरा दिल ले गया..

पूजा हो रही है मेरी स्थान-स्थान में।
फैल गई मैं तो सारे ही जहान मे...

चलता नही मेरे विना मास्टरो का काम है।
डाक्टरो का निकल जाता मेरे आगे राम है॥
टी० टी०, ठेकेदार भी है मेरी छान मे.

अड्डे है खास मेरे आफिस और थाने।
लाइसैन्स परमिट कन्ट्रोल की दुकानें॥
कोर्ट और कचेरी भी है मेरी आन में..

दुनियाँ लगाए चाहे कितने ही नारे।
राजकर्मचारी सारे वने मेरे प्यारे॥
जरा भी न वदनामी लाते ध्यान मे..

व्याह शादियो मे भी है मेरा वोल वाला।
मठो मदिरो मे भी जा हाथ मैंने डाला॥
मस्त है पुजारी मेरे गीत गान मे

रोते को हँसाना, और हँसते को रुलाना।
खेल वाएँ हाथ का है, जेल से छुडाना॥
कामधेनु मैं हूँ मन चाहे दान मे..



वापिस न वह फिर आ सकती।
आती को पकड़ो जाने लगेगी,
फिर तो न पकड़ी जा सकती॥
धर्म करने का अवसर उदार है,
प्यारे प्रभु जी ही तारणहार है...
माता के तुल्य परनारी को समझो,
मिट्टी-सा समझो तुम पर धन।
आत्मा के तुल्य सब जीवो को, समझो,
शिक्षा सुनाता है "मुनि धन"।
ज्ञान सुनने का फिर यही सार है,
कुछ ले लो तो बेडा पार है...



तर्ज : फोरो काजलियो

ये सब पर्वों का सार, पर्युषण आये हैं...
त्याग तपस्या आदरो, करो जीवन का उद्धार...

वैर विरोध मिटा करके, करो प्राणि-मात्र से प्यार. .

चार दिनो की जिन्दगी, करो नेक कमाई सार. .

जीवन मे सुख शान्ति रहे, दिल क्षमा धर्म ने धार .

तारागण मे ज्यों चन्द्रमा, त्योही पर्व पर्युषणराज
आत्मा को उज्ज्वल करो, हरो अष्टकर्म का भार ..

जिनवाणी सुन्दर तरणी, भव-सागर-तारण हार ..

श्रवण-मनन-चिन्तन करो, और लो जीवन मे उतार
"जिनेन्द्र" प्रभु को भज करके, करो अल्प सभी ससार ..



३४ | जीवन दिन चार ना

तर्ज : अमे मणियारा रे गोकुल गामना...

अमे पखीडा रे...जीवन दिन चार ना।
हाँरे कोई आजे आव्यु ने काले जाशे...

कर्म प्रमाणे सौ आवे आ लोक मां,
अन्ते छोडी ने उडी जावु परलोक मां।
हाँरे तारा माला वान्ध्या रहि जाशे..

विश्व रूपी वाग मा माया नी जाल छे,
कर्म रूपी डोरी थी आवी वन्धाय छे।
हाँरे तमे मोह माया मां फसाया..

काल रूपी वाज तारी माथे वेठोछे,
आयुष्य नी डोरी ने कापी रह्यो छे।
हाँरे जीव ! फेरो सफल करी ले जे .



३५ | धर्म की गठरी

तर्ज : जरा सामने तो आओ...

जरा धर्म की गठरी बाँधो,
मौत मस्तक पे हो रही सवार है।
आता-आता ही श्वास रुक जाएगा,
इस श्वास का न कुछ एतवार है.

आने के वाद मौत कुछ भी न होगा,
यो ही तडफ मर जावोगे।
मन की मुरा` मन मे रहेगी,
पूरी न करने पावोगे ॥
वांधो पानी के पहले पाल है,
श्रोता वनने का सच्चा सार है.

कल पर धर्म को विलकुल न छोड़ो,
कल का पता क्या हो जाए।
वदले मे राज्य के वनवास हो गया,
रघुवर समझने ना पाए ॥
औरों का फिर क्या सवाल है,
रखते कल पर जो धर्म विचार है .

३७ | विश्व मैत्री दिवस

तर्ज . तेरे द्वार खड़ा भगवान..

तू जो चाहे निर्वाण, क्षमा करले रे सज्जन!
तू करले अमृत पान कि तेरा हो जाये कल्याण...

चौरासी मे भटकत-भटकत मानव-भव में आये।
ऐसा सुन्दर अवसर भोले, बार-बार नही पाये रे २
तू कर इसका सम्मान कि तुझको मिल जाये भगवान..

सब धर्मों का मूल क्षमा है आगम मे फरमाया।
गज सुकुमाल मुनि ने पल मे, केवलज्ञान को पाया रे २
शत्रु भी माना मित्र महान् कि हो गये जैन धर्म की शान...

महावीर ने सगम सुर पर करुणा रस बरसाया।
चण्डकोशिक से नागराज को, देख महान् बनाया रे २
तू उनका भक्त सुजान, कि गाले विश्व मैत्री का गान...

भूप उदायन युद्ध जीतकर, चण्डप्रद्योतन लाये।
क्षमा किया फिर राज्य दिया है, बन्धन मुक्त बनाये रे २
तू कर शत्रु से प्यार, यही है वीरों का शृंगार .

भाई-भाई मे घर समाज में, प्रेम की गगा बहाले।
विपय कषाय का कल्मप धोकर, अन्तर ताप बुझाले रे २
धरा हो जाये स्वर्ग समान, अपने आप को ले पहचान .

'जीओ और जीने दो' प्यारा सब को मन्त्र सिखादो।
महावीर के चरण कमल में सादर शीश झुकादो रे २
तू क्षमा हृदय मे धार, कि 'चन्दा' हो जाये भव-पार...

संवत्सरी आया पर्व महान्

तर्ज : देख तेरे संसार की हालत...

धन्य-धन्य है दिवस आज का, सुनो सभी इन्सान।
सवत्सरी आया पर्व महान्
राग-द्वेप को त्याग के सारे, गावो प्रभु के गान।
सवत्सरी आया पर्व महान्

गुरु चरणो मे सारे आके, विनय से अपना शीश झुकाके।
रगड़े झगड़े सभी मिटाके, अपने दिल को साफ वनाके॥
प्राणि-मात्र से मिलकर सारे, मागो क्षमा का दान.

यही पर्व उद्धार करेगा, नव जीवन सचार करेगा।
जो जन इसको पार करेगा, उसके सब सन्ताप हरेगा॥
इसी पर्व से मिलेगा तुझ को, मुक्ति का वरदान

भेदभाव को दूर निवारो, जागो वीरो उठो विचारो।
जीती वाजी व्यर्थ न हारो, मिलकर आज प्रतिज्ञा धारो॥
जैन धर्म का तन-मन-धन से, करेंगे हम उत्थान.

पाचो के सब वन्धन तोड़ो, मोह और ममता को छोडो।
विषयो से मन अपना मोड़ो, सच्चा प्रभु से नाता जोडो॥
'चन्द्रभूषण' जिओ जीने दो, यही वीर फरमान...



३९ | मुझे त्याग कराना रे

तर्ज : ओ नाग कहीं जा बसियो रे...

गुरुदेव भूल मत जाना रे, मुझे त्याग कराना रे...

अमृतमय यह वाणी सुनकर, अद्भुत आनन्द पाया।
त्यागमय जीवन जीवन है, यह नर को समझाया॥
नर पशुओ मे अन्तर माना रे...

गुजाफल की दाल न खाऊँ, आक दूध नही पीऊँ।
विष तुम्बे का शाग न चक्खु, फल किंपाक न छीऊँ॥
मोती मोगर नही खाऊँ रे...

कभी अकेला वन मे जाकर, सीह से नही लडूंगा।
स्वर्ण थाल मे रखकर स्वामी, भोजन नही करूंगा॥
सागर पर घर ना बंधाऊँ रे.

नही सवारी करूँ नाग की, नही पकडूगा छाया।
त्याग करा दो मुझ को गुरुवर, यह मैंने छिटकाया॥
कारण आगार रखाना रे...

क्रोध न छोडा मान न छोडा, लोभ छोड़ा नही माया।
'अशोक मुनि' कहे इन त्यागो से, क्या सुधरेगी काया॥
तुम जीवन शुद्ध बनाना रे...



तर्ज · तेरी प्यारी-प्यारी सूरत .

तेरी प्यारी-प्यारी सूरत यह, एक दिन मिट्टी मे मिले, याद रख तू ।
तेरी काया-माया सारी यह, एक दिन अगनी मे जले, याद रख तू....

जो भी यहाँ पर आता है, आखिर इक दिन जाता है ।
राजा रानी सेठ सेठानी, कोई न रहने पाता है ॥
इन फूलो को मुरझाना है, जो आज चमन मे खिले, याद...

जिनके लिए पाप कमाता है, कोई न साथ निभाता है ।
जीव अकेला ही आता है, और अकेला ही जाता है ॥
इस जग की सराए-फानी मे, पगले ! तू क्यो मचले, याद.

जो ज्ञान जोत जगाता है, वो जीवन मे मुसकाता है ।
डूबती नैया भवसागर से अपनी वो पार लगाता है ॥
वो ही जीवन का राही जो अपनी मजिल पे चले, याद...



४१ | उसे इन्सान कहते है :

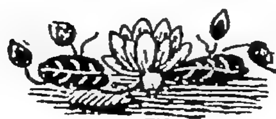
तर्ज बहारो फूल बरसाओ . . .

किसी के काम जो आए, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाए, उसे इन्सान कहते हैं ।।
कभी धनवान, है कितना, कभी इन्सान निर्धन है,
कभी सुख है, कभी दु.ख है, इसी का नाम जीवन है,
जो मुश्किल मे न घवराये, उसे...

यह दुनिया एक उलझन है, कही धोका कही ठोकर,
कोई हस-हंस के जीता है, कोई जीता है रो-रोकर,
जो गिर कर सभल जाए, उसे...

अगर गलती रुलाती है, तो यह राह भी दिखाती है,
वशर गलती का पुतला है, यह अक्सर हो ही जाती है,
जो गलती करके पछताए, उसे ..

अकेले ही जो खा-खाकर, सदा गुजरान करते हैं,
यो भरने को तो दुनिया मे, पशु भी पेट भरते हैं,
'पथिक' जो बांट कर खाए, उसे ..



तर्ज : इक परदेशी मेरा .

जैसा तू करेगा वैसा फल पाएगा।
आक-वीज बोके आम कैसे खाएगा...

मक्खन खातिर नीर बिलोता,
नही मिलने से आखिर रोता।
दूध बिना मक्खन हाथ कैसे आएगा.

पत्थर की नौका पर चढ़कर,
तरना चाहता तू भव-सागर।
भोले कही बीच मे ही डूब जाएगा..

मिट्टी का तू दीपक लेकर,
कर सकता है उजियाला वाहर।
ज्ञान बिना दिल को कैसे जगमगाएगा. .

नही अनल से मधुवन खिलता,
नहीं यथेच्छित फल भी मिलता।
पानी सीचे विना कैसे वन विकसाएगा

नैतिकता को नही अपनाता,
'मुनि कन्हैया' फिर भी सुख चाहता।
मूल विना फूल फल कैसे आएगा. .



४३ | कब आओगे राम ?

तर्ज : बार-बार तोहे क्या...

वार-वार मैं ढूढू वन में, कव आओगे राम।
तेरे दरश विन आये न मुझको आराम . . .

घड़ी-घड़ी में साफ करूँ, घर आँगणियाँ।
आज मेरे घर आये, राम वन पावणियाँ॥
दासी की कुटिया मे आकर नाथ करो विश्राम .

अच्छे - अच्छे वेर लाई मैं तौड़ - तौड के।
खट्टे - मीठे चखकर देखे, फौड़ - फौड़ के॥
वाट देखती तेरी रघुवर, आज हुई हैरान . . .

धन्य-मार्ग-भक्ति का देखो, पहुँचे वहाँ रघुनाथ।
चरणो मे गिर पडी भीलनी, जोड़े दोनो हाथ॥
वड़े प्रेम से खा रहे है, अवध-पति श्रीराम . . .

भक्ति मे है शक्ति निराली, भूले मत नादान।
छोड़ जगत के झूठे झगड़े, भजले रे भगवान॥
ऐसी भक्ति करले वन्दे, होय जगत मे नाम . . .



तर्ज . ज्योति से ज्योति जगाते चलो

आतम की ज्योति जगाते चलो,
ज्ञान का स्रोत बहाते चलो।
सद्‌गुरु दयालु जगाते तुम्हें,
मोह की निंदिया भगाते चलो . . .

काल अनन्ता सोते ही बीता, अब तो आँख उघारो।
कर्म लुटेरे पड़े हैं पीछे, टुक तो होश सभालो॥
ज्ञान सुधन को बचाते चलो . . .

कठिन-कठिन कर नर भव पाया, इसको सफल बनाओ।
अवसर ये तो मिला है सुनहरी मतना व्यर्थ गवाओ॥
भक्ति मे मन को लगाते चलो .

सत्य अहिंसा का कर पालन शान्ति सुधा बरसाओ।
राग-द्वेप को दूर हटाकर, तृष्णा वेग घटाओ॥
विषयो से चित्त हटाते चलो .

लाख चौरासी काहे भटकते, अपना वतन भुलाया।
नाम अरे शिवराम धराकर, शिव पद को नही पाया॥
आप मे आप रमाते चलो . .

०—☆—०

४५ | विश्व-विद्यालय

तर्ज : अफसाना लिख रही हूं ..

यह विश्व है विद्यालय, तुम छात्र वन जाओ।
जड शिक्षकों से सीख लो, कुछ योग्य वन जाओ .

उदयास्त-ज्यो सुख-दु:ख मे सम-रूप ही रह कर।
पाखण्ड - तम - सहारकारी 'सूर्य' वन जाओ. .

दीनो को दीजे सान्त्वना, नित दान-जल वरसा।
नि:स्वार्थ जग - जीवन - प्रदाता "मेघ" वन जाओ ..

दीखें जहाँ सज्जन वही चरणो मे गिर जाना।
मधु गध - गुण - लोभी हठीले 'भृंग' वन जाओ.

निष्पक्ष निर्णय कीजिये सच-झूठ का हरदम।
जल-दुग्ध मे से दुग्ध - ग्राही 'हस' वन जाओ .

निज शत्रुओ पर भी सदा उपकार ही करना।
पत्थर के वदले मे फल-प्रद 'वृक्ष' वन जाओ .

कॉलेज तो केवल "अमर" वी ए. वनाता है।
लेकिन यहाँ से शीघ्र ही 'नररत्न' वन जाओ



तर्ज : एक प्यार का नगमा है .

एक बात कहूँ पगले, यहाँ सब कुछ फानी है।
जिन्दगी और कुछ भी नही, चार दिन की कहानी है

राजा हो या रानी हो, चाहे कोई भी ज्ञानी हो।
अनपढ़ हो या पण्डित भी, चाहे कोई ध्यानी हो॥
जायेगे सभी एक दिन, यहाँ आनी जानी है

कोडी ना सग जाए, सब यहाँ पे रह जाए।
जीवन का मकसद तू, काहे ना समझ पाए॥
मतलब के सब साथी, ले धर्म निशानी है

खुद को नही जानेगा, अपनी ही तानेगा।
अवसर का मूल्य गाफिल, यदि ना पहचानेगा॥
बरसेगा 'कमल' फिर तो, आँखो से पानी है ..

४७ | सन्त जीवन की महिमा

तर्ज कभी सुख है कभी दुःख है .

जगत के तारने वाले जगत में सन्त-जन ही हैं।
उन्हें उपमा कहो क्या दे, अपन से वे अपन ही है..

सकल सुख-भोग तज करके, जगत-कल्याण को निकले।
मनोहर महल जिनके फिर भयंकर शून्य वन ही है..

अटल सयम - सुमेरू के शिखर पर सन्त बैठे हैं।
जिधर देखो उधर उनके अमन के गुल चमन ही हैं...

सुधा की शोध मे दुनिया वनी फिरती है क्यो पागल।
सुधा तो सन्त लोगो के सदा मंगल वचन ही है...

कुल्हाडी से कोई काटे, कोई आ फूल बरसाये।
खुशी से दे दुआ यकसा, अजब सारे चलन ही हैं...

स्वय पर वज्र भी टूटे तो हँसते ही रहेगे हाँ।
दुखी को देख रो उठते, दया के तो सदन ही हैं..

हृदय की हूक से हरदम हजारो बार वन्दन हो।
'अमर' अमरत्व-दाता सत के पावन चरन ही है...



तर्ज   नील गगन पर उड़ते बादल .

झूम-झूम कर मेरे मनवा गा गा गा,
सन्तो के सुदर्शन कर के भव-सागर तरजा ।
भक्ति-भाव का थाल सजा कर ला ला ला,
जीवन अपना शुद्ध वना के अविचल सुख तू पा .

घूम-घूम कर गाँव नगर से आये गुरुवर ज्ञानी,
पुण्योदय से सुनने मिलेगी हम को अमृत वाणी ।
वाणी सुनके दिव्य वनेगा जीवन भी अपना,
राग-द्वेष को छोड के मनवा सरल स्वच्छ वनजा

अति आनन्द से मस्त वनी है मानव-मन की डाली,
इस उपवन को सलिल सीचने आगए हैं माली ।
सत्य वना है आज हमारा चिर सचित सपना,
ज्ञान नीर ले आर्द्र वनायें जीवन हम अपना

भले पधारो सुख से बिराजो उज्ज्वल ज्ञान सुनाओ,
ज्ञान प्रदीप जला के गुरुवर हमको धन्य वनाओ ।
गुरु गुण गा के धन्य वन जाओ मेरी रसना,
सत प्रेम की 'ज्योति' से सार्थक जीवन कर अपना ..



५१ | मंगलकारी महावीर

तर्ज - ॐ जय जगदीश...

ॐ जय महावीर प्रभो ! स्वामी जय महावीर प्रभो ।
जग-नायक सुखदायक, अति गम्भीर प्रभो ! ॐ जय...

कुण्डलपुर मे जन्मे त्रिशला के जाये, स्वामी त्रिशला...
पिता सिद्धार्थ राजा, सुर नर हर्षाये, ॐ जय...

दीनानाथ दयानिधि है मगलकारी, स्वामी है मंगल .
जगहित सयम धारा, प्रभु पर-उपकारी, ॐ जय. .

पापाचार मिटाया, सत्पथ दिखलाया, स्वामी सत्पथ...
दया धर्म का झण्डा, जग मे लहराया ॐ जय

अर्जुनमाली, गौतम, श्री चन्दनबाला, स्वामी श्री चन्दनबाला
पार जगत से बेडा, इनका कर डाला, ॐ जय...

पावन नाम तुम्हारा, जग तारणहारा, स्वामी जगतारण.
निशदिन जो नर ध्यावे, कष्ट मिटे सारा, ॐ जय...

करुणासागर ! तेरी महिमा है न्यारी, स्वामी महिमा है...
'ज्ञान मुनि' गुण गावे, चरणन वलिहारी, ॐ जय..

●

जग की भूल-भुलैया में | ५२

तर्ज . तेरी प्यारी-प्यारी सूरत को...

इस जग की भूल-भुलैया मे, कैसा उलझा इनसान, वना अनजान।
अपनी मजिल का पता नही, खुद की भी नही पहचान, वना अनजान।

जहर हलाहल खाता है, फिर भी जीना चाहता है।
अमृत पीने आया था, पर अव उसको ठुकराता है ॥
अकल का ठेकेदार वना, देखो किना नादान.

अज्ञान अँधेरा छाया है, अपना भी होश भुलाया है।
झूठ का जाल विछाकर उसमे, औरो को भी फँसाया है ॥
पत्थर की शिला पर वैठा है, तरने का लिये अरमान. .

चाँद पे नजर लगाई है, कैसा यह सौदाई है।
इस दुनिया को समझना, इस ख्याल की दुनिया वसाई है ॥
धरती पर चलना सीखा ना, आकाश मे भरे उडान..

एटम वम दिखलाता है, शाति का राग सुनाता है।
जाना था पूरव को और पश्चिम को वढता जाता है ॥
वारूद के ढेर पे वैठा है, शान्ति की सुनाए तान..

झूठी शान दिखाता है, अभिमान मे अकडा जाता है।
खुद तो आग मे जलता ही है, औरो को भी जलाता है ॥
सूरत से है इन्सान मगर, सीरत से है शैतान

—कवि श्री सुरेश मुनिजी महाराज

४६ | मेरे गुरुदेव आये है

तर्ज बहारों फूल बरसाओ...

वहारों फूल वर्षाओ, मेरे गुरुदेव आये हैं।
खुशी के गीत सव गाओ, मेरे गुरुदेव आये हैं...

दया की दृष्टि से मेरा, सभी यह पाप धुल जाये।
अगर आशीष दे दे तो, मेरा सौभाग्य खुल जाये॥
सरल वन कर शरण आओ, मेरे गुरुदेव आये हैं..

नही है पाप जीवन मे, मनोहर रूप है जिनका।
अभय देते हैं सव जग को, अभय सम रूप है इनका॥
अभय वरदान सव पाओ, मेरे गुरुदेव आये है...

अहिंसा के नियम सारे, सदा सुख से निभाते हैं।
सभी सुख से व सयम से, जीओ शिक्षा सुनाते हैं॥
सुने वे धन्य हो जाये, मेरे गुरुदेव आये हैं..

मेरा मन मोर नचदा है, दया गुरुदेव की पाके।
'सुमेरू' धन्य हो जाये, चरण रज शीश पै लाके॥
सभी श्रद्धा से झुक जाओ, मेरे गुरुदेव आये है..

卐卐卐卐卐

श्री गणेश गुरु गुणगान | ५०

तर्ज : रेशमी सलवार...

जैन जगत के ताज, गुरुवर प्यारे हैं।
मुनि गणेश गुरुराज, दिव्य सितारे हैं...

चौदह वर्ष की वय मे सयम के पथ पर आये।
गुरुवर पुष्कर के प्यारे, सुयोग्य शिष्य कहलाये ॥
सुयश विस्तारे है.

वाणी मे अमृत झरता, मुख पूर्णचन्द्र चमकता।
कलियुग मे एक नजारा, है ब्रह्म का तेज छलकता ॥
सत्य व्रत धारे है. .

साहित्य-साधना करते, नित भरते ज्ञान खजाना।
प्रवक्ता लेखक भारी, और नूतन शब्द सजाना।
कवि निराले हैं

नित घूम-घूम भारत मे, जिनवाणी आप सुनाते।
ससार-सिन्धु तिरने का, ये पावन पथ वताते ॥
कई जन तारे हैं .

नित भक्ति-भाव से इनको, सव करते हैं हम वन्दन।
"मुनि जिनेन्द्र" सहारा लेकर, काटेगे भव के बधन ॥
भव्य सहारे हैं .



५३ | दिल की तमन्ना धरी रही

तर्ज . कव्वाली ..

आशाओ का हुआ खातमा, दिल की तमन्ना धरी रही ।
वस परदेशी हुए रवन्ना, प्यारी काया पडी रही ..
करना-करना है रे मूरख, हरदम कूक लगाता तू ।
मरना-मरना लब्ज जुवा पर, जरा कभी नही लाता तू ॥
आखिर सब है मरने वाले, झण्डी न किसी की गड़ी रही...
एक पण्डित जी पत्री लेकर, गणित हिसाव लगाते थे ।
समय काल तेजी मन्दी का, होनहार वतलाते थे ॥
आया काल चले पण्डित जी, पत्री कर मे धरी रही...
एक वकील ओफिस मे वैठा, सोच रहा था अपने दिल ।
फला दफा पर वहस करूँगा, पोइट मेरा है वडा प्रवल ॥
इधर कटा वारण्ट मौत का, कल की पेशी पड़ी रही.
एक सेठ जी वैठे दुकान पर, हिसाव-किताव वे लगा रहे ।
इतना लेना, इतना देना, वडे गौर से जोड़ रहे ॥
काल वलि की लगी चोट तब, कलम कान मे टरी रही ..
करन इलाज इक रोगी का, डाक्टर जी तैयार हुए ।
विविध दवा औजार साथ ले, मोटरकार सवार हुए ॥
उल्टी मोटर मर गये डाक्टर, दवा वॉक्स मे धरी रही....
मिट्टी गून्दी, मिट्टी रौंदी, सुन्दर वर्तन बना रहा ।
इस कुम्हार की अजव हालत है, मिट्टी से धन कमा रहा ॥
अन्त चली एक फूटी हडिया, नई मटकिया धरी रही...

इक गम की कहानी | ५४

तर्ज . इक प्यार का नगमा है...

इक दर्द का नगमा है, अश्कों की रवानी है।
जिन्दगी और कुछ भी नही, इक गम की कहानी है ।।
एक दर्द का नगमा है

सच पूछो तो दुनिया मे, बस रोना ही रोना है।
जीवन जिसे कहते हैं, काटो का विछौना है ॥
आहे, शिकवे, आंसू, ये गम की निशानी है..

इस गम के दरिया का, नही कोई किनारा है।
दु.ख-दर्द की घडियो मे, ना कोई सहारा है ॥
अपनी शूली अपने कन्धो पे उठानी है

गम मे मुसकाना है, क्या आँसू वहाना है?
जीवन का मतलब तो, मन को समझाना है ॥
जो मन को समझा ले, वही सच्चा ज्ञानी है



५५ | सुख-दुख की कहानी

तर्ज . इक प्यार का नगमा है....

कभी खुशियो का मेला है, कभी आँखो में पानी है।
जिन्दगी और कुछ भी नही, सुख-दु:ख की कहानी है॥
कभी खुशियो का मेला है ..

इक पल का हसना है, इक पल का रोना है।
इस हंसने-रोने मे, क्या जीवन खोना है?
हंसने और रोने की यह रीत पुरानी है—
जिन्दगी और कुछ भी नही ..

यह सुख भी अपना है, यह दु ख भी अपना है।
अपनी ही किस्मत का, यह सारा सपना है॥
सपने के नजारे भी, ये सारे ही फानी है—
जिन्दगी और कुछ भी नही...

दु ख को अगर आना है, आकर चले जाना है।
सुख का यह बादल भी, छा कर ढल जाना है॥
धूप-छाँव की यह दुनिया, बस आनी-जानी है—
जिन्दगी और कुछ भी नही.



५६ | निंदिया में घड़ियाँ

तर्ज : इन्हीं लोगो ने ले लीना दुपट्टा मेरा .

निंदिया मे घडिया, निंदिया मे घड़ियां,
निंदिया मे घडियाँ नही खोना, जीवन है थोडा ..

निंदिया मे सोए वो लका के राजा २।
हमको तो ऽऽऽ हमको तो वैसा नही होना—जीवन है थोड़ा .

निंदिया से जागे अयोध्या के राजा २।
हमको तो ऽऽऽ हमको तो राम जी है होना—जीवन है थोडा ..

निंदिया से जागे कुण्डलपुर के राजा २।
हमको तो ऽऽऽ हमको तो महावीर होना—जीवन है थोडा...

उज्ज्वल वनाना है जीवन हमारा २।
प्रभु 'प्रीति' मे मन को भीगोना—जीवन है थोड़ा ..

